●वर्ष : 16 ●अंक : 244 ●मूल्य : 02 रूपया मात्र पृष्ठ : 08 RNI No. DELHIN/2008/23928

दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित

शुक्रवार 27 दिसम्बर 2024

Mfg & mkt by.. ANGEN PHARMACEUTICALS (OPC) PRIVATE LIMITED

Distributorship ke liye contact Karen .
(9315755133 / ya email Karen)
angenpharmaceuticals@gmail.com

समाचार

2026 की शुरूआत तक गहरे समुद्र में मानव भेजनी की तैयारी, जितेंद्र सिंह ने दी जानकारी

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत सरकार अपने महत्वाकांक्षी 'डीप सी मिशन' के तहत एक इंसान को गहरे समुद्र में भेजने की तैयारी कर रही है। इस मिशन के 2026 की शुरूआत में होने वाले देश के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन के अनुरूप होने की उम्मीद है। भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (आईएनसीओआईएस) में 2004 के हिंद महासागर सुनामी की 20वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, सिंह ने वैज्ञानिक अन्वेषण में देश की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अपने स्वतंत्रता दिवस के संबोधन के दौरान 'डीप सी मिशन' के पहले उल्लेख को भी याद किया, जिसमें समुद्री अनुसंधान और नवाचार में भारत की स्थिति को मजबूत करने में इसके महत्व को रेखांकित किया गया था। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि मानव अंतरिक्ष मिशन, जिसे शुरू में 2025 के लिए निर्धारित किया गया था। 2026 की शुरूआत में गहरे समुद्र मिशन के साथ मेल खाने के लिए पुनर्निर्धारित किया गया है। इस संरेखण में एक भारतीय वहां और एक भारतीय गहरे समुद्र में दिखाई देगा। सिंह ने कहा कि यह देश की वैज्ञानिक यात्रा में उल्लेखनीय मील का पत्थर है। भारत की 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा और इसके प्रचुर समुद्री संसाधनों की सतत खोज और संरक्षण की वकालत करते हुए कहा कि मंत्री ने कहा कि सरकार इन प्रयासों का समर्थन करने के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए काम कर रही है। मीडिया से बात करते हुए, सिंह ने कहा कि INCOIS द्वारा प्रदान की गई सेवाएँ और जानकारी न केवल भारत के तटीय समुदायों के लिए बल्कि दुनिया भर के लोगों के लिए भी प्रासंगिक हैं। अत्याधुनिक सुविधा की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ऐसी सेवाएं प्रदान कर रहा है जो न केवल 'विकसित भारत' के विकास में योगदान देती हैं बल्कि दुनिया में भारत के महत्वपूर्ण योगदान में भी योगदान देती हैं। 2004 की सुनामी से हुई तबाही को याद करते हुए, सिंह ने सीखे गए महत्वपूर्ण सबक और उसके बाद परिवर्तनकारी नीतियों के बारे में बात की। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इस त्रासदी ने INCOIS जैसे संस्थानों की स्थापना को प्रेरित किया, जो अब जीवन और आजीविका की सुरक्षा के लिए भारत की प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में खड़ा है।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का निधन

कांग्रेस ने कर्नाटक में रद्द की रैली

>> कांग्रेस ने रैली रद्द की, राहुल-खरगे दिल्ली लौट रहे

इससे पहले, पूर्व प्रधानमंत्री की तबीयत बिगड़ने की जानकारी सामने आने पर कांग्रेस ने कर्नाटक में होने वाली अपनी रैली को रद्द कर दिया। राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे भी कर्नाटक से दिल्ली के लिए रवाना हो गए। प्रियंका गांधी भी एम्स पहुंच गईं। प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा ने ट्वीट किया, " प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी के निधन के बारे में जानकर मुझे गहरा दुख हुआ। उनके परिवार और प्रियजनों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। हमारे राष्ट्र के प्रति आपकी सेवा के लिए धन्यवाद। देश में आपके द्वारा लाई गई आर्थिक क्रांति और प्रगतिशील बदलावों के लिए आपको हमेशा याद किया जाएगा।

नूना न्यूज एजेंसी।

दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह नहीं रहे। गुरुवार रात दिल्ली के एम्स में उनका निधन हो गया। वे 92 वर्ष के थे। गुरुवार रात अचानक उनकी तबीयत बिगड़ी। उन्हें रात 8:06 बजे एम्स के आपातकालीन विभाग में भर्ती कराया गया। हालांकि, डॉक्टरों के अथक प्रयासों के बाद भी उन्हें नहीं बचाया जा सका। रात 9:51 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। कांग्रेस समेत अन्य दिग्गज नेताओं का एम्स में पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया है। मनमोहन सिंह देश के ऐसे प्रधानमंत्री रहे, जो सबसे ज्यादा शिक्षित थे। प्रखर अर्थशास्त्री थे और प्रधानमंत्री के पद तक पहुंचने वाले पहले अल्पसंख्यक भी थे। जब 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव के नेतृत्व में देश में उदारीकरण का दौर शुरू हुआ, तब वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ही थे। इसके बाद उन्होंने 2004 से 2014 तक केंद्र में यूपीए की सरकार का नेतृत्व किया। वे 10 साल प्रधानमंत्री रहे। बराक ओबामा जैसे तत्कालीन विश्व नेता आर्थिक मामलों पर मनमोहन सिंह की समझ के कायल रहे।

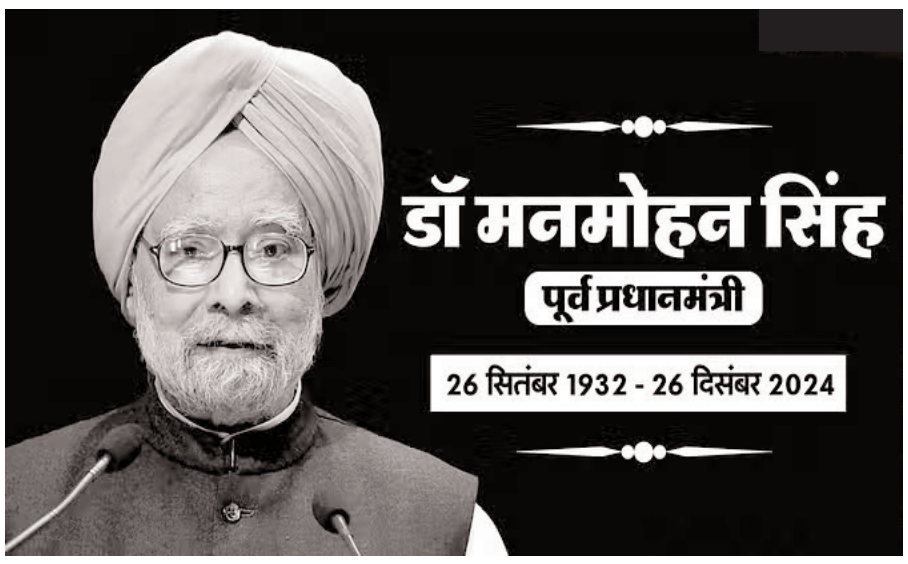

>> पीएम नरेंद्र मोदी ने जताया शोक

पीएम नरेंद्र मोदी ने मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए एक्स पर लिखा, 'भारत अपने सबसे प्रतिष्ठित नेताओं में से एक डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर शोक मना रहा है। साधारण पृष्ठभूमि से उठकर वे एक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री बने। उन्होंने वित्त मंत्री सहित विभिन्न सरकारी पदों पर कार्य किया। वर्षों तक हमारी आर्थिक नीति पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। संसद में उनके हस्तक्षेप भी बहुत ही व्यावहारिक थे। हमारे प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए व्यापक प्रयास किए'।

>> दिल्ली एम्स ने बयान में कही ये बात

एम्स के मीडिया सेल की प्रभारी व प्रोफेसर डॉ. रीमा दादा ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की 92 वर्ष की आयु में निधन हुआ। उम्र से संबंधित चिकित्सा स्थितियों के लिए उनका इलाज चल रहा था। 26 दिसंबर को घर पर अचानक बेहोश हो गए। घर पर तुरंत पुनर्जीवन देने के लिए उपाय शुरू किए गए। रात करीब 8:06 बजे उन्हें एम्स के मेडिकल इमरजेंसी में लाया गया। यहां तमाम कोशिशों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। रात 9:51 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

>> पूर्व पीएम मनमोहन सिंह की शिक्षा

उन्होंने 1948 में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की शिक्षा पूरी की। उसके बाद उन्होंने अपनी आगे की शिक्षा ब्रिटेन के कैंब्रिज विश्वविद्यालय से प्राप्त की। 1957 में उन्होंने अर्थशास्त्र में प्रथम श्रेणी से ऑनर्स की डिग्री हासिल की। इसके बाद 1962 में उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के नूफिल्ड कॉलेज से अर्थशास्त्र में डी. फिल किया। उन्होंने अपनी पुस्तक 'भारत में निर्यात और आत्मनिर्भरता और विकास की संभावनाएं' में भारत में निर्यात आधारित व्यापार नीति की आलोचना की थी।

दक्षिण आयोग के महासचिव भी थे मनमोहन सिंह

इसके बाद उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में शिक्षक के रूप में कार्य किया जो उनकी अकादमिक श्रेष्ठता दिखाता है। इसी बीच में कुछ वर्षों के लिए उन्होंने यूएनसीटीएडी सचिवालय के लिए भी काम किया। इसी के आधार पर उन्हें 1987 और 1990 में जिनेवा में दक्षिण आयोग के महासचिव के रूप में नियुक्ति किया गया।

ज्वलंत मुद्दा

सम्पादकीय

मुफ्त की चुनावी घोषणाओं बिगाड़ रहीं हैं आर्थिक सेहत

दिल्ली चुनाव को अभी एक महीने से ज्यादा का समय बाकी है। उससे पहले दिल्ली की आम आदमी पार्टी ने महिला सम्मान योजना को मंजूरी दे दी। इस योजना के तहत महिलाओं के खाते में हर महीने 1000 रुपये आएंगे। आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि चुनाव के बाद इसको बदलकर 2100 रुपए करेंगे। चुनाव जीतने के लिए मुफ्त की रेवड़ी बांटने वाली आप अकेली पार्टी नहीं हैं। जब भी चुनाव नजदीक आते हैं, राजनीतिक दलों में खैरात बांटने की होड़ लग जाती है। इसका एकमात्र मकसद चुनाव जीतना है। इसके नुकसान-फायदों की राजनीतिक दलों का परवाह नहीं हैं। यह अलग बात है कि चाकू खरबूजे पर गिरे या खरबूजा चाकू पर, कटना तो खरबूजे को ही है। मसलन फ्री का माल लेने वाले को भी आखिरकार इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। किसी न किसी रूप में टैक्स का बोझ उन पर भी पड़ता है। फ्री की योजनाओं का फायदा उठाने वाले भी इससे बढ? वाली महंगाई की मार से बच नहीं सकते। इससे पहले राजस्थान में विधानसभा चुनाव के दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने वोटरों को फ्री में स्मार्टफोन और तीन साल के लिए फ्री इंटरनेट का वायदा किया था। गहलोत ने राज्य के हर परिवार को हर महीने 100 यूनिट तक फ्री बिजली फ्री देने का ऐलान किया था। मध्य प्रदेश में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कांग्रेस की सरकार बनने पर हर परिवार को 100 यूनिट तक फ्री बिजली देने का वादा किया। तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लाडली बहना योजना के तहत सवा करोड़ गरीब महिलाओं के खाते में एक हजार रुपये जमा कराए। कांग्रेस ने वादा किया था कि उसकी सरकार आई तो हजार नहीं बल्कि 1,500 रुपये दिए जाएंगे। शिवराज ने युवाओं को लुभाने के लिए 12वीं कक्षा के कुल 9000 टॉपर्स को एक-एक स्कूटी देने का भी ऐलान किया था। चुनावी रेवड़ी बांटना का कल्चर शुरू से ही विवादों से घिरा रहा है। सुप्रीम कोर्ट, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, आर्थिक विशेषज्ञ, चुनाव आयोग और मौजूदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक इस पर चिंता जता चुके हैं। कोई भी राजनीतिक दल व्यापक देशहित से जुड़े ऐसे मुद्दों का समाधान तलाशना तो दूर बल्कि चर्चा तक करना नहीं चाहता।

SYED ZAKI HAIDER

(EDITOR / PUBLISHER CUM MANAGING DIRECTOR OF NAI UMMEED NEWS AGENCY
MOBILE NO. 9911371802
EMAIL SYEDZAKIHAIDER786@GMAIL.COM

खतरे में है महात्मा गांधी की विरासत

कांग्रेस की बैठक में बोलीं सोनिया गांधी, बीजेपी पर निशाना साधा

नूना न्यूज एजेंसी।

कांग्रेस संसदीय दल (सीपीपी) प्रमुख सोनिया गांधी ने गुरुवार को नई दिल्ली में सत्ता में बैठे लोगों पर महात्मा गांधी की विरासत को कमजोर करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि उनकी विरासत को दिल्ली में सत्ता में बैठे लोगों और उन्हें पोषित करने वाली विचारधाराओं और संस्थानों से खतरा है। कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक में पढ़े गए अपने संदेश में, सोनिया गांधी ने भाजपा और आरएसएस पर जमकर हमला बोला और उन ताकतों से लड़ने का आह्वान किया, जिनके बारे में उन्होंने दावा किया कि उन्होंने जहरीला माहौल बनाया, जिसके कारण महात्मा गांधी की हत्या हुई। सोनिया गांधी ने कहा कि यह हमारे देश के इतिहास में एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर था। आज, हम महात्मा गांधी की विरासत को संरक्षित, संरक्षित और बढ़ावा देने के लिए खुद को फिर से समर्पित करते हैं। वह हमारी प्रेरणा के मूल स्रोत रहे हैं और रहेंगे। उन्होंने कहा कि यह वह ही थे जिन्होंने उस पीढ़ी के हमारे सभी उल्लेखनीय नेताओं को तैयार किया और उनका मार्गदर्शन किया। उनकी विरासत को नई दिल्ली में सत्ता में बैठे लोगों और उन्हें पोषित करने वाली विचारधाराओं और संस्थानों से खतरा है। गांधी ने कहा कि इन संगठनों ने कभी भी हमारी आजादी के लिए लड़ाई नहीं लड़ी। उन्होंने महात्मा गांधी का कटु विरोध किया। उन्होंने एक विषाक्त वातावरण बनाया जिसके कारण उनकी हत्या हुई। वे उसके हत्यारों का महिमामंडन करते हैं। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि देश भर में विभिन्न स्थानों पर गांधीवादी संस्थानों पर हमले हो रहे हैं और कहा कि यह उचित है कि इस बैठक को 'नव सत्याग्रह बैठक' कहा जाए। उन्होंने कहा कि अब यह हमारा पवित्र कर्तव्य है कि हम इन ताकतों का पूरी ताकत से और अडिग दृढ़ संकल्प के साथ मुकाबला करने के अपने संकल्प को नवीनीकृत करें।

अहमदाबाद में जयपुर जैसा हादसा!

दुर्घटना के बाद सीएनजी ट्रक समेत कई वाहनों में लगी आग, 2 लोगों की मौत

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। रात के सन्नाटे के बीच आग की लपटें...धू-धू कर जलते वाहन...और मौत का मंजर...ये तस्वीरें जिसने भी देखीं सहम गया. कुछ दिन पहले जयपुर में ऐसी घटना देखने को मिली थी. इस घटना ने सबको हैरान कर दिया था. ठीक इसी तरह का मामला अहमदाबाद में भी देखने को मिला है. बताया जा रहा है कि अहमदाबाद-राजकोट हाईवे पर भामासरा गांव के पास ये हादसा तब हुआ जब कपड़ों से लदा एक ट्रक राजकोट से अहमदाबाद जा रहा था. भामासरा गांव के पास अचानक ट्रक का टायर फटा...और चालक अपना नियंत्रण खो बैठा...इसके बाद ट्रक डिवाइडर पार करके दूसरे वाहनों से टकरा गया। सीएनजी ट्रक होने की वजह से उसमें तुरंत आग लग गई, जो देखते ही देखते तीन अन्य वाहनों तक भी फैल गई. इसके बाद बेकाबू ट्रक की वजह से चार वाहन आपस में टकरा गए. टक्कर इतनी जोरदार थी कि एक भयानक विस्फोट हुआ और वाहन धू धू कर जलने लगे. इस हादसे के बाद मौके पर चीख पुकार मच गई...वहीं तेज धमाके की आवाज सुनकर स्थानीय लोग घटनास्थल पर पहुंचे. जिन्होंने तुरंत पुलिस प्रशासन को इस हादसे की सूचना दी। जानकारी मिल रही है कि इस हादसे में ट्रक चालक कमलभाई और एक अन्य शख्स ने मौके पर ही दम तोड़ दिया. जबकि तीन लोग घायल हैं जिन्हें इलाज के लिए सोला सिविल अस्पताल में भर्ती करवाया गया है. घटना की जानकारी मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम भी मौके पर पहुंची लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. वाहन जलकर खाक हो चुके थे। ट्रक के बारे में जानकारी मिली है कि ये ट्रक चोटिला में रणछोड़भाई रबारी की कंपनी का था. ये हादसा देर रात हुआ, इसके बाद हाइवे पर घंटों तक ट्रैफिक जाम रहा. जिसने भी ये खबर सुनी या फिर इस हादसे की तस्वीरें देखी उसके नजरों के आगे जयपुर टैंकर ब्लास्ट का खौफनाक मंजर दौड़ गया. जिसमें अब तक 18 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 15 लोग अब भी अस्पताल में मौत से जिंदगी की जंग लड़ रहे हैं।

बता दें कि शुक्रवार यानी 20 दिसंबर की सुबह 5 और 6 के बीच जयपुर-अजमेर नेशनल हाइवे पर भांकरोटा के पास एलपीजी टैंकर में ब्लास्ट के बाद गैस चारों तरफ फैल गई थी. देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया था और वहां से गुजर रही बसें, ट्रक और कारें आग की चपेट में आ गईं थीं। शुरूआती जानकारी में कम से कम 35 वाहनों के जलने की खबर मिली, जिनमें 29 ट्रक और दो बसें और बाकी गाड़ियां शामिल थीं।

महाकुंभ की सुरक्षा में संगम के भीतर मौजूद रहेगा अंडर वॉटर ड्रोन

नूना न्यूज एजेंसी।

लखनऊ। महाकुंभ का आगज होने में अब कुछ दिनों का समय बचा है। योगी सरकार श्रद्धालुओं को हर तरह की सुविधा देने के लिये तो वचनबद्ध नजर आ ही रहा है, इसके अलावा उसके सामाने आगंतुकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की भी बड़ी चुनौती है। इसके लिये चप्पे-चप्पे पर सुरक्षा के अचूक इंतजाम किये गये हैं नभ और थल के बाद अब जल के भीतर से भी कुंभ स्थल पर अशांति फैलाने की कोशिश करने वालों की निगाहबानी की जायेगी। सनातन धर्म का सबसे बड़ा आयोजन बनाने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार हर आपात स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार बताई जा रही है। दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम में हर परिस्थिति में 45 करोड़ लोगों के संगम स्नान का पूरा सुरक्षित प्लान तैयार करने के तहत महाकुंभ में पहली बार श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए अंडर वॉटर ड्रोन तैनात किया जा रहा है। जो 24 घंटे पानी के भीतर प्रत्येक गतिविधियों की निगरानी करने में सक्षम होगा। सबसे खास बात यह है कि यह अंडर वॉटर ड्रोन अंधेरे में भी लक्ष्य पर सटीक नजर रखने में कारगर हथियार साबित होगा। यह पानी के नीचे 100 मीटर गहराई तक टोह लेने में सक्षम है और किसी भी परिस्थितियों में सटीक जानकारी उपलब्ध कराने की खूबियों से लैस है।

डीएमके को सत्ता से हटाने के लिए अन्नामलाई की भीष्म प्रतिज्ञा

पैरों में चप्पल या जूते नहीं पहनेंगे

नूना न्यूज एजेंसी।

तमिलनाडु। अपने गृहनगर कोयंबटूर में मीडिया को संबोधित करते हुए, भाजपा के तमिलनाडु प्रदेश अध्यक्ष के अन्नामलाई ने अपना आपा खो दिया और डीएमके सरकार की आलोचना की। राज्य में बिगड़ती कानून-व्यवस्था के लिए द्रमुक सरकार पर आरोप लगाते हुए गुस्से में दिख रहे अन्नामलाई ने अपने जूते उतार दिए और कहा कि जब तक राज्य में द्रमुक सरकार को उखाड़ नहीं फेंका जाता, वह जूते नहीं पहनेंगे। जब तक द्रमुक सरकार को उखाड़ नहीं फेंका जाता, मैं नंगे पैर चलूंगा। मैं लोगों से अनुरोध कर रहा हूं, कृपया इस सब पर गौर करें। उन्होंने कहा कि हमेशा की तरह, हम चुनाव जीतने के लिए पैसा नहीं देने जा रहे हैं। हम बिना पैसे बांटे चुनाव लड़ेंगे. जब तक डीएमके सरकार नहीं चली जाती, मैं चप्पल नहीं पहनूंगा। उन्होंने सभी बुराइयों को खत्म करने के लिए कल कोयंबटूर में अपने आवास के बाहर खुद को छह कोड़े मारने का भी वादा किया। उन्होंने यह भी कहा कि वह राज्य में भगवान मुरुगन के सभी छह पवित्र निवासों पर जाने के लिए 48 दिनों तक उपवास करेंगे। यह घटना अन्ना विश्वविद्यालय में 19 वर्षीय छात्रा के यौन उत्पीड़न के संबंध में राज्य भाजपा द्वारा बुलाए गए मीडिया संबोधन के दौरान सामने आई। प्रेस वार्ता में उन्होंने मामले में एफआईआर को "लीक" करने के लिए राज्य पुलिस पर भी हमला बोला, जिसमें 19 वर्षीय इंजीनियरिंग छात्र की पहचान उजागर हुई थी। उन्होंने पीड़िता को शर्मिंदा करने वाले तरीके से एफआईआर लिखने के लिए पुलिस की भी निंदा की। अन्नामलाई ने यह भी आरोप लगाया कि अन्ना विश्वविद्यालय यौन उत्पीड़न मामले में आरोपी ज्ञानशेखरन जैसा बार-बार अपराधी डीएमके नेताओं के साथ संबंध के कारण पुलिस की उपद्रवी सूची में नहीं था। प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने अपना रुख भी दोहराया कि मामले में आरोपी डीएमके का एक पदाधिकारी था और उन्होंने इसका सबूत भी दिया। उन्होंने 37 वर्षीय ज्ञानशेखरन को डीएमके नेताओं से जोड़ते हुए और भी तस्वीरें और पर्चे पेश किए।

गोवा में कलंगुट समुद्र तट के पास अरब सागर में पलटी नाव

1 की मौत और 20 घायल

नूना न्यूज एजेंसी।

गोवा। पुलिस ने कहा कि बुधवार को उत्तरी गोवा के कैलंगुट समुद्र तट के पास अरब सागर में एक पर्यटक नाव के पलट जाने से एक व्यक्ति की मौत हो गई और लगभग 20 अन्य को बचा लिया गया। पुलिस के मुताबिक घटना दोपहर करीब 1.30 बजे की है। गोवा एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, विशेष रूप से क्रिसमस और नए साल के जश्न के दौरान, यह अपने जीवंत उत्सव, सुंदर समुद्र तटों और

जीवंत वातावरण के साथ आगंतुकों को आकर्षित करता है। हादसे में मरने वाला शख्स 54 साल का शख्स था. पुलिस ने बताया कि बचाए गए सभी लोगों को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि जिस नाव से वे यात्रा कर रहे थे, उसके पलट जाने से 54 वर्षीय एक व्यक्ति की मौत हो गई और 20 अन्य को बचाया गया और इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने आगे कहा कि दो को छोड़कर सभी यात्रियों, जिनमें छह साल के बच्चे और महिलाएं भी शामिल थीं, ने लाइफ जैकेट पहन रखी थी। सरकार द्वारा नियुक्त जीवनरक्षक एजेंसी दृष्टि मरीन के एक प्रवक्ता ने कहा कि नाव समुद्र तट से लगभग 60 मीटर की दूरी पर पलट गई, जिससे सभी यात्री समुद्र में गिर गए। उन्होंने बताया कि विमान में सवार यात्रियों में महाराष्ट्र के खेड़ का एक परिवार भी शामिल था, जिसमें 13 सदस्य थे। प्रवक्ता ने कहा कि घायल यात्रियों को प्राथमिक उपचार दिया गया, जबकि जो लोग गंभीर पाए गए उन्हें एम्बुलेंस में चिकित्सा सुविधा में ले जाया गया। उन्होंने कहा कि '20 यात्रियों में से छह और सात साल के दो बच्चे और 25 और 55 साल की दो महिलाएं ठीक हो गईं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। यह उल्लेख करना उचित है कि यह घटना उस समय घटी जब एक सप्ताह पहले ही नौसेना का एक जहाज, जो इंजन परीक्षण से गुजर रहा था, नियंत्रण खो बैठा और मुंबई तट के पास यात्री नौका 'नील कमल' से टकरा गया। दुर्घटना में 15 लोगों की मौत हो गई। 100 से अधिक यात्रियों को लेकर नौका गेटवे ऑफ इंडिया से एलिफेंटा द्वीप के रास्ते में थी, जो अपने गुफा मंदिरों के लिए प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है।

खरगे बोले- 2025 कांग्रेस के संगठन के सशक्तिकरण का वर्ष होगा

हर कांग्रेसी को गांधी जी की विरासत पर गर्व है

नई दिल्ली। 26 दिसंबर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि 2025 कांग्रेस के संगठन के सशक्तिकरण का वर्ष होगा। कांग्रेस संगठन में सभी रिक्त पदों को भरेगी। उदयपुर की घोषणाओं को पूरी तरह से लागू किया जाएगा। कांग्रेस अपने संगठन को राष्ट्रीय स्तर से लेकर मंडल और बूथ तक चुनाव जीतने के लिए आवश्यक कौशल से सुसज्जित करेगी। उन्होंने कहा, संविधान की रक्षा के लिए लड़ने को तैयार रहने वाले और कांग्रेस की विचारधारा में विश्वास रखने वालों को पार्टी से जोड़ना होगा और उन्हें मुख्यधारा में लाना होगा। महात्मा गांधी के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बनने के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में कर्नाटक के बेलगावी में कांग्रेस कार्यसमिति की विस्तारित 'नव सत्याग्रह' बैठक में अपने प्रारंभिक अध्यक्षीय भाषण में खरगे ने कहा कि आज कांग्रेस के इतिहास में बहुत सुनहरा दिन है। 100 वर्ष पहले बेलगावी में ही 26 दिसंबर 1924 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाली थी। हर कांग्रेसी को महात्मा गांधी की विरासत पर गर्व है। खरगे ने कहा कि उन दिनों कोहाट और गुलबर्गा जैसे शहरों में हो रहे सांप्रदायिक दंगों से आहत होकर महात्मा गांधी ने चिंता व्यक्त की थी। लेकिन अफसोस की बात है कि 100 वर्ष बाद भी आज सत्ताधारी दल के नेता खुलेआम भड़काऊ नारे लगा रहे हैं और समुदायों के बीच नफरत फैला रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के बारे में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अपमानजनक टिप्पणी का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इस टिप्पणी के विरोध में कांग्रेस ने आपत्ति जताई, प्रदर्शन किए। लेकिन अमित शाह से माफी मंगवाना और इस्तीफा लेना तो दूर, प्रधानमंत्री ने बयान जारी कर गृह मंत्री का बचाव किया। राहुल गांधी पर झूठा केस दर्ज कर दिया गया। उन्होंने कहा कि संविधान की शपथ खाने वाले ही झूठ फैला रहे हैं। सत्ताधारी नेता असत्य का सहारा लेकर कांग्रेस पर आरोप लगा रहे हैं। सत्ताधारी दल के लोग संविधान की प्रस्तावना का अपमान करते हैं।कांग्रेस को ऐसे लोगों को बेनकाब और परास्त करना है। कांग्रेस नेहरू-गांधी की विचारधारा और बाबा साहब के सम्मान के लिए आखिरी दम तक लड़ेगी।

मुरूगन ने निमार्णाधीन रेलवे टनल कार्य का किया निरीक्षण

नई दिल्ली दिसम्बर : केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण (राज्य) मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री, भारत सरकार डॉ एल. मुरुगन ने अपने तीन दिवसीय झारखंड यात्रा के आखिरी दिन 25 दिसंबर को जिले में स्थित मोहम्मदगंज में नवनिर्मित रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया और यात्री सुविधाओं की जानकारी ली। उनसे मिलने बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भी अपनी समस्याएं लेकर पहुंचे थे, जिनको उन्होंने सुना और आवश्यक कार्रवाई करने के लिए वहाँ मौजूद अधिकारी गण को निर्देशित किया। पास ही में स्थित भीम चूल्हा पर्यटन स्थल के पास बन रहे रेलवे टनल का भी मंत्री महोदय ने दौरा किया और बारीकी से निरीक्षण किया और मौजूद रेल अधिकारियों से प्रोजैक्ट के पूरा होने की समय सीमा और अन्य पहलुओं की जानकारी ली। मंत्री ने पलामू में उनसे मिलने आए गणमान्य नागरिकों, समाजसेवी जनों से भी मुलाकात किया और उनकी समस्याएं सुनी। तदोपरांत उन्होंने अपने दौरे के आखिरी दिन जिले के आकाशवाणी और दूरदर्शन केंद्र का दौरा किया और मौजूद अधिकारियों और कर्मियों से भी मिले। मंत्री महोदय के कर कमलों से दूरदर्शन परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम भी संपन्न हुआ, साथ ही उन्होंने डाल्टनगंज आकाशवाणी स्टेशन का दौरा किया और मौजूद संसाधनों और हो रही दिक्कतों का जायजा लिया।

एआईसीसी कोषाध्यक्ष अजय माकन, सांसद, एआईसीसी दिल्ली प्रभारी काजी मोहम्मद निजामुद्दीन, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव, सह-प्रभारी दानिश अबरार और सुखविंदर सिंह डैनी ने आप के काले कारनामों पर एक श्वेत पत्र जारी किया। (सईद अहमद)

ओला इलैक्ट्रिक ने पूरे देश में 4 हजार स्टोर्स तक का रिकॉर्ड बनाया, छोटे कस्बों और तहसीलों तक पहुंच बनाई

नई दिल्ली दिसम्बर : ओला इलैक्ट्रिक, भारत की अग्रणी ईवी कंपनी ने अपने नैटवर्क को 4 हजार स्टोर्स तक विस्तारित करने की घोषणा की है। यह विस्तार मौजूदा नेटवर्क से चार गुना अधिक है, जिससे देश में ईवी तक पहुंच आसान होगी और ईवी के क्षेत्र में बड़ा विकास संभव होगा। कंपनी ने 32 सौ से अधिक नए स्टोर्स लॉन्च किए हैं, जो सर्विस सुविधाओं के साथ जुड़े हैं। टियर-1 और टियर-2 शहरों के साथ छोटे कस्बों और तहसीलों तक इस विस्तार ने ओला इलैक्ट्रिक की पहुंच को गहराई से बढ़ाया है। ओला इलैक्ट्रिक के चेयरमैन भविष अग्रवाल ने कहा, हमने हर शहर और कस्बे तक ईवी पहुंचाने का वादा पूरा किया है। यह नेटवर्क विस्तार ईवी अपनाने के अनुभव को पूरी तरह बदल देगा। कंपनी ने एस 1 पोर्टफोलियो पर 25 हजार तक के फायदे और एस 1 एक्स मॉडल पर 7 हजार तक की छूट की घोषणा की है। इसके अलावा, लिमिटेड-एडिशन ओला एस 1 प्रो सोना, 24 कैरेट गोल्ड प्लेटेड एलिमेंट्स के साथ, खास आकर्षण बना हुआ है। ग्राहक ओला सोना कॉन्टेस्ट में भाग लेकर इसे जीतने का मौका भी पा सकते हैं। ओला इलैक्ट्रिक के इनोवेशन की अपार क्षमता को देखते हुए, ओला सोना ने लक्जरी और फंक्शनैलिटी का बेहतरीन संगम पेश किया है। इसमें सोना मूड नामक इमर्सिव फीचर दिया गया है, जो एक प्रीमियम राइडिंग अनुभव देता है।

आप की घडोली से निगम पार्षद प्रियंका गौतम अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा में हुईं शामिल

नई दिल्ली दिसम्बर : केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा की उपस्थिति में आज आम आदमी पार्टी की घडोली से निगम पार्षद एडवोकेट सु प्रियंका गौतम अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल हुई। इस मौके पर दिल्ली भाजपा में अन्य दलों से ज्वाइंग की कमेटी के संयोजक आशीष सूद, मुख्य प्रवक्ता अभय वर्मा आदि उपस्थित थे। आज दक्षिण दिल्ली से पूर्व पार्षद एवं गूजर समाज के नेता धर्मवीर सिंह भी भाजपा में शामिल हुए। आज भाजपा में शामिल होने वालों में आम आदमी पार्टी की कोंडली विधानसभा उपाध्यक्ष मती मालती गौतम , एससी एसटी प्रकोष्ठ के विधानसभा सचिव जुगल किशोर, एससी एसटी वैल्फेयर बोर्ड के पूर्व सदस्य सुनील परेला, अनूप शर्मा जसपाल, अंबेडकर भवन समिति के अध्यक्ष प्रभुदयाल एवं सचिव लोकेश, मनोज रतूड़ी, अब्बास अंसारी, यूनुस सैफी आदि प्रमुख थे। हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि दिल्ली में एक ऐसे मुख्यमंत्री है जिन्होंने राजनीति में ना आने की कसमें खाई थी और जब राजनीति में आ गए तो बंगला, सिक्योरिटी और गाड़ी ना लेने की कसमें खाई लेकिन आज उन्होंने अपने लियें शीशमहल बना लिया और दिल्लीवालों को ठगने के अलावा कुछ नहीं किया। उन्होंने कहा कि महिलाओं के साथ छलावा करने वाले केजरीवाल पहले मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने दिल्ली से पहले पंजाब में भी 1 हजार रुपया देने का वायदा किया लेकिन पंजाब में सरकार बने दो साल हो गए और आज तक उन्होंने एक रुपये पंजाब की बहनों को नही दिया।

क्लेफ्ट प्रभावित बच्चों के जीवन में बदलाव लाने की पहल, स्माइल ट्रेन ने बढ़ाई जागरूकता

नई दिल्ली दिसम्बर : दुनिया की अग्रणी क्लेफ्ट-केंद्रित संस्था स्माइल ट्रेन ने गुरुग्राम के डी.एम. ग्रुप के साथ चैरिटी पार्टनर के रूप में साझेदारी की और 22 दिसंबर को गुरुग्राम की पहली डी.एम. 10के चैलेंज रन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में करीब 2 हजार प्रतिभागियों ने भाग लिया, जो फिटनेस और परोपकार को जोड़कर क्लेफ्ट से प्रभावित बच्चों के जीवन में बदलाव लाने का उद्देश्य रखता था। इस आयोजन से प्राप्त पंजीकरण शुल्क का एक हिस्सा स्माइल ट्रेन के क्लेफ्ट सर्जरी कार्यक्रम में योगदान दिया गया। स्माइल ट्रेन इंडिया की गुडविल एंबेसडर और मिस यूनिवर्स इंडिया 2023, श्वेता शारदा, इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुई। उन्होंने 10 किलोमीटर और 3 किलोमीटर की दौड़ में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों की प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए कहा, स्माइल ट्रेन का समर्थन करना, जो बच्चों को मुस्कान का तोहफा देने के लिए काम करती है, मेरे लिए सम्मान की बात है। हर धावक की भागीदारी यह दिखाती है कि छोटी-छोटी कोशिशें बड़े बदलाव ला सकती हैं। स्माइल ट्रेन की सीनियर वाइस प्रेसिडेंट ममता कैरोल ने डी.एम. 10के चैलेंज रन को सामूहिक समर्थन और आशा का उत्सव बताते हुए डी.एम. ग्रुप को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। इस साझेदारी ने क्लेफ्ट प्रभावित बच्चों के जीवन को संवारने की दिशा में एक सकारात्मक कदम बढ़ाया।

छुट्टियों के मौसम में कलैक्शन ने जीता फैशनप्रेमियों का दिल

नई दिल्ली दिसम्बर : यू.एस. पोलो एसोसिएशन इंडिया ने अपने बहुप्रतीक्षित ऑटम विंटर 24 कलैक्शन का अनावरण किया, जिसमें प्रसिद्ध अभिनेता सुनील शैट्टी को मुख्य भूमिका में पेश किया गया है। यह कलेक्शन आधुनिकता और क्लासिक स्टाइल का अद्भुत संगम है। सुनील शैट्टी ने इस अभियान में शीतकालीन फैशन को नई परिभाषा देते हुए ब्रांड के साथ अपने जुड़ाव को साझा किया। उन्होंने दर्शकों से कलैक्शन को देखने का आग्रह करते हुए कहा, यू.एस. पोलो एसोसिएशन मेरी पहली पसंद है, और इस छुट्टी के मौसम में मैं इसे आपके साथ साझा करना चाहता हूं। इस कलैक्शन की खासियतें जैसे फॉक्स सूडे जैकेट, हाई-नेक स्वेटर्स, और स्टाइलिश ट्राउजर्स, स्टाइल और व्यावहारिकता का अद्वितीय मेल प्रस्तुत करती हैं।

अदालत ने मानहानि की शिकायत पर आप नेता सौरभ भारद्वाज को नोटिस जारी किया

दिल्ली। की एक अदालत ने आम आदमी पार्टी (आप) के नेता सौरभ भारद्वाज को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक कार्यकर्ता द्वारा दायर आपराधिक मानहानि के मामले में नोटिस जारी किया है। अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नेहा मित्तल ने 23 दिसंबर को पारित आदेश में भारद्वाज को नोटिस जारी किया, जिसमें उन्हें सूरजभान चौहान द्वारा दायर शिकायत के आधार पर नौ जनवरी, 2025 तक जवाब देने का निर्देश दिया गया है। अपनी शिकायत में चौहान ने आरोप लगाया कि भारद्वाज ने 2018 में प्रेस वार्ता में झूठा दावा करके उन्हें बदनाम किया था कि उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। न्यायाधीश ने शिकायतकर्ता को उसी मुद्दे पर पहले की शिकायत की प्रतिलिपि दाखिल करने का अंतिम अवसर भी दिया, जिसे एक अन्य अदालत ने खारिज कर दिया था।

कुछ ऐतिहासिक तथ्य, कुछ भ्रान्तियों का निराकरण

-- डॉ.जया शुकला

इतिहास का स्थान किसी भी समाज में बहुत अहम है। पूरी पीढ़ियों के संस्कार अपने इतिहास की जानकारियों का असर पड़ने से बनते हैं, और उस समाज का भविष्य भी उसी पर निर्धारित होता है। हमारे भारतीय समाज का वास्तविक चरित्र तो बहुत ही उदात्त और जाज्वल्यमान रहा है। पर दुर्भाग्य से कुछ स्वार्थी तत्व लम्बे समयसे, और योजनाबद्ध तरीके से, निहित स्वार्थों के चलते, पूरी शक्ति लगाकर इसको बदलना चाहते रहे हैं। देश का प्रचार तंत्र भी अब कई कारणोंवश इन्ही तत्वोंके अंकुश तले है। फलतः नई पीढ़ी उसी बदले हुए इतिहास को अपना मानती है, और उन्हीं संस्कारों को ग्रहण करती है। इसके दुष्प्रभाव देश में बढ़ती नफरत, हिंसा, और संस्कारहीनता में दीख भी रहे हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि प्रचारित गलत जानकारियों की सत्यता सामने लाई जाए और वास्तविक तथ्य बताए जाएँ। संसद के इस शीतकालीन सत्र में जद्दोजहद के बाद संविधान पर परिचर्चा तो हुई। संविधान समिति, जिसने संविधान बनाया था, उसके अध्यक्ष आदरणीय श्री भीमराव अंबेडकर जी का नाम स्वाभाविक रूप से कई बार सांसदों के अभिभाषण में आया। आश्चर्यजनक रूप से इस बात पर स्वयं गृहमंत्री को ही कड़ी नाराजगी हो गई। किन्तु उसी परिचर्चा के दौरान सत्तापक्ष के एक ही शीर्ष नेता ने अपने अभिभाषण में श्यामाप्रसाद मुखर्जी का नाम कई बार लिया, जिनका कोई कारण या संबंध नहीं दीखता। किन्तु इसका एक प्रभाव यह होगा कि जो लोग सच्चा इतिहास नहीं जानते, उनके मन में कई भ्रान्तियाँ पैदा होंगी।

अतः आवश्यक हो जाता है कि इन श्यामाप्रसाद मुखर्जी की सच्चाई बताई जाये। उनके द्वारा कियेगए कुछ काम निम्नलिखित हैं, जो निश्चितरूप से देशहित के विपरीत हैं, और ऐसे व्यक्ति का महिमामंडन भी देशहित के घोर विपरीत है।

1) मार्च 1943 में सिंध संसद में हिन्दू महासभा-मुस्लिम लीग गठबंधन ने भारत विभाजन का पहला प्रस्ताव पास किया था। ये बात संघी राकेश सिन्हा मान चुका है। श्यामाप्रसाद की भी तो भागीदारी थी।

2) श्यामाप्रसाद शायद भारत का पहला दलबदलू था। पहले कांग्रेस, फिर निर्दल, कांग्रेस, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा और जनसंघ : ये था राजनैतिक सफर।

3) श्यामाप्रसाद के पिता भी ब्रिटिश के करीबी थे। श्यामाप्रसाद ने कोलकाता विश्वविद्यालय में यूनियन जैक को सलामी देने का आदेश पारित किया था। (हिस्ट्री औफ स्टूडेन्ट पौलिटिक्स इन इन्डिया : श्री गौतम चट्टोपाध्याय)।

4) श्यामाप्रसाद को नेताजी ने कोलकाता के रास्तो पर पीटा था..(जनसंघी बलराज मधोक की किताब डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी, पौर्ट्रेट ऑफ ए मार्टेयर, 1953)।

5) श्यामाप्रसाद ने नेताजी के भाई शरत बोस को मारने की घोषणा की थी। नेताजी उस वक्त भारत के बाहर जा चुके थे वरना ठोक डालते।

6) श्यामाप्रसाद ने कभी भी किसी आजादी के आंदोलन में हिस्सा नही लिया, एक दिन के लिए भी जेल नही गया।

7) श्यामाप्रसाद ने बंगाल विभाजन की सौगंध खाई थी..(2 मई 1947 को माउंटबैटन को लिखा गुप्त पत्र)।

8) श्यामाप्रसाद ने मुसलमानो के खिलाफ गृहयुद्ध की घोषणा की। बंगाल को बरबाद कर दिया और 1951 में माफी मांगी।

9) 1943 में बंगाल के

दुर्भिक्ष के समय 50 लाख बंगाली भूख से मर गए थे। श्यामाप्रसाद जिन्ना के साथ मंत्री था। पर मदद करने के बजाय श्यामाप्रसाद इस वक्त ब्रिटिश के साथ था। चावल कालाबाजारी और लाखों रुपयों के चंदे के घोटाले का आरोप लगा। सह सब तत्कालीन रिकौर्डों में है।

10) श्यामाप्रसाद ने भारत छोड़ो के वक्त खुल कर ब्रिटिश का समर्थन किया और कांग्रेस को खत्म करने की बात की (26 जुलाई 1942, ब्रिटिश गवर्नर जनरल जॉन हर्बट को लिखा पत्र)।

11) श्यामाप्रसाद गोडसे के लिए चन्दा उगाह रहा था। सरदार पटेल ने रंगे हाथों पकड़ा था (16 जून, 9 सितंबर 1948 को लिखे श्यामाप्रसाद के सरदार पटेल को लिखा पत्र)।

12) श्यामाप्रसाद को सरदार पटेल ने सबूत के साथ बताया था कि हिन्दू महासभा सरदार पटेल और नेहरुजी की हत्या करना चाहती है (8 फरवरी 1948 को सरदार पटेल का लिखा श्यामाप्रसाद को पत्र)।

13) श्यामाप्रसाद धारा 370 का सबसे बड़ा समर्थक था। 17/02/1953 को श्यामाप्रसाद ने नेहरुजी और शेख अब्दुल्लाह को चिट्ठी लिखकर 370 का समर्थन किया था (चिट्ठी की कॉपी रिकौर्डों में है)।

14) श्यामाप्रसाद ने काश्मीर को UNO में ले जाने के लिए नेहरुजी को सलाह दी थी (7 अगस्त 1952 को श्यामाप्रसाद का लोकसभा में भाषण)।

15) श्यामाप्रसाद ने काश्मीर के वीसा के नाम पर झूठ बोला था। वो वीसा नही "इनर लाइन परमिट" था, कुछ समय पूर्व तक काश्मीर व आजभी उत्तरपूर्व में इनर लाइन परमिट लागू है।

16) श्यामाप्रसाद को नेहरुजी से दिक्कत होती तो नेहरुजी की कैबिनेट में क्यो शामिल हुआ? सावरकर के भड़काने से मन्त्रिसभा छोड़ी। श्यामाप्रसाद पर असंख्य पोस्टें हैं, निचोड़ एक ही है : भारत विभाजन का दागी अपराधी, जिन्ना का परममित्र, ब्रिटिश भक्त, आजादी विरोधी, कभी भी भारत माता की संतान नही।

दिल्ली सरकार के विभाग ने 2100 रुपए वाली मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजना पर केजरीवाल की साजिश का पर्दाफाश किया

केजरीवाल की फर्जी योजनाओं को एक और झटका : देवेन्द्र यादव

नई दिल्ली, दिसम्बर : दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के कहा कि आम आदमी पार्टी की अरविन्द केजरीवाल द्वारा मुख्यमंत्री आतिशी की उपस्थिति में दिल्ली की महिलाओं को 2100 देने की घोषणा की पोल खुल चुकी है। अरविन्द केजरीवाल ने दिल्ली की गरीब बस्तियों जिस तरह से भ्रमित करके फार्म भरवाए गए कि उन्हें 2100 रुपए मासिक दिए जाएंगे, दिल्ली सरकार के बाल विकास विभाग द्वारा जारी नोटिस के बाद चुनावों में वोट की राजनीति करके धोखा देने की साजिश दिल्ली की जनता के सामने आ चुकी है। नोटिस में स्पष्ट किया गया है कि मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजना सरकारी योजना नही है। यादव ने कहा कि दिल्ली की जनता समझ चुकी है कि केजरीवाल सिर्फ वादा करते है उसे पूरा कभी नही करते। सिर्फ भ्रष्टाचार और अपने स्वार्थ हित की राजनीति करते है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि जनता के बीच जाकर नकली अधिकारी बनाकर 2100 रुपए देने के लिए भोली भाली महिलाओं के फार्म भरवाकर आम आदमी पार्टी सिर्फ उनकी जानकारी प्राप्त कर रही है और इनके वालियंटर 2100 रुपए देने के नाम पर जो पैसा महिलाओं के खाते में है उसे भी खाली कर रहे है। जैसा कि दिल्ली सरकार द्वारा जारी नोटिस में साफ कहा गया है कि अपनी जानकारी सार्वजनिक करने पर अपराध, साइबर अपराध सहित बैंकिंग धोखाधड़ी का शिकार हो सकते है, और केजरीवाल के लोग यह कर भी रहे है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि 2022 में पंजाब में और मार्च 2024 में दिल्ली में महिलाओं को 1000 रुपए देने का वादा किया था परंतु आज तक गरीब महिलाओं के लिए किया गया वादा पूरा नही हुआ। उन्होंने कहा कि दिल्ली सहित पंजाब की जनता भी केजरीवाल के झूठे वादों का शिकार हुई है, जिन्हें अपना मत देने के बाद सिर्फ धोखा ही मिला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी मांग करती है कि फार्म भराने के नाम पर जालसाजी और धोखाधड़ी करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही हो।

दिल्ली के जैतपुर इलाके में निजी बस में आग लगी, कोई हताहत नहीं

दक्षिण-पूर्वी। दिल्ली के जैतपुर इलाके में एक शादी समारोह के लिए किराए पर ली गई एक निजी बस में आग लग गई। अधिकारियों के अनुसार, घटना के समय बस में कोई नहीं था और इंजन से धुआं निकलते देख चालक तुरंत वाहन से बाहर निकल गया। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। दिल्ली अग्निशमन सेवा के एक अधिकारी ने कहा, आज सुबह आठ बजकर 10 मिनट पर स्कूल चौक से बस में आग लगने की सूचना मिली और दमकल की दो गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। अधिकारी ने बताया कि एक घंटे के भीतर आग बुझा दी गई। पुलिस ने शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगने का संदेह जताया है।

युवाओं पर लाठीचार्ज क्रूरता की पराकाष्ठा, भाजपा को सिर्फ अपनी कुर्सी बचाना है : प्रियंका गांधी

दिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) के अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज को लेकर बृहस्पतिवार को राज्य सरकार और भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा तथा आरोप लगाया कि भाजपा को सिर्फ अपनी कुर्सी बचाना है। बीपीएससी की ओर से 13 दिसंबर को आयोजित संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा (पीएससी) के प्रश्नपत्र लीक होने का दावा करने वाले अभ्यर्थियों ने परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर बुधवार को पटना में विरोध-प्रदर्शन किया, जिस दौरान पुलिस ने लाठीचार्ज किया। पटना के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राजीव मिश्रा ने पीटीआई-भाषा को बताया था कि पुलिसकर्मियों को प्रदर्शनकारियों पर उस समय लाठीचार्ज करना पड़ा, जब उनमें से कुछ बैरिकेड तोड़कर बीपीएससी कार्यालय तक पहुंच गए और यातायात बाधित किया। प्रियंका गांधी ने अपने व्हाट्सएप चैनल पर पोस्ट किया, हाथ जोड़ रहे युवाओं पर इस तरह लाठी चलाना क्रूरता की पराकाष्ठा है। भाजपा राज में रोजगार मांगने वाले युवाओं को लाठियों से पीटा जाता है। उत्तर प्रदेश हो, बिहार हो या मध्य प्रदेश, युवा अगर अपनी आवाज उठाते हैं तो उन्हें बर्बरता से पीटा जाता है। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे युवा देश के नौजवानों का भविष्य क्या होगा, यह सोचना और उनके लिए नीतियां बनाना सरकारों का काम है। प्रियंका गांधी ने आरोप लगाया, भाजपा के पास सिर्फ कुर्सी बचाने का दृष्टिकोण है। जो मांगेगा रोजगार, उस पर होगा अत्याचार।

अंबाला म्यूजिकल क्लब ने रफी साहब को श्रद्धांजलि अर्पित की

न फनकार तुझसा तेरे बाद आया, मोहम्मद रफी तू बहुत याद आया

कार्यक्रम के दौरान मुख्यातिथि को सम्मानित करते क्लब के सदस्य तथा (दाएं) दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते मुख्यातिथि।

अम्बाला छावनी दिसंबर : अंबाला म्यूजिकल क्लब, अंबाला छावनी अपनी रूहानी आवाज से जमाने को अपना दीवाना बनाने वाले भारतीय संगीत जगत के अनुपम सितारे मोहम्मद रफी साहब के 100वें जन्मदिवस पर सुरमई शाम स्वर्णिम संगीत संध्या का सफल आयोजन किया गया। जहां एक तरफ इस कार्यक्रम में जाने माने समाजसेवी एवं बी जे पी के वरिष्ठ नेता कपिल विज ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत कर कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाया वहीं दूसरी तरफ राहुल आनंद शर्मा, सी ई ओ, अंबाला कैंट बोर्ड एवं संदीप कुमार घोसाल, फील्ड जनरल मैनेजर, इंडियन बैंक वशिष्ट अथिति के रूप में उपस्थित के रूप में उपस्थित रहे।

पार्थ गुप्ता, आईएएस, डिप्टी कमिश्नर अंबाला ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में क्लब चेयरमैन डॉ नवीन गुलाटी ने सफल मंच संचालन किया। कार्यक्रम का आरंभ सभी अतिथियों एवं संगीत प्रेमियों के स्वागत के साथ हुआ। मुख्यातिथि कपिल विज ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि अंबाला म्यूजिकल क्लब, अंबाला वासियों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। कपिल विज ने भारतीय संगीत, कला एवं संस्कृति को अंबाला वासियों के दिलों में जीवंत रखने जैसे महान काम के लिए अंबाला म्यूजिकल क्लब की जमकर तारीफ की और कहा कि अंबाला म्यूजिकल क्लब के सभी सदस्य इस अनूठी पहल के लिए बधाई के पात्र हैं। वशिष्ट अतिथियों ने भी कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देने वाले सभी गायकों की जमकर तारीफ की और कहा कि अंबाला म्यूजिकल क्लब न केवल अंबाला का बल्कि संपूर्ण उत्तर भारत का सर्वश्रेष्ठ म्यूजिकल क्लब है। कार्यक्रम के अंत में सभी गायकों को उनकी बेजोड़ गायकी के लिए सम्मानित किया गया। क्लब के सभी सदस्यों ने मुख्यातिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को स्मृतिचिह्न देकर कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में 500 से भी अधिक संगती प्रेमियों ने संगीत का लुफ्त उठाया और मोहम्मद रफी साहब को श्रद्धांजलि अर्पित कर याद किया।

समाचार

प्राक्कलन समिति की बैठक में विधायक महेंद्र सिंह खड़कबंशी हुए सम्मिलित

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

लखनऊ/ हसनपुर। विधानभवन के सभागार में उत्तर प्रदेश विधानसभा प्राक्कलन समिति (2024-25) के अंतर्गत आयोजित ग्राम्य विकास विभाग की बैठक में प्राक्कलनों से सम्बंधित प्रदेश भर के लंबित मामलों पर समिति के सभी सदस्यगणों एवं अधिकारियों के साथ चर्चा कर लंबित मामलों का जल्द से जल्द निस्तारण करने के लिए अधिकारियों को सभापति अमित अग्रवाल ने निर्देश दिए,इस अवसर पर बैठक में प्राक्कलन समिति के सदस्य विधायक महेंद्र सिंह खडगवंशी व प्राक्कलन समिति के अन्य सभी सदस्य गण उपस्थित रहे।

मानव कल्याण एवं विश्व शान्ति हेतु, श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन।

लोकतंत्र की शान
संवाददाता-मंजीत शर्मा पीलीभीत

पीलीभीत पूरनपुर। सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन पूरनपुर तहसील क्षेत्र के ग्राम सपहा में श्री मंडी नाथ बाबा स्थान पर सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन। हर साल की भांति इस वर्ष भी श्रीमद् भागवत कथा यज्ञ का आयोजन। पूरनपुर तहसील क्षेत्र के ग्राम सपहा में 20 दिसम्बर 2024 से सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया। सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा होने के बाद हवन पूजन के साथ कथा का समापन, 26 दिसंबर 2024 दिन बृहस्पतिवार को हवन पूजन होने के बाद कथा का समापन। मंदिर की कमेटी व सभी ग्रामवासियों के सहयोग से श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया। पंडित बृजेश कुमार मिश्रा (सरल जी महाराज) कथा व्यास जी वृंदावन से आएं। पंडित बृजेश कुमार मिश्रा (सरल जी महाराज) ने सात दिवस तक श्रीमद् भागवत कथा का अपने मुखारविंद से श्रवण कराया।

व्यापारी सुरक्षा फोरम संस्थान 74/22 की बैठक में राजीव अग्रवाल का आभार जताया

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। बुधवार को नगर के व्यापारी संगठन व्यापारी सुरक्षा फोरम संस्थान 74/22 की मासिक बैठक जिला सचेतक महेश प्रजापति के आवास पर आयोजित की गई जिसमें भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव अग्रवाल जी द्वारा हसनपुर क्षेत्र के विकास तथा नगर की जनता की सुविधा हेतु व्यापारी सुरक्षा फोरम संस्थान 74/22 के आग्रह पर क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्य को गति मिलने पर व्यापारी सुरक्षा फोरम संस्थान द्वारा उनका कोटि-कोटि आभार व्यक्त किया गया, इस मौके पर प्रदेश महासचिव मुकेश गुप्ता ने बोलते हुए कहा कि आज हसनपुर क्षेत्र के विकास में जो चार चांद लगे जा रहे हैं वह मुख्य चुनाव आयुक्त श्री राजीव अग्रवाल जी के प्रयासों द्वारा ही संभव हो पाए हैं, अतः श्री राजीव अग्रवाल जी बार-बार बधाई के पात्र हैं, वहीं बैठक में व्यापारियों के हित संबंधी कार्यों पर चर्चा की गई, इस मौके पर मुख्य रूप से प्रदेश महासचिव मुकेश गुप्ता, पंकज भटनागर, सचिन गुप्ता, रानू रस्तोगी, लोकेश अग्रवाल, तरुण अग्रवाल, प्रशांत शर्मा, अरुण त्यागी, मोहित सुशील अग्रवाल, राहुल गुप्ता, हुकुम सिंह, प्रखर अग्रवाल, विजय पारछा, प्रमोद अग्रवाल, बबलू पाल, सीमा यादव, अंशिका यादव, कुमकुम सक्सेना, विद्या देवी, पुष्पा रावत आदि सहित दर्जनों व्यापारी सुरक्षा फॉर्म संस्थान 74/ 22 के सदस्य एवं पदाधिकारी मौजूद रहे।

इनरव्हील क्लब हसनपुर ने छात्राओं को स्वेटर एवं कॉपी पेन का किया वितरण

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। गुरुवार को नगर के पुरूषौत्तम सरन राममूर्ति सरस्वती कन्या इंटर कॉलेज में इनरव्हील क्लब हसनपुर के द्वारा 25 छात्राओं को स्वेटर तथा 50 छात्राओं को कॉपी,पेन तथा छात्राओं को 300 सेनेटरी पेड तथा विद्यालय के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को एक कान की मशीन वितरित की, इस दौरान विद्यालय में बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस मौके पर क्लब की जिला अध्यक्षा विशाल प्रिया टंडन ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज के जमाने में लड़कियां किसी से भी कम नहीं है, तथा प्रदेश एवं केंद्र सरकार द्वारा लड़कियों, महिलाओं एवं बच्चियों की सुरक्षा के लिए विभिन्न हेल्पलाइन नंबर दिए गए हैं जिनका आवश्यकता पड़ने पर आवश्यक उपयोग करें, इस मौके पर क्लब की जिला अध्यक्षा विशाल प्रिया टंडन, पूनम गर्ग, आरती गुप्ता, संगीता अग्रवाल, सोनिया रस्तोगी,रेशु अग्रवाल, भावना गुप्ता, कविता अग्रवाल,प्रियांशी अग्रवाल, रितु गुप्ता,जया सिरोही, शालिनी अग्रवाल,आंचल अग्रवाल, शालिनी गुप्ता, प्रधानाचार्य अंकिता शर्मा,सुषमा रस्तोगी,नीतू,नेहा रस्तोगी, आंचल अल्बर्ट, मुक्ता, गरिमा,अंकित चौहान, अशोक, सुधांशु मौजूद रहें।

पुलिस विभाग की निर्माण परियोजनाओं की शासन स्तर से हो सीधी मॉनीटरिंग: मुख्यमंत्री

लखनऊ, 26 दिसंबर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गृह विभाग के अंतर्गत विभिन्न जिलों में निमार्णाधीन पुलिस लाइन, ट्रांजिट हॉस्टल अथवा प्रशिक्षण संस्थानों से जुड़े आवासीय/अनावासीय भवनों के निर्माण कार्यों की गुणवत्ता और समयबद्धता के लिए नियमित समीक्षा पर जोर दिया है। मुख्यमंत्री के निर्देश दिए हैं कि गृह विभाग में सचिव स्तर के अधिकारी द्वारा इन परियोजनाओं की साप्ताहिक और अपर मुख्य सचिव स्तर पर पाक्षिक समीक्षा की जाए। यही नहीं, कार्य की मॉनीटरिंग की जिम्मेदारी संबंधित जनपद/रेंज/जोन के पुलिस अधिकारियों की भी होगी। गुरुवार को एक महत्वपूर्ण बैठक में गृह विभाग के अंतर्गत निमार्णाधीन परियोजनाओं की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि 50 करोड़ से अधिक की सभी निर्माण परियोजनाओं का किसी टेक्निकल इंस्टिट्यूट द्वारा थर्ड पार्टी मासिक ऑडिट कराया जाए। संबंधित संस्था द्वारा मौके पर जाकर स्थलीय सत्यापन किया जाए और उसकी रिपोर्ट फोटोग्राफ के साथ जमा होनी चाहिए। परियोजनाओं की गुणवत्ता पर जोर देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माण से जुड़ी कार्यदायी संस्थाओं में विशेषज्ञ इंजीनियरों का अभाव है। उचित होगा कि सेवानिवृत्त अनुभवी अथवा प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों के दक्ष प्रोफेशनल की सेवाएं ली जाएं। मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिए कि कार्य प्रारंभ होने से पूर्व परियोजना की जो डिजाइन तय हुई है, उसमें किसी प्रकार का बदलाव कार्य प्रारंभ होने के बाद नहीं होना चाहिए। अपरिहार्य परिस्थितियों में शासन से अनुमोदन लिया जाना अनिवार्य हो। उन्होंने यह भी कहा कि बहुमंजिला इमारतों में लिफ्ट अनिवार्य रूप से लगाई जाए और उसके सुचारु संचालन के लिए कार्पस फंड बनाया जाए।

जिलाधिकारी ने हसनपुर तहसील रिकॉर्ड रूम का किया निरीक्षण

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। गुरुवार को जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स द्वारा हसनपुर की पुरानी तहसील स्थल का निरीक्षण किया, तथा तहसीलदार कार्यालय के रिकॉर्ड रूम का भी निरीक्षण किया, जिलाधिकारी ने अंश निर्धारण के प्रकरण, तालाबों का अतिक्रमण हटाने और आवंटन चारागाह की भूमि, आय, जाति, निवास प्रमाण पत्रों की निस्तारण और तहसील न्यायालयों में लंबित मुकदमों के निस्तारण की स्थिति की समीक्षा की, इस अवसर पर जिला अधिकारी ने उप जिलाधिकारी हसनपुर को निर्देश देते हुए कहा कि आय जाति निवास प्रमाण पत्रों का समय बद्ध निस्तारण हो कोई लंबित न रहे,तालाबों में जहां पर अतिक्रमण है उसको प्राथमिकता से टीम भेज कर अतिक्रमण हटाया जाए । पट्टे आवंटन का जो लक्ष्य है उसको पूर्ण किया जाए। कहा की जो तालाब कब्जा कर लिए गए हैं उनको चिन्हित कर कब्जा हटाया जाए और उनकी खुदाई कराया जाए, कहा की अंश निर्धारण के प्रकरणों पर प्राथमिकता से कार्य किया जाय इसमे किसी भी प्रकार की लापरवाही ना हो, तहसील न्यायालयों पर जो मुकदमे दर्ज हैं उनकी डेट फिक्स कर प्राथमिकता से निस्तारण कराया जाए,धारा 24, 67 व अन्य धाराओं में लंबित मुकदमों का प्राथमिकता से निस्तारण सुनिश्चित हो । जिलाधिकारी ने कहा कि राजस्व वसूली प्राथमिकता से हो इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न हो जितनी भी आरसी हैं उसके सापेक्ष अभियान चलाकर वसूली कराई जाए, इस अवसर पर जिलाधिकारी ने तहसील रिकॉर्ड रूम का भी निरीक्षण किया है और उप जिलाधिकारी हसनपुर से आवश्यक जानकारी प्राप्त की । तहसील निरीक्षण के पूर्व जिलाधिकारी ने गंगा एक्सप्रेसवे में चकअम्बिया पुर गुलाम के निकट ग्रामीणों द्वारा एक्स्प्रेसवे में अंडर पास की मांग किये जाने पर मौके पर पहुंच कर निरीक्षण किया और ग्रमीणो तथा गंगा एक्सप्रेसवे के अधिकारियों के साथ संयुक्त वार्ता कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये । इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी न्यायिक माया शंकर यादव, उप जिलाधिकारी हसनपुर श्रीमती सुनीता सिंह, तहसीलदार हसनपुर मूसाराम सिंह सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

इकोनॉमिक ग्रोथ के साथ नये रोजगार भी उपलब्ध कराएगा नये भारत का नया उत्तर प्रदेश: सीएम

लखनऊ, 26 दिसंबर: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को अपने सरकारी आवास पर रोजगार सृजन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक की। इस अवसर पर सीएम के समक्ष विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं संस्थान के प्रतिनिधियों ने रोजगार सृजन की संभावनाओं और योजनाओं का प्रस्तुतिकरण किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को अपने-अपने विभाग में ठोस कार्य योजना के अनुरुप रोजगार सृजन के निर्देश दिये। साथ वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनाने के कार्यों को और गति देने के लिए विषय विशेषज्ञों का सहयोग भी लिया जाए। इससे नये भारत का नया उत्तर प्रदेश इकोनॉमिक ग्रोथ के साथ नये रोजगार के अवसर उपब्लध कराने में अहम भूमिका निभाएगा।

सीएम द्वारा हर तीन माह में वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के कार्यो की जा रही समीक्षा

बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश के युवाओं को उनकी योग्यता और कौशल के अनुसार समयबद्ध तरीके से रोजगार उपलब्ध कराना प्रदेश सरकार की प्राथमिकता में शामिल है। ऐसे में स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर तैयार किये जाएं। उन्होंने अधिकारियों को युवाओं को उद्यमिता की ओर प्रेरित करने के लिए कौशल विकास के कार्यक्रमों को और प्रभावी बनाने के निर्देश दिये। प्रदेश सरकार उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनाने के लिए सेक्टरवाइज कार्य कर रही है। इसके लिए 10 सेक्टर में बांटकर कार्य किये जा रहे हैं। वहीं इन सेक्टर्स के साथ प्रदेश के सभी विभागों को इंटीग्रेट किया गया। इन कार्यों की समीक्षा हर तीन में मुख्यमंत्री जी द्वारा स्वयं की जाती है तथा हर माह संबंधित मंत्री द्वारा समीक्षा की जाती है। वहीं 15 दिन में विभाग के प्रशासनिक प्रमुख द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा की जाती है। सीएम ने कहा कि वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनाने के कार्यों की सीएम डैशबोर्ड द्वारा निगरानी की जा रही है। उन्होंने विभिन्न संस्थानाओं के प्रतिनिधियों को सीएम डैशबोर्ड का निरीक्षण का आग्रह किया ताकि उन्हे प्रदेश सरकार की कार्यशैली से अवगत कराया जा सके। सीएम ने वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के कार्यों और रोजगार सृजन की संभावनाओं को बढ़ाने की दिशा में विषय विशेषज्ञों का सहयोग भी लेने की आवश्यकता पर बल दिया।

पत्रकारों के लिए भी बने निर्वाचन क्षेत्र, शिक्षक एमएलसी की तरह हो चुनाव: अनुराग सारथी।

उत्तर प्रदेश में 5000 से अधिक पत्रकारों ने ऐप्जा की सदस्यता ली, संगठन का प्रभाव बढ़ा

लोकतंत्र की शान
संवाददाता-मंजीत शर्मा

लखनऊ। पत्रकारों के हक और अधिकारों के लिए संघर्षरत ऑल इंडियन प्रेस जर्नलिस्ट एसोसिएशन (ऐप्जा) के चीफ कोऑर्डिनेटर अनुराग सारथी ने पत्रकारों के लिए एक अलग निर्वाचन क्षेत्र की मांग उठाई है। उनका कहना है कि जैसे स्नातक और शिक्षक एमएलसी के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र होते हैं, वैसे ही पत्रकारों को भी अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार मिलना चाहिए। अनुराग सारथी, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन को दरकिनार कर पत्रकारों को संगठित करने का बीड़ा उठाया है, प्रदेशभर में लगातार सक्रिय हैं। अब तक उत्तर प्रदेश में 5000 से अधिक पत्रकार ऐप्जा की सदस्यता ले चुके हैं। शाहजहांपुर, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, हरदोई और सीतापुर जैसे जनपदों में करीब 2000 पत्रकार संगठन से जुड़े हैं। संगठन की बड़ी उपलब्धियां अनुराग सारथी ने बताया कि ऐप्जा पत्रकारों के हितों के लिए लगातार संघर्षरत है। लखीमपुर खीरी किसान आंदोलन के दौरान एक पत्रकार की मौत पर 50 लाख रुपये के मुआवजे का मामला इसका एक उदाहरण है। सारथी के कड़े संघर्ष के कारण ही यह मुआवजा दिलवाया जा सका। इसके अलावा, उन्होंने कई मामलों में सड़क पर उतरकर धरना प्रदर्शन और भूख हड़ताल जैसे कदम उठाए हैं। पूरनपुर, गोला और मिश्रिख के मामलों में भी सारथी ने पत्रकारों के लिए 6-6 घंटे तक स्टेट हाईवे जाम कराया। उन्होंने बताया कि प्रदेश के किसी भी जिले में जरूरत पड़ने पर हजारों पत्रकार एकत्रित हो सकते हैं। देशभर में पत्रकारों को जोड़ने की मुहिम संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रविंद्र मिश्रा और चीफ कोऑर्डिनेटर अनुराग सारथी ने पत्रकारों को एकजुट करने के लिए देशभर में अभियान चलाया है। उनकी मांग है कि पत्रकारों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ संसद में आवाज उठाने के लिए एक प्रतिनिधि होना चाहिए। अनुराग सारथी ने कहा, ह्नेता मंचों से पत्रकारों को चौथा स्तंभ कहते हैं, लेकिन उनके अधिकारों की रक्षा के लिए संसद में कोई खड़ा नहीं होता। पत्रकारों पर फर्जी मुकदमे दर्ज होते हैं और उनकी हत्याएं होती हैं, लेकिन न्याय नहीं मिलता।

चुनाव प्रणाली में बदलाव की मांग

सारथी का कहना है कि पत्रकारों के लिए भी स्नातक और शिक्षक एमएलसी की तर्ज पर अलग निर्वाचन क्षेत्र होना चाहिए। इससे पत्रकार अपना नेता चुन सकेंगे, जो संसद में उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ेगा।

ऐप्जा की सदस्यता बढ़ रही है

शाहजहांपुर में पिछले एक महीने में चार बार सारथी का दौरा हो चुका है। यहां ब्लॉक और तहसील स्तर पर लगभग 240 पत्रकार संगठन की सदस्यता ले चुके हैं। संगठन का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, और यह प्रदेशभर के पत्रकारों को एकजुट कर रहा है।

सारथी का संदेश

अनुराग सारथी ने प्रदेश और देश के सभी पत्रकारों से ऐप्जा की सदस्यता लेने और इस आंदोलन में सक्रिय भागीदारी करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, जब तक पत्रकार संगठित नहीं होंगे, उनके अधिकारों की लड़ाई नहीं लड़ी जा सकेगी।

पूरनपुर में ऐप्जा की महत्वपूर्ण बैठक, जिसमें कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई

लोकतंत्र की शान
संवाददाता-मंजीत शर्मा पीलीभीत

पीलीभीत पूरनपुर। पूरनपुर में पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में ऐप्जा संगठन की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई, जिसमें कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई। इस बैठक में ऐप्जा संगठन के चीफ कोऑर्डिनेटर अनुराग सारथी ने सबलू खान को तहसील प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी, जिसके लिए उन्हें बधाइयां मिल रही हैं। बैठक में क्षेत्र और तहसील के कई पत्रकार मौजूद थे, जिन्होंने बैठक की जानकारी दी। अनुराग सारथी ने बताया कि संगठन को गति प्रदान करने के लिए यह बैठक आयोजित की गई थी। उन्होंने कहा कि संगठन को बढ़ाने और मजबूत करने के लिए हमें एकजुट होकर काम करना होगा। बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई, जिनमें संगठन की मजबूती और पत्रकारों की समस्याओं का समाधान शामिल था। अनुराग सारथी ने कहा कि हमें अपने क्षेत्र के विकास के लिए एकजुट होकर काम करना होगा और संगठन को मजबूत बनाना होगा। इस बैठक के बाद एपजा संगठन के कार्यकताओं में उत्साह और उमंग का माहौल है। उन्हें उम्मीद है कि इस बैठक के बाद संगठन को गति मिलेगी और कलमकार मजबूती से काम कर पाएंगे। अनुराग सारथी ने यह भी कहा कि पत्रकारों के ऊपर हो रहे अत्याचारों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि पत्रकारों के अधिकारों की रक्षा और उनके हितों की लड़ाई लड़ी जाएगी। बैठक में क्षेत्र के काफी पत्रकार उपस्थित रहे।

द प्रयास वर्ल्ड स्कूल के छात्र-छात्राओं ने एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में लहराया परचम

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। गुरुवार को नगर के प्रगतिशील विद्यालय द प्रयास वर्ल्ड स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित इंटर स्कूल एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में न केवल प्रतिभाग किया गया वरन एक के बाद एक स्थान प्राप्त कर प्रतियोगिताओं में अपना परचम लहराया। कार्यक्रम में बालिका वर्ग में 100 मीटर दौड़ में कक्षा 5 की सिमरा खान ने द्वितीय स्थान, 200 मीटर दौड़ में कक्षा 7 की शिवानी चौहान ने द्वितीय स्थान व कक्षा 4 की सुरभि सैनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं ऊंची कूद प्रतियोगिता में कक्षा 7 कि शिवानी ने प्रथम स्थान, कक्षा 3 की नूर हुदा ने प्रथम स्थान व कक्षा 2 की उपासना ने तृतीय स्थान पर अपना कब्जा किया। उधर ऊंची कूद बालक वर्ग में कक्षा 7 के अक्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय परिवार द्वारा सभी विजयी छात्र-छात्राओं को बधाई दी गई, तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई, कार्यक्रम में छात्राओं के साथ विद्यालय परिवार का प्रतिनिधित्व करते हुए विद्यालय के कोच पुलकित गौड़ व ख्याति शर्मा उपस्थित रहे।

रेडियोलाजिस्ट के बचाव में उतरी कांग्रेस, ज्ञापन सौंपकर न्याय की मांग

तौफीक खान संवादाता बस्ती

बस्ती। जिला महिला अस्पताल में तैनात रेडियोलाजिस्ट डा. आशुतोष शर्मा में लगे तमाम मनगढ़न्त और झूठे आरोपों को लेकर उनका परिवार आहत है। जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ज्ञानेन्द्र पाण्डेय की अगुवाई में डा. आशुतोष शर्मा की माता डा. शीला शर्मा व पार्टी के कई लोगों ने जिलाधिकारी को सम्बोधित ज्ञापन सीआरओ को सौंपा मांग की गई कि आशुतोष पर लगे आरोपों की निष्पक्षता से जांच करा ली जाये। कांग्रेस नेता ने कहा डा. आशुतोष पर गंभीर आरोप लगाकर उनकी छबि खराब की जा रही है शिकायतकर्ता निजी कारणों से शिकायत नही कर रहा बल्कि पूर्व में तैनात रेडियोलाजिस्ट डा. विमल द्विवेदी के हाथों में खेल रहा है और मनगढन्त आरोप लगाकर 5 लाख रूपया वूसली करना चाहता है। ऐसे में पूरे मामले की निष्पक्षता से जांच जरूरी है।महिला कांग्रेस की अध्यक्ष एवं डा. आशुतोष शर्मा की माता डा. शीला शर्मा का कहना है कि उन्हे भी जांच का कोई डर नही है। लेकिन सत्ताधारी दल का नेता होने का दबाव बनाकर, गुण्डई एवं मानसिक उत्पीड़न कर वसूली की मंशा कभी साकार नही होगी। न्याय पाने के लिये हम किसी भी स्तर तक जायेंगे। उनका बेटा सरकारी सेवा मे हैं तो किसी के रहमोकरम पर नही है, अपनी योग्यता क्षमत के दम पर उसकी नियुक्ति हुई है और सारी डिग्रियां वैध है।उन्होने कहा कि इस मामले में उन्हे जिला प्रशासन से न्याय की पूरी उम्मीद है। लेकिन न्याय की अनदेखी हुई तो वे किसी भी स्तर तक जाने को तैयार हैं। ज्ञापन सौंपने वालों में प्रमुख रूप से अनिल भारती, गंगा मिश्रा, गिरजेश पाल, अवधेश सिंह, आशुतोष पाण्डेय एडवोकेट आदि उपस्थित थे।

बस्ती शहर में 25 से 31 दिसंबर तक चल रहे नगर खेल कुंभ के दूसरे दिन का आयोजन आर.डी. सर माउंट विद्यालय में हुआ

तौफीक खान संवादाता बस्ती

बस्ती । जहां बैडमिंटन के मैच में दर्शकों तथा प्रतिभागियों का पूरा दिन उत्साह और उमंग से भरा रहा। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक हनुमान प्रसाद चौधरी अभाविप के पूर्व कार्यकर्ता अभिनव सिंह और नगर सह मंत्री मारुत पाण्डेय उपस्थित रहे। प्रबंधक हनुमान प्रसाद चौधरी ने संबोधित करते हुए कहा, "आर.डी. सर माउंट विद्यालय को इस नगर खेल कुंभ का हिस्सा बनाकर हमें गर्व महसूस हो रहा है। उन्होंने कहा कि नगर खेल कुंभ का उद्देश्य युवाओं में खेल भावना को बढ़ावा देना और उनके शारीरिक व मानसिक विकास को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा, "हमारा उद्देश्य केवल खेलों का आयोजन नहीं, बल्कि एक सकारात्मक माहौल का निर्माण करना है, जो आने वाले वर्षों तक स्मरणीय रहेगा। अभाविप पूर्व कार्यकर्ता अभिनव सिंह जी ने खेलों की परंपरा और युवाओं के लिए इसके महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "खेल कुंभ जैसे आयोजन युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने और बेहतर अवसर पाने का मंच प्रदान करते हैं। इस तरह के कार्यक्रम सामूहिक प्रयास और एकता का प्रतीक हैं। नगर सह मंत्री मारुत पाण्डेय ने दिनभर के आयोजन की जानकारी देते हुए बताया कि बैडमिंटन मैचों में प्रतिभागियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और दर्शकों का जोश भी पूरे दिन बना रहा। उन्होंने कहा, "इस तरह की प्रतियोगिताएं न केवल खेल भावना को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि युवाओं को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित भी करती हैं। इस प्रतियोगिता में प्रिया , सबा खातून , आंशिक, प्रियांशी, सिद्धार्थ, अनुराग, विनीत ,अभिषेक, धैर्य तथा अन्य प्रतिभागी विजेता रहे । इसके अलावा शहर के अन्य 10 विद्यालयों से भी प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया । इस दौरान जिला संगठन मंत्री सात्विक श्रीवास्तव , विभाग संयोजक बृजभूषण ,जिला संयोजक विकास , नगर मंत्री आशुतोष , विशाल , अमरेंद्र , अंकित , शुभेंदु , महेंद्र एवं अन्य प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

वैदिक संस्कृति के ध्वज वाहक श्री शंभू पंचअग्नि अखाड़े का महाकुम्भ क्षेत्र में हुआ भव्य प्रवेश

महाकुंभ नगर, 26 दिसंबर। महाकुम्भ नगर में भक्ति और अध्यात्म की धारा प्रवाहित हो रही है। एक एक करके महा कुम्भ क्षेत्र में सनातन धर्म के सभी 13 अखाड़ों का प्रवेश हो रहा है। संन्यासियों के तीसरे अखाड़े श्री शंभू पंच दशनाम अग्नि अखाड़े ने छावनी क्षेत्र में प्रवेश किया। शहर के बीचों बीच से होकर गुजरी इस भव्य छावनी प्रवेश यात्रा का स्थानीय लोगों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा से स्वागत किया।

अग्नि अखाड़े की छावनी प्रवेश यात्रा में दिखी वैदिक संस्कृति और प्रतीकों की झलक

महा कुम्भ नगर में अखाड़ा सेक्टर में गुरुवार को तीसरे संन्यासी अखाड़े का भी प्रवेश हो गया। श्री शंभू पंच अग्नि अखाड़े ने पूरी भव्यता के साथ छावनी क्षेत्र में प्रवेश किया । अनंत माधव स्थित अग्नि अखाड़े के स्थानीय मुख्यालय से आरम्भ हुई इस भव्य छावनी प्रवेश यात्रा में वैदिक संस्कृति और प्रतीकों की झलक देखने को मिली। शंख ध्वनि और डमरू की थाप पर वैदिक मंत्रोच्चार ने यात्रा में वैदिक युग की अनुभूति प्रदान की। हाथी , घोड़े और ऊंट के काफिले पर सवार संतों के दर्शन के लिए पूरा शहर उमड़ पड़ा। अग्नि अखाड़े के राष्ट्रीय महामंत्री सोमेश्वरानंद ब्रह्मचारी ने बताया कि प्रवेश यात्रा में पांच महामंडलेश्वर और आचार्य महामंडलेश्वर के अलावा अखाड़े के हजारों संत और वेद विद्यार्थी शामिल हुए।

सबसे लंबी प्रवेश यात्रा में संतों के दर्शन के लिए उमड़ा शहर

अग्नि अखाड़े की छावनी प्रवेश यात्रा अब तक सम्पन्न हुई सभी अखाड़ों की छावनी प्रवेश यात्रा में सबसे लंबी थी। चौफटका के अनंत माधव मंदिर से छावनी क्षेत्र पहुंची संतों की इस यात्रा ने 13 किलोमीटर का सफर तय किया। महा मंडलेश्वरों के रथों की सवारियों को देखने के लिए जैसे रास्तों में पूरा शहर उमड़ पड़ा। इस यात्रा आधा दर्जन ऊंट, 15 घोड़े, 60 रथ की व्यवस्था की गई है। फूलों के भव्य सिंहासन पर सवार संतों की सवारियों से पूरा क्षेत्र महक उठा।

अंबाला

नशा तस्करी के खिलाफ आमजन भी करे पुलिस का सहयोग : एसपी

नशा तस्करी के मामले को लेकर बातचीत करते अंबाला एसपी सुरेंद्र सिंह भोरिया।

अंबाला शहर : अंबाला एसपी सुरेन्द्र सिंह भोरिया ने नशीले पदार्थों की तस्करी करने वालों को चेतावनी देते हुए कहा कि अंबाला में नशे का कारोबार करने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। यदि कोई भी व्यक्ति को नशे की तस्करी के मामले में संलिप्त पाया गया तो उसके खिलाफ सख्त से सख्त कानूनी कार्रवाई अमल में लाई की जाएगी। एसपी सुरेन्द्र सिंह भोरिया ने कहा कि नशा युवा वर्ग को दीमक की तरह खा जाता है। नशे से कई लोगों की जिंदगी तबाह हो जाती है। नशा तस्करी के खिलाफ अंबाला पुलिस द्वारा पूरे जिले भर में विशेष अभियान चलाया गया है। नशा तस्करी के मामले में उन्होंने अंबाला नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि वह नशा तस्करों के खिलाफ ठोस कार्रवाई करने के लिए पुलिस का सहयोग जरूर करें। पार्षदों, संरपचों, कस्बों, गांवों व मोहल्लों को नशा मुक्त बनाने में उनका सहयोग लें जिससे हम सभी मिलकर समाज, राज्य व राष्ट्र को नशा मुक्त बना सके।

राष्ट्रीय परशुराम सेना द्वारा गीता आश्रम लाल कुर्ती बाजार में भव्य तुलसी पूजन

तुलसी पूजन कार्यक्रम में कीर्तन करते।

अम्बाला छावनी : प्रदेश अध्यक्ष हरियाणा जंगशेर शर्मा ने बताया हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी तुलसी पूजन धूम धाम से मनाया गया । पंडित दूधनाथ तिवारी ने मंत्रोच्चारण के साथ विधिवत पूजा करवाई अम्बाला छावनी प्रवक्ता अंजू शर्मा ने अपनी टीम के साथ भजन कीर्तन व गीता के श्लोक सुनाकर मंत्रमुग्ध किया। सनातन धर्म आस्थाओं का संग्रहालय है तुलसी पूजन से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है मन में अच्छे विचारों का वास होता है । आज हमारी युवा पीढ़ी सनातन धर्म में कम पश्चिमी सभ्यता की ओर अग्रसर हो रही है जिसके चलते सनातन संस्कृति को लोग पीछे छोड़ रहे हैं । हम सभी को अपने धर्म की रक्षा करने का प्रण लेना होगा। इस अवसर पर संगठन के सभी पदाधिकारी सदस्य एवं सर्व समाज के लोग भारी संख्या में उपस्थित रहे।

अब हर वीरवार को स्किन सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टर मरीजों की नागरिक अस्पताल में देखेंगे नि:शुल्क ओपीडी : डॉ रेणु

डॉक्टर रेणु बेरी

अम्बाला छावनी : अम्बाला छावनी के नागरिक अस्पताल में अब सुपरस्पेशलिटी स्किन की ओपीडी शुरू होने वाली है पीएमओ डॉक्टर रेणु बेरी पजनी ने बताया कि यह ओपीडी आदेश मेडिकल कॉलेज और अस्पताल मोहड़ी अपनी टीम के साथ ओपीडी के रूम नंबर 8 ग्राउंड फ्लोर में शुरू करेंगे। इस ओपीडी में लेफ्टिनेंट जनरल डॉक्टर आर एस गरेवाल प्रोफेसर और प्रमुख त्वचा एवं वीडी विभाग प्रत्येक वीरवार को अपनी सेवाएं मरीजो के लिए निःशुल्क देंगे। पीएमओ डॉक्टर रेणु बेरी पजनी ने बताया कि अम्बाला छावनी के नागरिक अस्पताल में स्किन की ओपीडी के लिए अम्बाला के अलावा आसपास के जिलों से भी काफी मरीज इलाज के लिए आते है लेकिन अब सुपर स्पेशलिटी डॉक्टर की ओपीडी के शुरू होने से विशेष रूप से पुराने और कठिन मामलों से निपटेंगे और मरीजो को इसका बहुत लाभ मिलेगा।

भगवान परशुराम सेवा समिति ने किया तुलसी पूजन

कार्यक्रम के दौरान समिति के सदस्य।

अम्बाला छावनी : भगवान परशुराम सेवा समिति रजि 1069 अम्बाला कैन्ट ने बुधवार को भगवान परशुराम मंदिर नग्गल करधान अम्बाला कैन्ट में हर साल की तरह इस बार भी तुलसी पूजन किया । जिसमें मुख्य यजमान समिति के संरक्षक राजिंदर कौशिक ओर उनकी धर्मपत्नी संगीता कौशिक रहे। तुलसी पूजन मंदिर के पंडित शम्भू दयाल द्वारा करवाई गई। समिति के प्रधान अतुल शर्मा ने बताया कि मंदिर के सामने धर्मशाला का काम चल रहा है सभी समाजसेवी सहयोग करे। समिति के सचिव राजेश गोल्डी शर्मा ने बताया कि हर हिन्दू को 25 दिसम्बर को अपने घरों में तुलसी पूजन करना चाहिए। समिति के खजांची शशि कांत पराशर ने बताया कि ऐसे धार्मिक कार्यक्रम से हमारे बच्चो में धार्मिक संस्कार आते हैं और धर्म का प्रचार होता है। समिति के महासचिव सुरिन्द्र राजू शर्मा ने बताया कि 15 फरवरी को भगवान परशुराम मंदिर नग्गल करधान का स्थापना दिवस मनाया जाएगा । इस पूजन में भगवान परशुराम सेवा समिति के सदस्य माजूद रहे।

पीकेआर जैन पब्लिक स्कूल में 7 दिवसीय स्पेशल एनएसएस कैंप शुरू

अंबाला शहर के पीकेआर जैन पब्लिक स्कूल के वॉलिंटियर्स एक जागरूकता रैली निकालते हुए।

अंबाला शहर : अंबाला शहर के पीकेआर जैन पब्लिक स्कूल में 7 दिवसीय स्पेशल एनएसएस कैंप शुभारंभ किया गया। इस कैंप में पहुंची प्रधानाचार्य नीरू शर्मा एवं कोऑर्डिनेटर आशु जैन ने विधिवत दीप प्रज्वलित करके शुभारंभ किया। इस दौरान वॉलिंटियर्स ने नवकार मंत्र का उच्चारण कर शुभ कार्य से पूर्व परमात्मा का स्मरण किया। पश्चात वॉलिंटियर्स ने एन एस एस गीत को गाया एवं शपथ लेकर 7 दिवसीय कैंप में प्रण लिया कि वह समाज की सेवा के लिए सदा तत्पर रहेंगे और समाज के उत्थान के लिए कार्य करेंगे। एनएसएस कमांडर राधिका चावला ने भाषण के द्वारा सभी वॉलिंटियर्स को जागृत किया। वंश जैन ने अपनी अपनी कविता के द्वारा इंसानियत का पाठ पढ़ाया।

बच्चों व युवा वर्ग को धर्म व गुरमत से जोड़ने के मकसद के पथ पर अग्रसर हरियाणा कमेटी : टीपी सिंह

ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री मंजी (बाउली) साहिब में शहीदी सभा के दूसरे दिन बच्चों ने लिया विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग: हरपाल सिंह

गुरुद्वारा श्री मंजी (बाउली) साहिब में शहीदी सभा के दौरान गतका टीम के साथ कार्यकारिणी समिति मैंबर टीपी सिंह व अन्य तथा (दाएं) जगाधरी गेट पर लंगर की सेवा करते भाजपा यूवा नेता गौरव घई व अन्य।

अंबाला शहर, दिसम्बर : ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री मंजी (बाउली) साहिब में शहीदी सभा के दूसरे दिन प्रतिभागियों ने गुरबाणी कंठ से लेकर सिख मार्शल आर्ट और धार्मिक प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रतिभा का बखूबी नमूना पेश किया। पांच साल की आयु वर्ग से 25 साल तक के आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने न सिर्फ गुरबाणी कंठ मुकाबले में गुरबाणी सुना कर अतिथियों व संगत को मंत्रमुगध किया, बल्कि आत्मरक्षा के गुर सिख मार्शल आर्ट के हैरतअंगेज करतब दिखा कर मौके पर मौजूद संगत को भी अपने बच्चों को गतका प्रशिक्षण देने के लिए प्रेरित किया। इससे पहले सभी ने गुरु चरणों में अरदास कर शहीदी सभा के दूसरे दिन की शुरूआत की। इस दौरान बाबा हरबंस सिंह रवालो वाले विशेष रूप से बच्चों को आशीर्वाद देने पहुंचे। समागम में हरियाणा सिख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी के वरिष्ठ उपप्रधान सुदर्शन सिंह सहगल, कार्यकारिणी समिति तरविंदरपाल सिंह, मैंबर हरपाल सिंह कंबोज, इंदरजीत सिंह वासूदेवा, रजिंदर सिंह, कैप्टन दिलबाग सिंह, श्री गुरु हरगोबिंद साहिब सेवा सोसायटी अंबाला शहर के प्रधान मनजीत सिंह, महिंदर सिंह, रणजीत सिंह बेदी, मोहन सिंह तोखड़ा, जगमोहन सिंह, जगजीत सिंह, भूपिंदर सिंह व इंदरपाल सिंह, तरणदीप सिंह सेठी, तजिंदर सिंह संधू, चरणजीत सिंह करनाल, मैनेजर प्रितपाल सिंह, हैड ग्रंथी सतनाम सिंह सहित संगत ने शहीदों को अपने श्रद्धासुमन भी अर्पित किए। काबिलेजिक्र है कि यह शहीदी सभा हरियाणा सिख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी द्वारा श्री गुरु हरगोबिंद साहिब सेवा सोसायटी अंबाला शहर के सहयोग से करवाई गई है। इस शहीदी सभा के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं भी करवाई गई।

कार्यक्रम में सहयोग करने वाले स्कूल प्रतिनिधियों का आभार जताते हुए कार्यकारिणी समिति मैंबर तरविंदरपाल सिंह ने बताया कि बुधवार को विभिन्न प्रतिभागियों ने दुमाला सजाने के मुकाबले में सुंदर दुमाले सजा कर संगत को अपनी ओर आकर्षित किया, जबकि गुरबाणी कंठ मुकाबलों में भी प्रतिभागियों ने अपने हुनर का बाखूबी नमूना पेश किया। उन्होंने बताया कि बाणी, श्लोक मल्ला नौवां एवं शबद (नौवी पातशाही)पर गुरबाणी कंठ मुकाबले हुए, जिसमें पांच से आठ साल तक के बच्चों ने पहले 10 श्लोक तथा एक शबद, 9 से 15 साल तक के बच्चों ने पहले 25 श्लोक एवं दो शबद, 16 से 25 साल तक के विद्यार्थियों ने 57 श्लोक, चार शबद एवं तव प्रसाद सवेयो तक की प्रतियोगिता में भाग लिया। यही नहीं, प्रतिभागियों ने सिख मार्शल आर्ट (गतका) प्रदर्शन में इस कदर हैरतअंगेज करतब दिखाए कि देखने वाला हर कोई दांतों तले उगली दबाने को विवश हो गया। इसके साथ ही सिखी स्वरूप मेरा असली रूप में बच्चें संगत को आकर्षितकरने में सफल रहे।

प्रश्नोत्तरी में भी बच्चों ने अपने ज्ञान का नमूना पेश किया। इसके अतिरिक्त अवार्ड बैस्ट अभिभावक प्रतियोगिता भी हुई।

मैंबर हरपाल सिंह कंबोज ने कहा कि हरियाणा सिख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी के प्रधान जत्थेदार भूपिंदर सिंह असंध और धर्म प्रचार चेयरमैन जत्थेदार बलजीत सिंह दादूवाल के दिशा-निर्देश पर धन-धन श्री गुरु तेग बहादुर साहिब, माता गुजर कौर व चार साहिबजादों एवं समूह शहीदों की शहादत को समर्पित यह शहीदी सभा करवाई गई। इसके तहत करवाई गई प्रतियोगिताओं का उद्देश्य बच्चों व युवा वर्ग को गुरमत ज्ञान देने के साथ-साथ उन्हें गुरबाणी से जोडना है। सभा के दौरान करवाई गई प्रतियोगिताओं में जिस तरह से प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा का नमूना पेश किया है, उससे यह प्रमाणित हो गया है कि हरियाणा सिख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी बच्चों और युवा वर्ग को धर्म व गुरमत ज्ञान देने के साथ गुरबाणी से जोडने.के अपने मकसद में सफलता के पथ पर अग्रसर है। इस दौरान जज की भूमिका धर्म प्रचार के प्रचारक इंदरपाल सिंह, बचितर सिंह, मनप्रीत सिंह, गुरप्रीत सिंह, गुरमुख सिंह, गुरविंदर सिंह, प्रभजीत सिंह, परमिंदर कौर, अमलोक सिंह हीरा दिल्ली ने निभाई।

इसके अलावा श्री गुरु तेग बहादुर खालसा स्कूल कैथल की प्रिंसीपल अमरजीत कौर, दशमेश सीनियर सैकेंडरी स्कूल कपाल मोचन की प्रिंसीपल नरेंद्र कौर, अंबाला पबलिक स्कूल की प्रिंसीपल सुखविंदर कौर विर्क, टीचर रीतिका, श्री गुरु हरगोबिंद साहिब हाई स्कूल अंबाला शहर से हरदीप सिंह व गुरदीप सिंह, अकाल एकैडमी माजरी से प्रितपाल सिंह व गगनदीप सिंह, अंबाला पबिलक स्कूल से डा.कुलविंदर व मनप्रीत कौर, बैल टॉल पबलिक स्कूल से परमजीत कौर व संदीप कौर, डीएवी (मुरलीधर) सीनियर सैकेंडरी पबलिक स्कूल अंबाला शहर से तजिंदर सिंह, दशमेश सीनियर सैकेंडरी स्कूल कपाल मोचन से गुरप्रीत कौर व गुरलीन कौर, दयानंद पबलिक स्कूल से इंदरपाल सिंह, गुरु तेग बहादुर खालसा पबलिक स्कूल कैथल से शरणजीत कौर, खालसा हाई स्कूल से हरसिमर व रमन, पीकेआर जैन गर्ल्ज सीनियर सैकेंडरी स्कूल से अमनप्रीत कौर, पुलिस डीएवी पबलिक स्कूल से तजिंदर सिंह, साहब किड्स एकैडमी से अमरजीत कौर व मनजोत कौर, श्री गुरु हरगोबिंद साहिब पबलिक स्कूल अंबाला शहर से परमजीत सिंह व सुरिंदर सिंह, सिख सीनियर सैकेंडरी स्कूल अंबाला कैंट से परमिंदर कौर ने बतौर समनव्यक अपनी ड्यूटी निभाई।

दून इंटरनेशनल स्कूल, करनाल में आयोजित किया गया "जिला स्तरीय वीर बाल दिवस"

करनाल: सुखविन्दर सोही

करनाल। कैथल रोड, करनाल स्थित दून इंटरनेशनल स्कूल में सरबंस दानी दशमेश पिता के चारों साहिबजादों की महान व लासानी शहादत की पवित्र याद में जिला स्तरीय वीर बाल दिवस का अत्यंत प्रभावशाली आयोजन हुआ, जिसमें मुख्यअतिथि के रूप में करनाल विधायक जगमोहन आनंद, बीजेपी के कार्यकारी जिला अध्यक्ष बृज गुप्ता, करनाल की पूर्व महापौर रेणु गुप्ता, हरियाणा वेलफेयर सोसाइटी फॉर फिजिकल डिसेबल की चेयरपर्सन मेघा भंडारी,पूर्व महिला जिला अध्यक्ष मीनाक्षी भिंडर, पूर्व एमसी रजनी प्रोचा, मनमीत सिंह बावा, मोहन लोधी, रमेश गिल, पूर्व प्रिंसिपल कमलेश अरोड़ा, एडवोकेट स्वर्ण सिंह व ज्ञानी सुखबीर सिंह इत्यादि ने शिरकत की। अपने संबोधन में करनाल विधायक जगमोहन आनंद ने कहा की प्रत्येक भारतीय महान गुरुओं और चार साहिबजादों के सर्वोच्च बलिदान का ऋणी है और इसी उदेश्य से भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा चार साहिबजादों के उस महान बलिदान की पावन स्मृति हेतु 26 दिसंबर के दिन को वीर बाल दिवस घोषित किया गया है जोकि पूरे देश में एक प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है, यह उनका एक सराहनीय प्रयास है और दून इंटरनैशनल स्कूल और स्कूल प्रबंध निदेशक कुलजिन्दर मोहन सिंह बाठ द्वारा उक्त वीर बाल दिवस का जिला स्तर पर अत्यंत प्रभावी आयोजन करवाना एक सराहना योग्य कदम है। करनाल की पूर्व मेयर रेणु बाला गुप्ता द्वारा भी दून इंटरनेशनल स्कूल के वीर बाल दिवस आयोजन को अदभुद , प्रभावी व उद्देश्यपूर्ण बताया। तत्पश्चात दून इंटरनेशनल स्कूल के सर्वप्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियों ने कार्यक्रम का आरंभ भावमयी शब्द गायन के माध्यम से किया, जिसमें चार साहिबजादों द्वारा देश, संस्कृति और धर्म की रक्षा हेतु दिए।

साहस और बलिदान की कहानी याद दिलाता है वीर बलिदान दिवस -फुलविंदर सिंह

वीर बलिदान दिवस के अवसर पर गणपति मार्केट में लगाया गुरु का लंगर

करनाल सुखविन्दर सिंह सोही

पंजाब। सहित देशभर में 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के रूप में याद किया जाता है। सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह के चारों साहिबजादों के सम्मान में वीर बाल दिवस को याद किया जाता है। गुरु गोविंद सिंह के साहिब जादों ने धर्म के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। जोरावर सिंह और फतेह सिंह की आज ही के दिन शहादत हुई थी। उन्हें सम्मानित करने के लिए हर साल इस दिन को वीर बाल दिवस के रूप में याद किया जाता है और इस दिन जगह जगह पर लगांरा लगाया जाता है शहीदी दिवस के उपलक्ष्य मे स्थानीय पुरानी सब्जी मंडी गणपति मार्केट में वीर जी ट्रेडर्स पर गुरु का लंगर लगाया गया । लंगर की सेवा में वीर जी ट्रेडर्स के संचालक सरदार फुलविंदर सिंह खुराना व मार्किट के दुकानदार भाइयों इस लंगर में बढ़चढ़ के हिस्सा लिया तथा भाईचारे की मिसाल पेश की। इस मौके पर सरदार फुलविंदर सिंह ने कहा कि वीर बाल दिवस हमें साहस और बलिदान की कहानी याद दिलाता है। जोरावर सिंह और फतेह सिंह ने मुगल शासक के अत्याचारों का डटकर सामना किया और धर्म नहीं बदलने की कसम खाई। इन साहिबजादों ने अपनी जान की बाजी लगाकर धर्म के लिए निष्ठा का परिचय दिया। उन्होंने साबित किया कि धर्म केवल रस्मों रिवाजों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। इस मौके पर मौजूद रहे अजय जैन,नरेश मिढ़ा , अजय कुमार ,परवीन,विजय सिंगला, रमनजीत सिंह,डा अशोक कुमार अनमोल खुराना सहित अन्य दुकानदार मौजूद रहे।

सुपर स्पेशलिटी मेडिकल सुविधा देने के लिए प्रतिबद्ध है। - डायरेक्टर, डॉ. शुचिन

करनाल सुखविंदर सोही

करनाल। अमृतधारा माई हॉस्पिटल के ह्रदय सर्जरी विभाग के मुख्य कार्डिएक सर्जन डॉ. संतोष गुप्ता ने 17 सफल ह्रदय सर्जरी की जिसमे ह्रदय की बाई पास सर्जरी, वाल्व रिप्लेसमेंट सर्जरी एवं ह्रदय में छेद की सर्जरी जैसी जटिल सर्जरी शामिल है। इन सर्जरीयों के बाद सभी मरीज पूरी तरह स्वस्थ हैं और उनकी स्थिति स्थिर है। उजाला सिग्नस ग्रुप के फाउंडर - डायरेक्टर, डॉ. शुचिन बजाज ने बताया कि अमृतधारा माई हॉस्पिटल सब तरह की सुपर स्पेशलिटी मेडिकल सुविधा देने के लिए प्रतिबद्ध है। करनाल और आसपास के मरीजों को पहले इन बीमारियों के लिए दिल्ली या चंडीगढ़ जाना पड़ता था, जिनका उपचार अब करनाल में ही संभव है। अस्पताल की यूनिट हेड, श्रीमती मीनू मल्होत्रा ने इस सफलता पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. संतोष गुप्ता ने अपने अनुभव और नवीनतम चिकित्सा पद्धतियों का उपयोग करते हुए मरीजों की जान बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. संतोष गुप्ता ने प्रेस वार्ता में बताया की ह्रदय रोगो में बीमारी का पता चलने के बाद जितनी जल्दी उसका उपचार किया जाये उतना ही मरीजों में रिकवरी जल्दी होती है। डॉ. शमित गुप्ता, मेडिकल डायरेक्टर, ने बताया की अमृतधारा माई हॉस्पिटल में ह्रदय रोग, ह्रदय सर्जरी के मरीजों के लिए अलग से उळ्श्र क्ठव उपलब्ध है जिससे मरीजों में सर्जरी के बाद अच्छे परिणाम आते हैं। इस अवसर पर हमारे मरीज जैसे सोनिया, संजय, बलजीत, सुभाष, गीता, राकेश, सुनीता, मेवा रानी, प्रेम सिंह, विजय और अमर सिंह, ने भी ऑपरेशन के बाद का अपना अनुभव साँझा किया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल रिवरसाइड में बड़ा दिन धूमधाम से मनाया

कार्यक्रम के दौरान मंच पर प्रस्तुति देते विद्यार्थी।

अम्बाला छावनी : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, रिवरसाइड में इन्द्र सदन द्वारा विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें क्रिसमस का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आकर्षक मंच सज्जा ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। नियमित प्रार्थना के पश्चात यीशु मसीह के जन्म की झलकियां प्रस्तुत की गई और मधुर भजनों के माध्यम से उनका जन्मोत्सव मनाया गया। बच्चों ने अपने वक्तव्यों में यीशु मसीह के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके दिखाए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। विद्यालय की प्रधानाचार्या, डॉ. सीमा दत्त ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा, हमें सभी धर्मों का समान रूप से सम्मान करना चाहिए, क्योंकि हर धर्म हमें मानवता, सदाचार और परोपकार का संदेश देता है। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

अंबाला म्यूजिकल क्लब ने रफी साहब को श्रद्धांजलि अर्पित की

न फनकार तुझसा तेरे बाद आया, मोहम्मद रफी तू बहुत याद आया

कार्यक्रम के दौरान मुख्यातिथि को सम्मानित करते क्लब के सदस्य तथा (दाएं) दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते मुख्यातिथि।

अम्बाला छावनी, दिसंबर : अंबाला म्यूजिकल क्लब, अंबाला छावनी अपनी रूहानी आवाज से जमाने को अपना दीवाना बनाने वाले भारतीय संगीत जगत के अनुपम सितारे मोहम्मद रफी साहब के 100वें जन्मदिवस पर सुरमई शाम स्वर्णिम संगीत संध्या का सफल आयोजन किया गया। जहां एक तरफ इस कार्यक्रम में जाने माने समाजसेवी एवं बी जे पी के वरिष्ठ नेता कपिल विज ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत कर कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाया वहीं दूसरी तरफ राहुल आनंद शर्मा, सी ई ओ, अंबाला कैंट बोर्ड एवं संदीप कुमार घोसाल, फील्ड जनरल मैनेजर, इंडियन बैंक वशिष्ट अथिति के रूप में उपस्थित के रूप में उपस्थित रहे।

पार्थ गुप्ता, आईएएस, डिप्टी कमिश्नर अंबाला ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में क्लब चेयरमैन डॉ नवीन गुलाटी ने सफल मंच संचालन किया। कार्यक्रम का आरंभ सभी अतिथियों एवं संगीत प्रेमियों के स्वागत के साथ हुआ। मुख्यातिथि कपिल विज ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि अंबाला म्यूजिकल क्लब, अंबाला वासियों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। कपिल विज ने भारतीय संगीत, कला एवं संस्कृति को अंबाला वासियों के दिलों में जीवंत रखने जैसे महान काम के लिए अंबाला म्यूजिकल क्लब की जमकर तारीफ की और कहा कि अंबाला म्यूजिकल क्लब के सभी सदस्य इस अनूठी पहल के लिए बधाई के पात्र हैं। वशिष्ट अतिथियों ने भी कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देने वाले सभी गायकों की जमकर तारीफ की और कहा कि अंबाला म्यूजिकल क्लब न केवल अंबाला का बल्कि संपूर्ण उत्तर भारत का सर्वश्रेष्ठ म्यूजिकल क्लब है। कार्यक्रम के अंत में सभी गायकों को उनकी बेजोड़ गायकी के लिए सम्मानित किया गया। क्लब के सभी सदस्यों ने मुख्यातिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को स्मृतिचिह्न देकर कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में 500 से भी अधिक संगती प्रेमियों ने संगीत का लुफ्त उठाया और मोहम्मद रफी साहब को श्रद्धांजलि अर्पित कर याद किया।

नगर परिषद चुनाव को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक

कांग्रेस भवन में बैठक के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ता।

अम्बाला छावनी : कांग्रेस भवन अंबाला छावनी में नगर परिषद चुनाव से संबंधित एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया । जिसमें सभी कांग्रेसजनों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और चुनावी शंखनाद होने के बाद इस बैठक में मजबूत तरीके से चुनाव लड़ने की रणनीति के ऊपर चर्चा की गई । साथ ही नगर परिषद के चेयरमैन पद के लिए सर्वसम्मति से चार नाम सुझाए गए । जिसमे सुधीर जायसवाल पूर्व डिप्टी मेयर, नीलम शर्मा पूर्व अध्यक्ष नगर परिषद अंबाला सदर और ओंकार नाथी पूर्व पार्षद। सभी कार्यकताओं में चर्चा के बाद यह भी फाइनल किया गया की 32 वार्डों में मजबूत जिताऊ दावेदारों को ही टिकट दी जाए और इसके लिए एक टिकट आवेदन कमेटी का जल्द गठन किया जाएगा। इस अवसर पर अशोक जैन पूर्व जिला अध्यक्ष कांग्रेस पार्टी, पूर्व पार्षद घनश्याम, पूर्व पार्षद रतनलाल, सतीश कनौजिया,मनीष राणा,महिला अध्यक्ष गोरी शर्मा,ऑफिस इंचार्ज पंकज शर्मा,संदीप वशिष्ठ, हरमिंदर हीरा,,विजय पप्पल, भूपिंदर अत्री,हिमांशु पुंज,दविंदर चौहान,मस्तराम धर्मपाल,बख्शी जी,कपिल धीमान अनिल अरोड़ा, मनजीत सिंह,जतीन शर्मा कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

विकास समन्वय एवं निगरानी समिति की बैठक।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। पश्चिम चंपारण के डॉ0 संजय जायसवाल सांसद-सह-अध्यक्ष की अध्यक्षता में गुरुवार को बेतिया समाहरणालय सभाकक्ष में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक सम्पन्न हुयी। बेतिया जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय द्वारा अध्यक्ष सहित सभी जनप्रतिनिधिगणों का स्वागत किया गया। इसके उपरांत अध्यक्ष को विभिन्न योजनाओं की कार्य प्रगति से अवगत कराया गया। पावर प्रजेंटेशन के माध्यम से बारी-बारी से विभिन्न योजनाओं की विस्तार से जानकारी जिलाधिकारी द्वारा दी गयी। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि जिले के विकास को गति देने में जिला प्रशासन की पूरी टीम निरंतर तत्परतापूर्वक कार्य कर रही है। सरकार की योजनाओं, कार्यक्रमों का क्रियान्वयन ससमय कराया जा रहा है। कार्य प्रगति की नियमित रूप से समीक्षा एवं अनुश्रवण किया जा रहा है। इस कार्य में जनप्रतिनिधिगणों का सहयोग मिल रहा है। दिशा की बैठक में विगत बैठक की कार्यवाही की सम्पुष्टि के साथ ही प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम, दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान, अटल नवीकरण और शहरी परिवर्तन मिशन 2.0, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण, जन-जन का स्वास्थ्य मिशन, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, स्वच्छ भारत मिशन, ग्रामीण, प्रधानमंत्री आवास योजना, पशुपालन विभाग, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, बाल संरक्षण एवं सुरक्षा योजना, महिला संरक्षण एवं सुरक्षा योजना, जल-जीवन मिशन, डिजिटल इंडिया भूमि अभिलेख आधुनिकीकरण कार्यक्रम, प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण, प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, प्रधानमंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना, सुगम्य भारत अभियना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, संसद सदस्य स्थानीय क्षेत्र विकास योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालय, खेल इंडिया आदि के कार्य प्रगति की समीक्षा माननीय अध्यक्ष द्वारा की गयी। उप विकास आयुक्त, सुमित कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। उपस्थित अध्यक्ष सहित सभी जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों को धन्यवाद दिया गया। उप विकास आयुक्त द्वारा अध्यक्ष को आश्वस्त किया गया कि दिशा की बैठक में जो भी निर्देश दिए गए हैं, उनका त्वरित गति से अनुपालन सुनिश्चित कराया जायेगा। इस अवसर पर लोकसभा सांसद, सुनील कुमार,विधायक उमाकांत सिंह, राम सिंह, विधान पार्षद भीष्म सहनी अन्य जनप्रतिनिधिगण सहित जिलाधिकारी, दिनेश कुमार राय, उप विकास आयुक्त, सुमित कुमार, सभी जिलास्तरीय पदाधिकारी, अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

राज्य स्तरीय फुटबॉल महासंग्राम के उदघाटन मैच में शाहजहांपुर ने लखनऊ को 2-1 गोल से हराया

खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन कर मैन ऑफ द मैच हिमांशु को पुरस्कृत किया

■ कालपी-उरई

बुधवार को डॉक्टर भीमराव अंबेडकर फुटबॉल महासंग्राम का उदघाटन सीओ अवधेश कुमार सिंह तथा एसडीएम सुशील कुमार सिंह के द्वारा फीता काट कर धूमधाम पूर्वक किया गया। उदघाटन मैच में शाहजहांपुर बरेली मंडल की टीम ने कड़े मुकाबले में लखनऊ की टीम को 2-1 गोल के अंतर से शिकस्त दी गई।

एम एस वीं इंटर कालेज कालपी में आयोजित उदघाटन मैच में विधालय के प्रबंधक एवं टूर्नामेंट के संरक्षक डॉ नरेश मैहर तथा समिति के अध्यक्ष जगजीवन अहिरवार ने एसडीएम तथा क्षेत्राधिकारी का फूल मालाओं से स्वागत किया। बुंदेलखंड बॉर्डर फुटबॉल क्लब कालपी के तत्वाधान में छठवां राज्य स्तरीय फुटबॉल महासंग्राम का उदघाटन समारोह में विचार प्रकट करते हुए उप जिलाधिकारी ने कहा कि खेलों से आपसी सद्भाव बढ़ता है तथा शरीर भी फिट रहता है उन्होंने कहा कि युवकों को अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिये।25 दिसंबर से 29 दिसंबर तक टूर्नामेंट में क्रीड़ा विभाग में पंजीकृत टीमें कानपुर, शाहजहांपुर, लखीमपुर, लखनऊ स्पोर्ट्स, मऊनाथ भोजन, झांसी रेलवे , बुंदेलखंड बार्डर कालपी हिस्सा लेंगे।फुटवाल टूर्नामेंट कार्यक्रम के संयोजक नगर पालिका परिषद कालपी के पूर्व अध्यक्ष प्रतिनिधि जगजीवन अहिरवार ने मैन ऑफ द मैच का खिताब हासिल करने वाले शाहजहांपुर के खिलाड़ी हिमांशु को 21 सौ रुपये देकर पुरस्कृत किया गया। उन्होंने कहा कि कालपी जैसे छोटे कस्बे में फुटबॉल खेल के खिलाड़ियों में प्रतिभा की कमी नहीं है बल्कि उसे निखारने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कालपी के खिलाड़ियों ने समय-समय पर अपनी खेल प्रतिभा के बल पर प्रदेश एवं देश में नाम रोशन किया है। बरकती मोबाइल फर्म के प्रोपराइटर के द्वारा एयर फोन भेंट करके हौसला अफजाई की। मैच में रेफरी की भूमिका बनारस के अनूप कुमार तिवारी द्वारा की गई। बरकत अंसारी सभासद तथा अब्दुल सलाम मंसूरी ने कॉमेंटेटर की भूमिका अदा की।

संस्था के सदस्यों कमल सैनी, खालिद मास्टर,जिया दीवान पूर्व फुटबॉलर अहसान खान,ताहिर खान ,संजय सैनी, वसीम अंसारी, अजहर हाशमी, मुजम्मिल , जुनैद,अनुपम,जावेद वारसी, प्रेस क्लब कालपी तहसील अध्यक्ष सलीम अंसारी, राजा अनवारुल , मुहम्मद अहमद एडवोकेट, दानिश कुरैशी आदि मौजूद रहे। फुटबॉल मैच को लेकर मैदान को सजाया गया है। एम एस वीं इंटर कॉलेज के ग्राउंड में व्यापक सजावट की गई है। वही पुलिस प्रशासन के द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये है।

नीतीश कुमार द्वारा गन्ना के दाम में 20 रुपए बढ़ोतरी किसानों के साथ धोखा है।

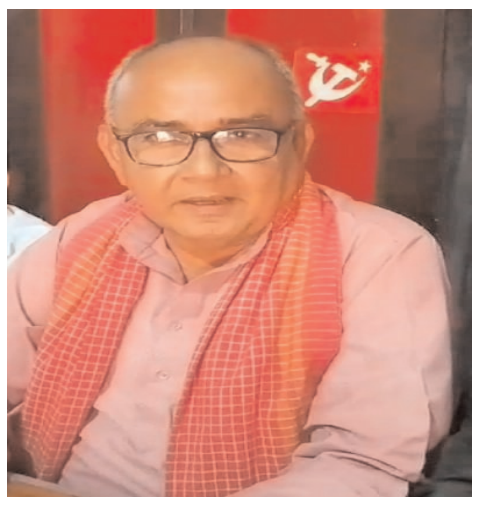

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बिहार। अखिल भारतीय गन्ना किसान महासंघ के राष्ट्रीय महासचिव नंदकिशोर शुक्ला तथा बिहार राज्य ईख उत्पादक संघ के महासचिव प्रभुराज नारायण राव ने कहा कि बिहार के गन्ना किसानों के साथ बिहार सरकार की रवैया निश्चित रूप से ही निराशाजनक है ।आज गन्ना किसान घाटे की खेती कर रहे हैं। पिछले एक दशक से किसानों को राज्य सरकार द्वारा राज्य समर्थित मूल्य नहीं दिया गया और काफी उम्मीदें बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से बिहार के गन्ना किसानों को थी कि राज्य सरकार द्वारा समर्थित मूल्य सम्मानजनक होगा और गन्ना किसानों को लाभ पहुंचाएगा । लेकिन 23 दिसंबर को बिहार के गन्ना उत्पादन का हब पश्चिम चंपारण में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा गन्ना के दाम में 20 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ोतरी की घोषणा बिहार के किसानों में आक्रोश पैदा किया है। नेता द्वय ने कहा कि बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है और कृषि आधारित उद्योग के रूप में बिहार में 29 चीनी मील थे।लेकिन आज मात्र 10 चीनी मीलें चल रही हैं।19 चीनी मील बंद पड़ी हुई हैं। उसमें से 15 चीनी मील बिहार राज्य गन्ना विकास निगम के अधीन है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को बंद पड़े सभी चीनी मिलों को चालू करके बिहार के विकास को आगे बढ़ाना चाहिए। क्योंकि चीनी मिलों के चालू हो जाने से बिहार में बड़े पैमाने पर रोजगार मिलेगा ।बिहार के किसानों को गन्ना जैसे नगदी फसल का लाभ मिलेगा और गन्ना से चीनी निकालने के बाद इसके बायो प्रोडक्ट के रूप में बिजली ,खाद ,इथनॉल जैसे कीमती सामानों का उत्पादन बढ़ेगा।जिसके मुनाफे का आधा हिस्सा किसानों को भी दिया जाय। नेता द्वय ने मांग किया कि पंजाब की सरकार 401 रुपए प्रति क्विंटल गन्ना का दाम दे रही है। तो बिहार सरकार बिहार के पलायन तथा किसानों के घाटे को रोकने के लिए बिहार के किसानों को 401 रुपए क्यों नहीं दे रही है। नेता द्वय ने कहा कि अखिल भारतीय गन्ना उत्पादक किसान महासंघ तथा बिहार राज्य ईख उत्पादक संघ लगातार आंदोलन कर रही है कि गन्ना का दाम 550 रुपए प्रति क्विंटल किया जाए। चीनी मिलों द्वारा की जा रही घटतौली पर रोक लगाई जाए।गन्ना तौल के लिए पर्ची सभी कटेगरी के गन्ना के लिए सामान्य रूप से निर्गत किया जाय।

आर्म्स एक्ट में गिरफ्तार अपराधी ने दांत काटकर थानाध्यक्ष को किया घायल, फिर ऐसे हुआ फरार

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

सीतामढ़ी। बिहार राज्य के सीतामढ़ी से एक हैरतअंगेज मामला सामने आया है। यह घटना सीतामढ़ी जिले के बैरगनिया के जोड़ियाही गांव का बताया जा रहा है। जहां आर्म्स एक्ट का एक आरोपी पुलिस की गिरफ्त में आने के बाद थानाध्यक्ष को दांत काट कर फरार हो गया। आर्म्स एक्ट के आरोप में आरोपित को थाना लाया जा रहा था, इसी दौरान देर शाम थानेदार के हाथ में दांत काटकर भाग निकला। इस मामले में पुलिस ने तीन महिला समेत पांच लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज की है। वहीं, जख्मी थानाध्यक्ष रामशंकर कुमार ने बताया कि तिरहुत प्रक्षेत्र के पुलिस उप महानिरीक्षक के आदेश पर जोड़ियाही गांव स्थित फरार आरोपी के ननिहाल में सशस्त्र बल के साथ शाम 7.30 बजे छापेमारी करने गई थी। छापेमारी में आरोपी उरूज खान को पकड़ लिया गया। लेकिन वह जोर-जोर से हल्ला कर अपने परिजनों को बुलाते हुए धक्का मुक्की कर भागने की कोशिश करता रहा। इसके अलावा सफल नहीं होने पर आरोपी की बहन ने थानेदार के हाथ की कलाई में दांत काटकर मांस खिंचते हुए लहुलुहान कर दिया। इसके कारण दर्द से थानेदार की पकड़ ढीली हुई और आरोपी भागकर अपने नाना के घर में घुसा फिर पिछले दरवाजे से भाग निकला। थानाध्यक्ष ने बताया कि पकड़े गए आरोपी को भगाने के मामले में जोरियाही गांव निवासी जलील अहमद खान के पुत्र आरोपी उरुज खान, उसके छोटे भाई शाहिद खान, उसकी मां रेशमी खानम, बहन खुशी खानम और नाना रेयाज अहमद की पत्नी शमीम खानम के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया गया है। इसमें पुलिस गिरफ्त से भगाने, पुलिस के साथ मारपीट करने का भी आरोप लगाया गया है।

समाजसेवी के आवास पर सुंदरकांड का हुआ आयोजन

कोंच। नगर समाजसेवी एवं गल्ला व्यवसायी जयप्रकाश सोनी की धर्मपत्नी एवं डिस्ट्रिक्ट प्रेस क्लब के तहसील अध्यक्ष संजय सोनी की माता जी स्व. सुमन सोनी की सातवीं बरसी पर सुंदरकांड के संगीतमय सामूहिक पाठ एवं भंडारे का आयोजन किया गया। मुहल्ला जयप्रकाश नगर स्थित पोद्दार भवन में गौरी गणेश पूजन के साथ संगीतमय सुंदरकांड पाठ प्रारंभ हुआ जिसमें नगर के तमाम गणमान्य लोगों ने सहभागिता कर पुण्य लाभ अर्जित किया। देर शाम पाठ समापन पर भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें तमाम भक्तों ने प्रसाद छका। इस दौरान जयप्रकाश सोनी, सुरेश, प्रमोद, ओमप्रकाश, अरुण, शंभूदयाल, शैलेष, संजय, सुधीर, सचिन, संजीव, अमित, पवन, सुबोध, अभिषेक, अनिल, कुलदीप, सावन, शुभ, लाभ, अंबर, दर्श, रेनू, सपना, अंजली, मीरा, गीता, सुधा, मधु गुप्ता, संतोषी, सुनीता, हरिश्चंद्र तिवारी, अभिषेक रिछारिया आदि मौजूद रहे।

चैकिंग अभियान चला कर बिना प्रपत्रों के गिट्टी-मौरम लदे 6 ओवरलोड ट्रकों को किया सीज

■ कालपी-उरई

जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय के निर्देश पर 24/25 दिसम्बर की रात को एसडीएम सुशील कुमार सिंह, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी सीओ अवधेश कुमार सिंह की संयुक्त टीम के द्वारा कालपी- उरई हाइवे की सड़क में चैकिंग के दौरान बिना खनन प्रपत्रों के परिवहन करते ओवरलोड गिट्टी - मौरम से भरे आधा दर्जन ट्रकों को पकड़ कर सीज करने की कार्यवाही की गई है। प्रशासन की इस कार्यवाही से तमाम अवैध परिवहन करने वाले वाहन चालकों में खलबली मच गयी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बीती रात को आटा थाना पुलिस के साथ एसडीएम , सीओ तथा एआरटीओ राष्ट्रीय राजमार्ग में वाहन चैकिंग कर रहे थे। तभी उरई - कालपी हाइवे रोड की सड़क में आटा टोल प्लाजा में उपजिलाधिकारी सुशील कुमार सिंह तथा सीओ , परिवहन अधिकारी एवं पुलिस की टीम के द्वारा अवैध खनन तथा ओवरलोड के खिलाफ चैकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान बिना खनिज प्रपत्रों के ओवरलोड गिट्टी लदे 5 ट्रको को पकड़ लिया।।उपजिलाधिकारी ने पकड़े गये वाहनों को गल्ला मंडी उरई के परिसर में सम्बंधित थाना पुलिस की अभिरक्षा में सीज कर खड़ा करा दिया गया। इसी तारतम्य में एसडीएम के नेतृत्व में संयुक्त टीम के द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित जोल्हूपुर मोड़ में चेकिंग अभियान के दौरान

ओवरलोड मौरम लदे ट्रक के पास में खनिज रॉयल्टी एम एम - 11प्रपत्र नहीं पाया गया। रॉयल्टी प्रपत्र न होने पर अधिकारियों ने हैरानी जताई। ट्रक को गल्ला मंडी कालपी में पुलिस अभिरक्षा में खड़ा कर कर सीज करने की कार्रवाई की गई।

बद्रीप्रसाद महाविद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिताओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन

कठोर परिश्रम के बाद ही लक्ष्य हासिल किया जा सकता है- एसडीएम

■ कोंच

महेशपुरा रोड स्थित सेठ बद्री प्रसाद स्मृति महाविद्यालय में युवा महोत्सव और वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का तीसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन किया गया।

आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि उपजिलाधिकारी ज्योति सिंह, विशिष्ट अतिथि क्षेत्राधिकारी देवेंद्र कुमार पचौरी,प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार राय, कालेज के डायरेक्टर आशुतोष हूंका मंच पर उपस्थित रहे। खेलकूद प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। एसडीएम ने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी भी व्यक्ति के सशक्त होने का एकमात्र माध्यम शिक्षा ही है इसलिए विद्यार्थियों को कठोर परिश्रम करना पड़ेगा तभी वह अपना लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। इच्छा शक्ति को कभी भी कमजोर नहीं होने देना है। सीओ देवेंद्र कुमार पचौरी ने कहा कि शिक्षा के मंदिरों में अर्जित ज्ञान में जहां कहीं भी खालीपन नजर आए तो उसे अपने अनुभव और प्रयोगों से भरने का प्रयास करें तभी जीवन में सफलता के नए-नए आयाम स्थापित किए जा सकते हैं।प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार राय ने भी शिक्षा के साथ साथ खेलों को भी जरूरी बताते हुए कहा कि बौद्धिक और शारीरिक विकास के लिए दोनों जरूरी हैं। संचालन मृदुल दांतरे, अमन सक्सेना और मनस्वी ने संयुक्त रूप से किया। कालेज के डायरेक्टर आशुतोष हूंका ने अतिथियों का स्वागत किया एवं प्राचार्या डॉ. सावित्री गुप्ता ने आभार व्यक्त किया। इस मौके पर नीलम गुप्ता, ज्योति नीखरा, अनुष्का, आरती, ऊषा सिंह, रंजना, संध्या, स्वाति, धीरज गुप्ता, अटल अग्रवाल, अखिलेश सेठ, मनोज, उमेश नारायण पाठक, कोऑर्डिनेटर कन्हैया नीखर, प्रभारी प्राचार्य ब्रजेंद्र सिंह, मनोज श्रीवास्तव, प्रतियोगिता संयोजक डॉ. सरताज खान, सह संयोजक राघवेंद्र निरंजन, राधेश्याम, सौम्या सचान, पूनम, धर्मेंद्र, रामदेव, इशांत सिंह, संतोष, सचिन गुर्जर आदि उपस्थित रहे।

अंतिम मैच जिया टेलेंट समथर व वेस्टइंडीज क्रिकेट क्लब उरई के बीच खेला गया टूर्नामेंट में चार टीमों ने किया क्वालिफाई

■ जालौन-उरई

जेपीएल के दूसरे सीजन के क्वालिफायर मैचों की श्रृंखला में अंतिम मैच जिया टेलेंट समथर व वेस्टइंडीज क्रिकेट क्लब उरई के बीच खेला गया। फरवरी माह में आयोजित होने वाले टूर्नामेंट में चार टीमों ने क्वालिफाई किया है।

जालौन प्रीमियर लीग के दूसरे सीजन का आगाज फरवरी माह के पहले सप्ताह में किया जाएगा। इससे पूर्व क्वालिफायर मैच का आयोजन छत्रसाल मैदान पर किया गया। क्वालिफायर मैचों की श्रृंखला का अंतिम मैच जिया टलेंट समथर व वेस्टइंडीज क्रिकेट क्लब उरई के बीच खेला गया। टॉस जीतकर जिया टेलेंट समथर की टीम पहले खेलने के लिए उतरी। जिया टेलेंट की शुरूआत ही बेहद निराशाजनक रही। टीम ने आठ रन पर पहला विकेट गंवा दिया। पहले बल्लेबाजी करने उतरे उवैश ने 25 गेंदों में सर्वाधिक 15 रन की पारी खेली। टीम के चार बल्लेबाज तो बिना खाता खोले ही आउट हो गए। जबकि तीन बल्लेबाज एक एक रन बनाकर आउट हुए। पूरे मैच में उरई की टीम के गेंदबाज समथर की टीम पर हावी बने रहे। समथर की टीम 15.2 ओवर में 61 रन बनाकर आल आउट हो गई। जबाव में खेलने उतरी वेस्टइंडीज क्रिकेट क्लब उरई की टीम के गेंदबाज सत्यम कुमार ने 30 रन व धनंजय प्रताप सिंह ने 22 रन की पारी खेलकर बिना विकेट दिए टीम को जीत दिला दी। समथर की टीम ने 13 रन एक्स्ट्रा के रूप में दिए। अंत में उरई की टीम ने 8 विकेट से मैच लिया। जेपीएल के आयोजक गौरीश द्विवेदी ने बताया कि जेपीएल का दूसरा सीजन रोमांचक होने वाला है। जिसमें विजेता टीम को एक लाख रुपये नकद व उपविजेता को 50 हजार रुपये नकद व ट्रॉफी दी जाएगी। प्रत्येक मैच में टॉस विजेता को चांदी का सिक्का दिया जाएगा। इसके अलावा बेस्ट बल्लेबाज और गेंदबाज और मैन ऑफ छ मैच व मैन ऑफ द सीरीज को भी आकर्षक उपहार दिए जाएंगे। बताया कि क्वालिफायर मैच में अच्छा प्रदर्शन करने वाली प्रभाकर एकेडमी ऑफ स्पोर्ट्स उरई, जमुना देवी क्रिकेट क्लब उरई, प्रधान इलेवन जालौन व वेस्टइंडीज क्रिकेट क्लब उरई की टीम को चुना गया है। जो जेपीएल के दूसरे सीजन में प्रतिभाग करेंगी।

बिहार के मुजफ्फरपुर में डीआरआई का बड़ा एक्शन, डेढ़ करोड़ रुपए से अधिक की विदेशी सिगरेट को किया जब्त

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

मुजफ्फरपुर। बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर में डीआरआई की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर डेढ़ करोड़ रुपए से अधिक की विदेशी सिगरेट की एक बड़ी खेप को जब्त किया है। तस्करों ने विदेशी सिगरेट की खेप को बांस के नीचे छिपाकर रख था। बताया जा रहा है कि नॉर्थ ईस्ट म्यांमार निर्मित सिगरेट की खेप को गुवाहाटी के रास्ते दिल्ली ले जाया जा रहा था। डीआरआई ने मौके से उत्तर प्रदेश राज्य के मुरादाबाद जिले के दो लोगों को गिरफ्तार किया भी गया है। जिससे टीम लगातार पूछताछ करने में जुटी हुई है। दरअसल, ऊक्क को एक गुप्त सूचना मिली थी कि म्यांमार में बनी सिगरेट की खेप को राजधानी दिल्ली और इसके आसपास के इलाके के सप्लाई करने के लिए मुजफ्फरपुर के रस्ते ले जाया जा रहा है। जिसके बाद ऊक्क की टीम ने सघन जांच अभियान को तेज किया है। इसी दौरान गायघाट थाना क्षेत्र के ठल्ल 57 टोल प्लाजा के समीप में एक कंटेनर ल्फ55 7271 आता हुआ दिखा। टीम ने घेराबंदी करते हुए कंटेनर को रोककर खुलवाया। कंटेनर की तलासी के दौरान उसमें लोड बांस के बीच ईस्ट एशिया की म्यांमार में बनी हुई सिगरेट की बड़ी खेप को बरामद किया गया। टीम ने मौके से दो लोगो को पकड़ा है। जिसमें कंटेनर के चालक और सहायक है। ऊक्क की टीम मामले में जांच कर आगे की कार्रवाई में जुटी हुई है और विदेशी सिगरेट के बैकवर्ड लिंकेज और फॉरवर्ड लिंकेज की जानकारी जुटा रही है।

संक्षिप्त समाचार

हिमाचल प्रदेश में हिमपात से 134 सड़कें बंद

शिमला । हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों में बर्फबारी के बाद तीन राष्ट्रीय राजमार्गों समेत कुल 134 सड़कें बंद कर दी गई हैं। न्यूनतम तापमान में गिरावट के कारण लोग कड़ाके की ठंड से ठिठुरते रहे हैं। प्रदेश में लाहौल और स्पीति जिले का tabo सबसे ठंडा स्थान रहा, जहां रात का तापमान शून्य से 10.6 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया। अधिकारियों ने बताया कि अटारी और लेह, कुल्लू जिले में सैंज से औट, किन्नौर जिले में खाब संगम और लाहौल और स्पीति जिले में ग्रामफू सहित तीन राष्ट्रीय राजमार्गों सहित कुल 134 सड़कें यातायात के लिए बंद कर दी गईं। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र के अनुसार, शिमला जिले में सबसे अधिक 77 सड़कें बंद हैं।

कार खाई में गिरने से दो लोगों की मौत

चमोली । चमोली जिले में बुधवार को एक कार के खाई में गिर जाने से दो लोगों की मौत हो गई तथा एक अन्य घायल हो गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। जिला आपदा प्रबंधन केंद्र चमोली से मिली जानकारी के अनुसार, हादसा शाम पांच बजकर 15 मिनट पर नंदानगर-नंदप्रयाग मोटर मार्ग पर हुआ। कार नंदानगर से नंदप्रयाग आ रही थी। नंदानगर से कुछ ही दूरी पर संतोली (गणेश नगर) के पास कार दुर्घटनाग्रस्त होकर 50 मीटर गहरी खाई में गिर गई। हादसे की सूचना मिलते ही नंदानगर से बचाव दल मौके पर पहुंचा। हादसे के वक्त कार में तीन लोग सवार थे, जिनमें से सुनील भंडारी (30) और बिष्ट (8) की मौके पर ही मौत हो गई।

हादसे में शहीद हुए जवानों को दी श्रद्धांजलि

बेलगावी । मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने गुरुवार को मराठा लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंटल सेंटर के परिसर में जम्मू-कश्मीर के पुंछ में सड़क दुर्घटना में मारे गए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। एमएलआईआरसी सेंटर में शहीद जवानों का पार्थिव शरीर रखा गया है। सिद्धारमैया के साथ समाज कल्याण मंत्री डॉ. एचसी महादेवप्पा और महिला एवं बाल कल्याण मंत्री लक्ष्मी हेब्बालकर भी मौजूद थे। सीएम सिद्धारमैया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, ₹जम्मू-कश्मीर में एक दुर्घटना में शहीद हुए सैनिक सूबेदार दयानंद थिरुकन्ननवर और महेश मारिगोंडा के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर बेलगाम स्थित आर्मी वॉर मेमोरियल में अंतिम संस्कार किया गया। यह बहुत दुखद बात है कि हमारे राज्य के जवान सड़क दुर्घटना में शहीद हो गये हैं।

दुग्ध सहकारी समितियों और एनएफडीबी 5,500 मत्स्य सहकारी समितियों का गठन करेगी

अमित शाह ने 10 हजार नई पैक्स को किया लांच, दो लाख बनाने का लक्ष्य जल्द होगा पूरा

- अमित शाह ने प्रस्तुत किया दो लाख नए पैक्स बनाने का रोडमैप
- 15 हजार निष्क्रिय पैक्स को बंद कर नए पैक्स बनाने का रास्ता भी किया साफ

एजेंसी, नई दिल्ली

गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह ने नई बनाई गई 10 हजार प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पैक्स) को लांच किया। पिछले 86 दिनों के रिकार्ड समय में 10 हजार पैक्स बनाने का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि अगले पांच साल में दो लाख पैक्स बनाने का लक्ष्य समय से पहले हासिल कर लिया जाएगा। उनके अनुसार पैक्स के निर्माण से किसानों के उत्पादों को सहकारिता के माध्यम से विदेशी बाजारों तक पहुंचाना संभव हो जाएगा। विभिन्न कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए पहले ही तीन बहुराज्यीय सहकारिता संगठन का गठन किया जा चुका है। नवगठित कृषि समितियों को लांच करते हुए अमित शाह ने कहा कि दो लाख पैक्स बनाने का रोडमैप तैयार कर लिया है। इसे दो चरणों में लागू किया जाएगा। पहले चरण में नाबार्ड 32,750 पैक्स, नेशनल डेयरी डवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) 56,500 दुग्ध समितियों और नेशनल फिसरीज डवलपमेंट बोर्ड (एनएफडीबी) 6000 मत्सय समितियों का गठन करेंगे। वहीं दूसरे चरण में नाबार्ड 45 हजार पैक्स, एनडीडीबी 46 हजार दुग्ध सहकारी समितियों और एनएफडीबी 5,500 मत्स्य सहकारी समितियों का गठन करेगी। वहीं राज्य सरकारें 25 हजार नई पैक्स बनाएगी।

निष्क्रिय पैक्स को बंद करने के लिए नया एसओपी भी जारी

अमित शाह ने कहा कि नए नियम के तहत मत्स्य सहकारी समितियां और दुग्ध सहकारी समितियां भी प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों के रूप में काम कर सकेंगी। अमित शाह ने विभिन्न गांवों में निष्क्रिय पैक्स को बंद करने के लिए नया एसओपी भी जारी किया। अभी तक नियम के तहत एक बार बन गई पैक्स को निष्क्रिय होने के बावजूद बंद किया जा सकता है और जब तक किसी गांव में पहले से पैक्स गठित है, तबतक वहां नए पैक्स का गठन नहीं किया जा सकता है।

पूरे देश में ऐसे 15 हजार पैक्स हैं, जो निष्क्रिय है

पूरे देश में ऐसे 15 हजार पैक्स हैं, जो निष्क्रिय है। अब इन निष्क्रिय पैक्स को बंद कर वहां नई पैक्स बनाने का रास्ता साफ हो गया है। इसके साथ ही अमित साह ने नव गठित पैक्स को पंजीकरण पत्र, माइक्रो एटीएम और रूपे किसान क्रेडिट कार्ड भी वितरित किये।

राज्य की प्रमुख परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता मांगी

मुख्यमंत्री नायडू ने प्रधानमंत्री मोदी से की मुलाकात आंध्र प्रदेश की वित्तीय चुनौतियों पर की चर्चा

एजेंसी, नई दिल्ली

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। उन्होंने राज्य की प्रमुख परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता मांगी। इस दौरान उन्होंने आर्सेलर मित्तल स्टील प्लांट की योजनाओं पर भी चर्चा की। सीएम नायडू ने मुलाकात के दौरान आर्सेलर मित्तल स्टील प्लांट के बारे में, नायडू ने केंद्रीय सहायता की मांग की, खासकर कच्चे माल की आपूर्ति और परियोजना की त्वरित मंजूरी के लिए। तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के प्रमुख और आंध्र प्रदेश के सीएम नायडू ने पीएम मोदी के साथ 45 मिनट की इस बैठक के दौरान पोलावरम सिंचाई परियोजना और अमरावती राजधानी शहर के विकास के लिए पहले मिल चुकी वित्तीय सहायता के लिए प्रधानमंत्री मोदी का धन्यवाद किया। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, नायडू ने बताया कि इन दोनों परियोजनाओं पर अब फिर से काम शुरू हो गया है।

सीएम नायडू ने अमित शाह से की मुलाकात

पीएम मोदी से मुलाकात के बाद सीएम एन चंद्रबाबू नायडू ने गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। इस बैठक में उन्होंने राज्य की वित्तीय स्थिति पर चर्चा की और विभिन्न योजनाओं के लिए धन जारी करने की मांग की। बता दें कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात के दौरान आंध्र प्रदेश के सीएम एन चंद्रबाबू नायडू के साथ-साथ राज्य के वित्त मंत्री पय्यावुला केसव और केंद्रीय मंत्री किंजरापु राम मोहन नायडू, पेम्मासनी चंद्रशेखर, श्रीनिवास वर्मा और पार्टी के अन्य सांसद भी मौजूद थे।

राहुल गांधी ने मान ली अपनी गलती

11 साल बाद राहुल गांधी ने अपनी गलती मान ली है कि कांग्रेस की गलती के कारण ही केजरीवाल की राजनीतिक हैसियत बनी।

इंडिया से गेट

अजय सेतिया की कलम से

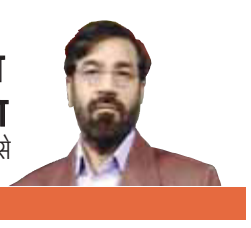

वैसे कांग्रेस की मौजूदा दशा के लिए राहुल गांधी जिम्मेदार नहीं हैं। देशभर में कांग्रेस की इस दशा के लिए मनमोहन सिंह जिम्मेदार हैं और दिल्ली में कांग्रेस की इस दशा के लिए शीला दीक्षित जिम्मेदार हैं। लेकिन, ये दोनों तो कठपुतलियां थी, असल में जिम्मेदार सोनिया गांधी हैं। मनमोहन सिंह अपने मंत्रियों का भ्रष्टाचार नहीं रोक सके और शीला दीक्षित कॉमनवेल्थ गेम्स का। क्योंकि, सुरेश कलमाड़ी के सिर पर सोनिया गांधी का हाथ था। कलमाड़ी को आज तक भ्रष्टाचार के आरोपों की सजा नहीं मिली। लेकिन, शीला दीक्षित 2013 में अरविंद केजरीवाल के हाथों हार गई। तब से कांग्रेस दिल्ली की राजनीति से बाहर है। लेकिन, शीला दीक्षित के बाद दिल्ली में कांग्रेस का बेड़ा गर्क करने में राहुल गांधी की अहम भूमिका है। 2010 में कॉमनवेल्थ घोटाला हुआ। 2013 में कांग्रेस भ्रष्टाचार के आरोप में चुनाव हार गई। वह 43 सीटों से सिर्फ 8 पर आ गई। अरविंद केजरीवाल ने शीला दीक्षित के खिलाफ भ्रष्टाचार के सबूत होने का दावा किया था। उनकी आम आदमी पार्टी ने पहली बार चुनाव लड़ा था। शीला दीक्षित के खिलाफ उनकी एग्रेसिव प्रचार शैली के कारण आम आदमी पार्टी को 28 सीटों पर जीत हासिल हुई। भारतीय जनता पार्टी, जो 15 साल से सत्ता से बाहर थी, उसे 31 सीटों पर जीत हासिल हुई, एक सीट उसका सहयोगी अकाली दल भी जीता। भाजपा को सरकार बनाने के लिए सिर्फ चार विधायकों की जरूरत थी, जिस कांग्रेस को झूठे आरोपों से बदनाम कर के अरविंद केजरीवाल ने उसका बेड़ा गर्क किया था, राहुल गांधी ने सिर्फ भाजपा को सत्ता से बाहर रखने के लिए अपने विधायकों के विरोध को दरकिनार करके उसी अरविंद केजरीवाल को समर्थन देकर मुख्यमंत्री बना दिया था। आज ठीक 11 साल बाद राहुल गांधी ने अपनी गलती मान ली है कि कांग्रेस की गलती के कारण ही अरविंद केजरीवाल की राजनीतिक हैसियत बनी। अगर कांग्रेस उस समय अरविंद केजरीवाल को समर्थन न देती तो ज्यादा से ज्यादा मध्यावधि चुनाव होते और वह समर्थन देने के बाद भी हुए ही। क्योंकि, केजरीवाल ने चार-पांच रेवड़ियां बांटकर 40 दिन बाद ही इस्तीफा दे दिया था। अरविन्द्र सिंह लवली उस समय प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष और विधायक भी थे। अजय माकन और लवली ने राहुल गांधी को बहुत समझाया था, लेकिन राहुल भाजपा विरोध में अंधे हो गए थे। जब केजरीवाल ने इस्तीफा दिया था, तब भी लवली जैसे कांग्रेसी विधायकों के पास मौक़ा था कि वे भाजपा को समर्थन देकर सरकार बनवा देते तो केजरीवाल नामक राहू दिल्ली की कुंडली में नहीं बैठ सकता था। 2015 में जब कांग्रेस का पूरी तरह ही बेड़ा गर्क हो गया तो लवली ने 2017 में भाजपा ज्वाइन कर ली थी। एक साल बाद ही वह फिर कांग्रेस में चले गए। लेकिन, 2024 में राहुल गांधी ने जब फिर से केजरीवाल के साथ गठबंधन कर लिया तो लवली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष पद को लात मार कर फिर भाजपा में आ गए। सब कुछ गंवाकर अब राहुल गांधी ने कबूल कर लिया कि उन्होंने गलती की थी। उसी केजरीवाल को अब राहुल गांधी ने अजय माकन से फर्जीवाल और राष्ट्र विरोधी तक कहलवाया है। राहुल गांधी में इतना नैतिक साहस भी नहीं बचा है कि वह खुद मीडिया के सामने आ कर अपनी गलती कबूल करते। उन्होंने उन्हीं अजय माकन को आगे किया, जो 2013 में भी विरोध कर रहे थे और 2024 में भी विरोध किया था। हालांकि, अजय माकन ने केजरीवाल के राष्ट्र विरोध के जो मुद्दे गिनाए हैं, वह केजरीवाल नहीं बल्कि कांग्रेस को राष्ट्रद्रोही साबित करते हैं। क्योंकि, वे तीनों ही मुद्दे संविधान और राष्ट्रीय एकता से जुड़े हैं। ये तीन मुद्दे हैं यूनिफॉर्म सिविल कोड, अनुच्छेद-370 और नागरिकता संशोधन कानून पर केजरीवाल का मोदी सरकार को समर्थन देना। लेकिन, बड़ी बात यह है कि कांग्रेस ने अपनी गलती मान ली है कि केजरीवाल उसी की देन है।

खुदाई पिछले पांच दिनों से जारी

संभल में मिला जागृत कूप, खुदाई जारी

एजेंसी, संभल

उत्तर प्रदेश के संभल में गुरुवार को जामा मस्जिद से करीब 200 मीटर की दूरी पर एक कूप (कुआं) मिला है। मौके पर अभी खुदाई का कार्य जारी है। यह कुआं हिंदू बाहुल्य इलाके में मिला है। इसे 'मृत्यु का कुआं' भी कहा जाता है। जिलाधिकारी डॉ राजेन्द्र पेंसिया ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां एक जागृत कूप मिला है। इससे पहले, चंदौसी के लक्ष्मणगंज में बावड़ी मिली थी, जिसकी खुदाई पिछले पांच दिनों से जारी है। इस बावड़ी को सदियों पुराना बताया जाता है। इससे पहले 25 दिसंबर को संभल में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की टीम ने चंदौसी स्थित पृथ्वीराज चौहान की बावड़ी का निरीक्षण किया था। एएसआई टीम ने फिरोजपुर किले का भी निरीक्षण किया था। टीम के साथ डीएम और एसपी भी मौजूद थे। डीएम-एसपी के साथ टीम के लोगों ने बावड़ी के अंदर जाकर, दीवारों को छूकर पूरा निरीक्षण किया था। टीम ने तोता-मैना की कब्र भी देखी थी। जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया ने बताया था कि संभल प्राचीन नगर रहा है। इस नगरी में इतिहास से लेकर वर्तमान तक अनेक अवशेष उपलब्ध हैं और दिखते भी हैं। उनको संरक्षित और सुरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। उसी क्रम में एएसआई की टीम आई थी। उन्होंने बताया था कि फिरोजपुर का किला पहले से एएसआई के संरक्षण में है। एएसआई ने उसे सुरक्षित करने के लिए चारदीवारी बनाई है। इसके बावजूद आसपास के लोगों का आना-जाना लगा रहता है। अब, एएसआई इस ओर ध्यान देगा।

1 जनवरी से बदल जाएगी एलपीजी सिलेंडर की कीमत

नई दिल्ली । साल 2024 जल्द ही खत्म होने वाला है। अब नए साल में कई नए नियमों में बदलाव होने वाला है। आपको बता दें कि 1 जनवरी 2025 से इन चीजों की कीमतों में या फिर इन नए नियमों में बदलाव होने वाला है। जिसका सीधा असर आपके खर्च पर हो सकता है। ऑटोमोबाइल सेक्टर की कई बड़ी कंपनियों की कीमतों में भी बदलाव होने वाला है। कई कार कंपनियां अपनी कीमतों में बढ़ोतरी का ऐलान कर सकती है। इसके साथ ही जीएसटी पोर्टल में भी बदलाव होने वाले हैं। इतना ही नहीं नए साल में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया भी अपने एफडी से जुड़ी नीतियों में बदलाव कर सकती है।

एक घुसपैठिए को बीएसएफ ने किया ढेर

भारत-पाकिस्तान की सीमा पर घुसपैठ का प्रयास नाकाम

श्रीगंगानगर । राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर एक घुसपैठिए को सीमा सुरक्षा बल यानी बीएसएफ ने मार गिराया है। बता दें कि यह घटना मंगलवार की रात है जब रात साढ़े 12 बजे रीब पाकिस्तानी युवक भारतीय सीमा में घुसने का प्रयास कर रहा था। मामला जिले के केसरीसिंहपुर इलाके के एक गांव के पास का है। घुसपैठिया भारतीय सीमा में पिलर की तरफ से आने का प्रयास कर रहा था। इसी दौरान बीएसएफ के जवानों ने उसे सचेत किया। बावजूद इसके जब वह नहीं माना तो बीएसएफ के जवानों ने उसे वहीं ढेर कर दिया। उसके पास कुछ पाकिस्तानी मुद्रा, सिगरेट का पैकेट और कुछ अन्य सामान मिला है। सेना और पुलिस पाकिस्तान घुसपैठिए के बारे में अन्य जानकारी जुटाने में लगी हुई है। बता दें कि इससे पहले जम्मू कश्मीर के कुलगाम में एनकाउंटर के बाद कई हैरान करने वाले खुलासे हुए थे।

अमेरिका ने की रूसी हमले की निंदा

यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद भड़का अमेरिका, बाइडेन ने रक्षा विभाग को दिया निर्देश

एजेंसी, वाशिंगटन

क्रिसमस की सुबह यूक्रेन पर हुए रूसी हमले पर अमेरिका भड़क गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने हमले की निंदा करते हुए कहा कि अमेरिका यूक्रेन के साथ मजबूती से खड़ा है। बाइडेन ने यह भी कहा कि अमेरिकी रक्षा विभाग यूक्रेन को दी जाने वाली हथियारों की सप्लाई को और बढ़ाएगा। बाइडेन ने कहा, 'क्रिसमस के शुरुआती कुछ घंटों में रूस ने यूक्रेन के शहरों और ऊर्जा संयंत्रों पर ड्रोन और मिसाइलों से हमला किया।' क्रिसमस की सुबह रूस ने यूक्रेन पर 70 से अधिक मिसाइलों और 100 से अधिक ड्रोन से हमला कर दिया था। इस हमले में यूक्रेन का एक थर्मल पावर प्लांट क्षतिग्रस्त हो गया था। इस हमले में यूक्रेन के कई शहरों में ब्लैकआउट हो गया था।

खुफिया दस्तावेजों को गेमिंग प्लेटफॉर्म से हटवाया

ऑनलाइन गेम के दौरान फाइटर जेट की खुफिया जानकारी लीक

इटली । गेमिंग में खूब प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती है, लेकिन कभी कभी ये प्रतिस्पर्धा ही परेशानी का कारण बन सकता है। ऐसा ही कुछ हुआ एक ऑनलाइन गेम के दौरान जब एक गेमर ने सेना की खुफिया जानकारी लीक कर दी। गुस्से में की गई, यह हरकत गेमर को भारी पड़ गई और अब इसकी जांच शुरू हो गई है। दरअसल लोकप्रिय ऑनलाइन गमे वॉर थंडर खेलते समय खिलाड़ी यूरोपीय लड़ाकू जेट यूरोफाइटर टाइफून की क्षमताओं पर चर्चा कर रहे थे। चर्चा यूरोफाइटर टाइफून के रडार सिस्टम की स्कैनिंग क्षमताओं पर बात हो रही थी। ये चर्चा बहस में बदल गई। इस बहस के दौरान ही एक खिलाड़ी इतना जोश और गुस्से में आ गया कि उसने अपनी बात को सही साबित करने के लिए लड़ाकू विमान से जुड़े खुफिया सैन्य दस्तावेज को ऑनलाइन पोस्ट कर दिया। सैन्य दस्तावेज पोस्ट करने से शायद उस खिलाड़ी की बात सही साबित हो गई, लेकिन वह अपने इस कदम से बड़ी परेशानी में फंस गया। जैसे ही इटली के रक्षा मंत्रालय को इस लीक की जानकारी मिली तो हड़कंप मच गया। तुरंत खुफिया दस्तावेजों को गेमिंग प्लेटफॉर्म से हटवाया गया। लीक की जांच शुरू कर दी गई है। हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि दस्तावेज लीक करने वाला गेमर कोई सैन्यकर्मी है या कोई अधिकारी है, जिसके पास खुफिया जानकारी उपलब्ध है। लीक के बाद खिलाड़ी के प्रोफाइल को तत्काल प्रभाव से गेम से निलंबित कर दिया गया।

नाव पर सवार यात्रियों में छह साल के बच्चे और महिलाएं भी शामिल थीं

गोवा में कैलंगुट बीच के पास पर्यटकों से भरी नाव पलटी, हादसे में एक की मौत

- अरब सागर में पर्यटकों की नाव पलटने से एक व्यक्ति की मौत हो गई और 20 अन्य को बचा लिया गया

एजेंसी, गोवा

उत्तरी गोवा में कैलंगुट बीच के पास अरब सागर में पर्यटकों से भरी नाव के पलट जाने से एक शख्स की मौत हो गई, जबकि इस हादसे में 20 अन्य यात्रियों को बचा लिया गया है। गोवा पुलिस के अनुसार, ये घटना दोपहर दोपहर करीब 1.30 बजे हुई, जिसमें एक 54 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया, 'जिस नाव में सभी यात्रा कर रहे थे, उसके पलट जाने से ये हादसा हुआ। फिलहाल सभी बचाए गए लोगों को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया।' उन्होंने बताया कि दो यात्रियों को छोड़कर बाकी सभी ने लाइफ जैकेट पहन रखी थी। नाव पर सवार यात्रियों में छह साल के बच्चे और महिलाएं भी शामिल थीं।

समुद्र तट से करीब 60 मीटर दूर पलट गई नाव

राज्य सरकार की तरफ से नियुक्त जीवन रक्षक एजेंसी दृष्टि मरीन के प्रवक्ता ने बताया कि नाव समुद्र तट से करीब 60 मीटर दूर पलट गई, जिसके कारण सभी यात्री समंदर में गिर गए। उन्होंने बताया कि नाव पर महाराष्ट्र के खेड़ का 13 सदस्यों वाला एक परिवार सवार था। उन्होंने बताया कि नाव को पलटते देख दृष्टि मरीन का एक कर्मचारी मदद के लिए दौड़ा और बैकअप के लिए बुलाया। इस रेस्क्यू ऑपरेशन में कुल 18 लाइफसेवर यात्रियों की मदद के लिए दौड़े और उन्हें सुरक्षित किनारे पर ले आए।' प्रवक्ता ने बताया कि घायल यात्रियों को प्राथमिक उपचार दिया गया, जबकि गंभीर पाए गए लोगों को एम्बुलेंस में चिकित्सा सुविधा के लिए ले जाया गया।

एक हफ्ते पहले गेटवे ऑफ इंडिया के पास हादसा

वहीं एक हफ्ते पहले मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया के पास इंजन परीक्षण के दौरान तेज गति से चल रही नौसेना की नाव ने एक यात्री नाव 'नील कमल' को टक्कर मार दी थी, जिसमें 15 लोगों की मौत हो गई। 100 से अधिक यात्रियों को लेकर यह नाव गेटवे ऑफ इंडिया से एलीफेंटा द्वीप की ओर जा रही थी।

संपादकीय

संसद और आत्मदाह का प्रयास

जरा कल्पना करें कि वह शख्स कितना परेशान होगा, जिसने दिल्ली में संसद भवन के पास अपने आपको खुद ही आग के हवाले कर दिया? क्या वह सिस्टम से नाराज होगा? क्या वह सिस्टम के चक्रव्यूह में इतना घिर गया होगा कि उसे जान देना ही आखिरी विकल्प लगा होगा? उसने सिस्टम से बहुत गुहार लगाई होगी, बहुत मिन्नतें की होंगी, लेकिन शायद उसकी किसी ने सुनी नहीं होगी। सिस्टम के चक्रव्यूह में फंसे लोग अक्सर मुख्यमंत्री आवास के सामने आत्मदाह कर चुके हैं या करने की कोशिश कर चुके हैं। संसद के करीब कोई शख्स अपने आपको आग के हवाले कर दे, यह सामान्य घटना नहीं है। संसद के करीब खुद को आग के हवाले करने वाला शख्स इतना झुलस गया है कि उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। पुलिस को मौके पर पेट्रोल मिला है। शख्स ने ऐसा क्यों किया फिलहाल पुख्ता कारण का पता नहीं चल पाया है। लेकिन जैसे ही उसने ऐसा किया, अफरातफरी मच गई। अफरातफरी तब ही मचती है, जब ऐसा हो जाता है। शुरुआती जांच में सामने आया है कि जितेंद्र नाम का यह शख्स यूपी के बागपत में अपने खिलाफ दर्ज किसी मामले के कारण परेशानी में था। अभी विस्तृत जानकारी सामने आना बाकी है। यह घटना बताती है कि कानून के जरिए किसी इंसान को इतना प्रताड़ित किया जा सकता है कि उसके पास खुद को खत्म करने के अलावा कोई विकल्प न बचता। कानून के जरिए दुश्मनी निकालने का चलन बढ़ गया है। सॉफ्टवेयर इंजीनियर अतुल सुभाष का मामला नया है। उसकी पत्नी और उसके ससुराल वालों ने उस पर इतने मुकदमे कर दिए थे कि आखिरकार उसे खुदकुशी करने पर मजबूर होना पड़ा था। अतुल सुभाष की खुदकुशी के बाद उसके ससुराल वालों की गिरफ्तारी हुई। राजनीतिक रूप से भी विरोधियों को खूब सताया जाता है। उन पर इतने मुकदमे लाद दिए जाते हैं कि वे टूट जाते हैं। कई लोग लंबे समय से जेल में बंद हैं, लेकिन उनके केस का ट्रायल भी शुरू नहीं हो सका है। लंबे वक्त के लिए जेल की सलाखों के पीछे पहुंच जाता है। जाहिर है, इस तरह की प्रताड़ना के पीछे एक साजिश होती है, जिसे सुनियोजित तरीके से अंजाम दिया जाता है। हालांकि अभी यह साफ नहीं है कि बागपत के जितेंद्र ने इतना बड़ा कदम क्यों उठाया है। लेकिन इतना तो कहा ही जा सकता है कि इतना बड़ा कदम कोई यूं ही नहीं उठाता है, इसे पीछे कोई बड़ी वजह रही होगी।

अभी यह साफ नहीं है कि बागपत के जितेंद्र ने इतना बड़ा कदम क्यों उठाया है। लेकिन इतना बड़ा कदम कोई यूं ही नहीं उठाता है, इसे पीछे कोई बड़ी वजह हो सकती है।

पाठकवाणी

समानांतर सिनेमा के पितामह बेनेगल

प्रख्यात फिल्मकार और भारतीय समानांतर सिनेमा के पितामह श्याम बेनेगल अब नहीं रहे। अंकुर, निशांत और मंथन जैसी फिल्मों के माध्यम से समाज के उपेक्षित वर्गों की आवाज को सशक्त रूप में प्रस्तुत करने वाले बेनेगल ने जातिवाद, गरीबी, और सामाजिक अन्याय पर फिल्मों के माध्यम से गहरी छाप छोड़ी। मम्मो, सरदारी बेगम और जुबैदा जैसी त्रयी फिल्मों में उन्होंने मुस्लिम महिलाओं के संघर्षों की संवेदनशीलता को बड़ी संजीदगी से उजागर किया। भारत एक खोज और संविधान जैसे ऐतिहासिक धारावाहिक भी शिक्षाप्रद आयाम रहे। भूमिका, मंडी और सूरज का सातवां घोड़ा जैसी कालजई कृतियां बेनेगल की खास पहचान बनीं। बंगलादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर्रहमान पर बनी उनकी अंतिम फिल्म मुजीब: द मेकिंग ऑफ ए नेशन थी, जो बहुत सराही गई। 2006-2012 तक राज्यसभा के सदस्य रहे बेनेगल को 1976 में पद्मश्री, 1991 में पद्मभूषण और दादा साहब फाल्के पुरस्कार सहित कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान मिले। गहन संवेदनशीलता और नई दृष्टि के साथ उन्होंने भारतीय सिनेमा को एक नया आयाम दिया। उन्होंने समानांतर सिनेमा को दुनिया भर में पहचान दिलाई। उनकी विरासत सिनेमा और समाज को प्रेरित करती रहेगी। सिनेमा जगत के इस विरले कलाकार को शत शत नमन।

-अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर मध्य प्रदेश

कुछ खास

कुवैत ने नरेंद्र मोदी को 'मुबारक अल कबीर' का खिताब दिया है। अगर ऐसा खिताब सोनिया या राहुल गांधी को मिला होता, तो बीजेपी ने हंगामा खड़ा कर दिया होता। पीएम मोदी अब 'मुबारक अल कबीर नरेंद्र मोदी' या 'मोहम्मद अल कबीर मोदी' कहलाने के लायक हैं।

-संजय राउत, शिवसेना (यूबीटी) सांसद

आज का ट्वीट

''अब तो जो पार्टियां इंडिया गठबंधन का हिस्सा भी नहीं हैं, जो हमेशा बीजेपी का साथ देती थीं वे भी चुनाव आयोग और ईवीएम पर सवाल उठा रही हैं, लेकिन चुनाव आयुक्त मूकदर्शक बना बैठा है।''

-विकास बंसल

सामयिक

भागवत के कथन के मायने

शाहीन सबा

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख डॉक्टर मोहन भागवत के 22 दिसंबर 2024 को महाराष्ट्र के अमरावती में आयोजित 'महानुभाव आश्रम' के शताब्दी समारोह में दिए बयान से हर कोई आश्चमर्यचकित है। मजहब पर दिए उनके बयान की जहां चौतरफा तारीफ की जा रही है, वहीं साधु-संत काफी आहत हैं। भागवत के मुताबिक धर्म का अधूरा ज्ञान इंसान को बुराई के रास्ते पर ले जाता है। संसार में धर्म के नाम पर जितने भी जुल्म और अत्याचार हुए, वे वास्तव में धर्म के ज्ञान के अभाव के कारण ही हुए। धर्म सदैव से अस्तित्व में है और संसार में सभी चीजें उसके अनुसार चलती हैं। धर्म का आचरण ही धर्म की सुरक्षा है। यदि धर्म को ठीक तरह से समझ लिया जाए, तो समाज में शांति, सद्भाव और खुशहाली आ सकती है। धर्म का उद्देश्य हिंसा या अत्याचार को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि मानवता की सेवा और लोगों का मार्गदर्शन करना है। कुछ लोगों का मानना है कि भागवत ने इस प्रकार का बयान देकर सत्तासीन पार्टी और हिंदुओं का नेता बनने की कोशिश करने वालों को आईना दिखाया है। वह पहले भी कह चुके हैं कि आरएसएस का उद्देश्य अयोध्या में बाबरी मस्जिद स्थल पर राम मंदिर निर्माण था। यह काम होने के बाद अब किसी प्राचीन मस्जिद या दरगाह के नीचे मंदिर के अवशेष तलाश करने की आवश्यकता नहीं है। यहां सभी धर्मों के अनुयायियों को शांतिपूर्वक रहने और अपने तरीके से त्योहार मनाने का बुनियादी हक है।

आरएसएस मोहन भागवत के बयानात यदि उनके दिल की आवाज है और वह वास्तव में ऐसा चाहते हैं, तो सवाल यह भी है कि क्या वह देश की तरक्की और जनता के कल्याण के लिए इन पर अमल करा पाएंगे? मौजूदा परिस्थितियों में तो उन्हें ही किनारे कर दिए जाने की प्रबल संभावना प्रतीत होती है।

इससे पूर्व 19 दिसंबर, 2024 को पुणे में आयोजित 'विश्व गुरू भारत' से संबंधित व्याख्यान श्रृंखला का उद्घाटन करते हुए मोहन भागवत ने देश में चल रही सांप्रदायिक राजनीति और मंदिर-मस्जिद विवाद पर चिंता व्यक्त करते हुए दो टूक कहा था कि कुछ लोग सोचते हैं कि राम मंदिर जैसे मुद्दे उठाकर वे रातोंरात हिंदुओं के नेता बन जाएंगे, लेकिन ऐसा न तो संभव है और न ही इसकी अनुमति दी जा सकती है। इस किस्मत के लोग समाज के सौहार्द को भारी क्षति पहुंचा रहे हैं...यह भारत है और इसे विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं के लोगों के सह-अस्तित्व का उदाहरण स्थापित करने की बहुत आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि लोगों को ऐतिहासिक गलतियां दोहराने की बजाय उनसे सीखना और भारत को समावेशिता का वैश्विक मॉडल बनाने के लिए काम करना चाहिए। चूंकि, इस तरह के संघर्षों से देश की एकता और आपसी भाईचारा छिन्नभिन्न होता है, इसलिए इन्हें पुनर्जीवित करने से बचने की आवश्यकता है। भागवत ने स्वीकार किया कि अयोध्या में राम मंदिर हिंदू आस्था की दृष्टि से महत्वपूर्ण था और वे इसे किसी भी तरह बनाना चाहते थे। अब हर रोज एक नया मामला सामने लाया जा रहा है, जो समाज और समरसता के लिए उचित नहीं है। नफरत के मद्देनजर इस तरह के मुद्दे अराजकता फैलाएंगे, जिन्हें देश की सलामती और विकास के लिए शुभ नहीं कहा जा सकता। नफरत की भावना से नए नए विवाद पैदा करने को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

यहां सवाल यह नहीं कि शांति और राष्ट्रीय एकता के मुद्दे पर भागवत का बयान सराहनीय हैं या नहीं। प्रश्न यह है कि क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की सत्ता-प्रतिष्ठा के दौर में भागवत की बात सुनी भी जाएगी या फिर नहीं। शांतिप्रिय लोग जानना चाहते हैं कि आरएसएस प्रमुख के मुंह से निकले शब्दों का अर्थ और भावार्थ क्या है? इन बयानों से वह किसे खुश या प्रभावित करना चाहते हैं? भागवत के बयान से असहमत तुलसी पीठ के पीठाधीश्वखर जगद्गुरू रामभद्राचार्य का कहना हैं कि भागवत हमारे अनुशासक नहीं, अपितु हम उनके अनुशासक हैं। इससे पूर्व ज्योर्तिमठ पीठ के शंकराचार्य स्वारमी अविमुक्तेश्वरनंद सरस्वती ने भी भागवत के बयान पर ऐतराज जताते हुए कहा कि वह राजनीति के मुताबिक अपनी सुविधा के चलते कुछ भी बोल देते हैं। जब वोटों की जरूरत थी, तो मंदिरों पर बोलते रहते थे, अब कह रहे कि मंदिरों की तलाश न की जाए।

एक समय था, जब आरएसएस प्रमुख के मुंह से निकले शब्दों को राजशाही का दर्जा हासिल था। सरकार गठन, पदों के चयन और मंत्रालयों के वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। राजनीति के उच्च पदस्थ व्यक्ति को भी भगवा कार्यालय से हरी झंडी का इंतजार करना पड़ता था। क्या आज भी वैसा ही है? क्या आज के आरएसएस में पुराने आरएसएस वाली धार और जुनून मौजूद है? शायद नहीं! यदि आरएसएस पहले जैसा सशक्त होता तो नक्कानरखाने में तूती की आवाज भले ही सुनाई न देती, लेकिन अंपायर की उठी उंगली से निकला मैच का नतीजा जरूर दिखाई देना चाहिए था।

भागवत का बयान भले ही कुछेक को हज्म नहीं हो रहा हो, लेकिन विपक्ष इसकी सराहना कर रहा है। समाजवादी पार्टी की सांसद इकरा हसन ने कहा कि वह पहली बार मोहन भागवत की किसी बात से सहमत हैं। हालांकि, इसकी शुरुआत वहीं (अयोध्या) से हुई। इन कारणों से विकास के मुद्दे कहीं पीछे छूट जाते हैं। भागवत की तरह संबंधित इकाइयों को भी सहमत होने की जरूरत है। समाज का तानाबाना बना रहे और हम आपसी भाईचारे के साथ अपने देश के विकास और जनता से जुड़े मुद्दों के लिए काम करें। धार्मिक नफरत फैलाने की कोशिश करने वालों पर ध्यान न दें। उन्हें अपने शिष्यों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करनी चाहिए तथा सत्तारूढ़ भाजपा को भी इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। निरर्थक समस्याएं पैदा कर माहौल खराब करने की बजाय देश के विकास और समृद्धि के विषय में सोचना ज्यादा जरूरी है। मस्जिद विवाद को लेकर भागवत की चिंता पर संसद में उच्च सदन के कांग्रेसी सदस्यम दिग्विजय सिंह ने कहा कि अगर हम हिंदू-मुस्लिम की बात करने वाले नेताओं पर नजर डालें, तो हमारे सामने सबसे बड़ा प्रमाण खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शक्ल में मौजूद हैं। वह प्रधानमंत्री को क्यों नहीं समझाते? भागवत केवल बयानबाजी करते हैं। वह मुसलमानों पर अत्याचार होते देखकर भी क्यों खामोश रहते हैं? इसमें शक नहीं कि उनका बयान सकारात्मक है, लेकिन उन्हें विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल जैसे संघ परिवार से जुड़े संगठनों को समझाना चाहिए। वे उन्हें रोकते क्यों नहीं?

डॉक्टर मोहन भागवत के बयानात यदि उनके दिल की आवाज है और वह वास्तव में ऐसा चाहते हैं, तो सवाल यह भी है कि क्या वह देश की तरक्की और जनता के कल्याण के लिए इन पर अमल करा पाएंगे? मौजूदा परिस्थितियों में तो उन्हें ही किनारे कर दिए जाने की प्रबल संभावना प्रतीत होती है।

विद्या, ज्ञान और कौशलता मानवीय आजीविका चलाने के मूल मंत्र- जीवन की प्रगति और आत्मनिर्भर भारत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान

सत विद्या यदि का चिन्ता, वराकोदर पूरणे-यदि सच्चा ज्ञान हो तो भूख मिटाने की चिंता नहीं करनी पड़ती।

पृथ्वी पर बुद्धि क्षमता में सर्वश्रेष्ठ मानव योनि-विद्या, ज्ञान और कौशलता से परिपूर्ण होना समय की मांग- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - पृथ्वी पर बुद्धि क्षमता में सर्वश्रेष्ठ मानव योनि को माना गया है, ऐसा हम पौराणिक कथाओं और आध्यात्मिक प्रवचनों, बड़े बुजुर्गों से वातार्लाप में हम सुनते आ रहे हैं। अगर हम प्रैक्टिकल वे में इसे महसूस करें तो अक्षरतःअक्षर यह पूर्ण सत्य है। साथियों आदिकाल से हम सुनते आ रहे हैं कि सर्वश्रेष्ठ प्रजाति मानव गर्भ से कुछ सीख कर नहीं आता प्राणी जन्म के बाद से ही सभ कुछ सीखता है और अलग-अलग रूप में अपनी आजीविका चलाता है।जीवन में गरीबी अमीरी सुख-दुख इत्यादि के चक्र में आता है। साथियों बात अगर हम मानव के दुनिया में जीवन यापन की करें तो यह 100 फीसदी सत्य बात है कि यदि मानव में उपरोक्त तीनों प्रमुख मंत्र विद्या, ज्ञान और कौशलता या इनमें से कोई भी एक मंत्र निहित है तो वह मानव अपनी आजीविका, जीवन को प्रगति कर सफलताओं को पाने में कभी पीछे नहीं रहेगा। साथियों बात अगर हम इन उपरोक्त तीन मंत्रों की करें तो दिमाग में सीधा नाम शैक्षणिकता का आता है और शिक्षा प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात मानसिक स्वास्थ्य सर्वोपरि से हम इनकार नहीं कर सकते और तीनों मंत्र प्राप्त करने के लिए हम प्री प्ले नर्सरी स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से विद्या, ज्ञान और कौशलता हासिल करते हैं। मेरा मानना है कि यह तीनों मंत्र हर मानव के लिए एक ब्रह्मास्त्र की शक्ति रखते हैं, क्योंकि इनके बल पर हम किसी भी परिस्थितियों में अपनी आजीविका और जीवन की प्रगति को के पथ पर चलने में जरूर सफल होंगे ऐसा हमें विश्वास है। साथियों बात अगर हम लक या किस्मत की करें तो भारत एक अति आध्यात्मिकता पालक देश है। जहां कुछ अपवादों को छोड़कर, नागरिकों का आध्यात्मिकता में अति विश्वास हैं और हम भाग्य को भी नकार नहीं सकते, यानें गॉड गिफ्टेड ज्ञान को भी नकार नहीं सकते। और कहते हैं ना कि, अगर किस्मत ही खराब हो तो क्या करें? परंतु मेरा निजी मानना है कि उपरोक्त तीनों मंत्रों के आगे किस्मत को भी पसीजना पड़ता है और मानव की हिम्मत जजबा और जांबाजी की जीत होती है! हालांकि बड़े बुजुर्गों का कहना है कि भगवान भूखा उठाता है, परंतु किसी को भूखा सुलाता नहीं, यह बात भी हम सच मानते हैं, परंतु यह भी सच्चाई है कि मानव को जीवन में एक सफल जिंदगी जीकर अपनी अगली पीढ़ियों

के लिए रास्ता बनाने के लिए विद्या, ज्ञान और कौशल रुपी तीनों मंत्रों को ग्रहण करना आवश्यक है। साथियों बात अगर हम इन तीनों मंत्रों की संलग्नता आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए करें तो यह बिल्कुल सटीक, सत्य मंत्र साबित होंगे। क्योंकि यही वह तीनों सशक्त और धारदार अस्त्र हैं जो मानव को प्रगति की ओर आसान रास्ता बनाने में मदद करते हैं। जिसमें उनके साथ उस व्यक्ति का गांव, शहर, जिला, राज्य और देश भी तीव्रता से उन्नति प्राप्त करता है। इन तीनों मंत्रों को हमारी नई शिक्षा प्रणाली 2020 में भी शामिल किया गया है। साथियों बात अगर हम भारतीय पीएम की आकांक्षाओं आत्मनिर्भर भारत, 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था 2047 का भारत विजन की करें तो अगर हम भारतीय नागरिकों ने उपरोक्त तीनों मंत्र ग्रहण कर लिए तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हम इससे कहीं अधिक बढ़-चढ़कर वैश्विक सफलताओं के झंडे भारत विजन 2047 के पूर्व ही गाड़ देंगे और हम वैश्विक महाशक्ति उभर कर सामने होंगे। साथियों बात अगर हम कुछ समय पूर्व माननीय पीएम के वर्चुअल संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार,उन्होंने भी कहा कि,हमारे यहाँ कहा जाता है- सत विद्या यदि का चिन्ता, वराकोदर पूरणे। भावार्थ जिसके पास विद्या है, ज्ञान और कौशल है उसे अपनी आजीविका के लिए, जीवन की प्रगति के लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती। सक्षम व्यक्ति अपनी प्रगति के लिए खुद ही रास्ते बनाता है। मुझे खुशी है कि सरदारधाम ट्रस्ट द्वारा शिक्षा और कौशल पर बहुत जोर दिया जा रहा है। 21वीं सदी में भारत के पास अवसरों की कमी नहीं है। हमें खुद को ग्लोबल लीडर रूप में देखना है, अपना सर्वश्रेष्ठ देना है और सर्वश्रेष्ठ करना भी है।पूरा भरोसा है कि देश की प्रगति में गुजरात का जो योगदान रहा है, उसे हम अब और सशक्त रूप में सामने लाएँगे। हमारे प्रयास न केवल हमारे समाज को नई ऊंचाई देंगे, बल्कि देश को भी विकास की बुलंदी पर लेकर जाएंगे। उन्होंने कहा हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का भी इस बात पर विशेष फोकस है कि हमारी शिक्षा, कौशल बढ़ाने वाली होनी चाहिए। भविष्य में मार्केट में कैसी स्किल की डिमांड होगी, फ्यूचर वर्ल्ड में लीड करने के लिए हमारे युवाओं को क्या कुछ चाहिए होगा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्टूडेंट्स को शुरूआत से ही इन ग्लोबल रियलिटीस के लिए तैयार करेगी आज स्किल इंडिया मिशन भी देश की बड़ी प्राथमिकता है। इस मिशन के तहत लाखों युवाओं को अलग अलग कौशल सीखने का अवसर मिला है, वो आत्मनिर्भर बन रहे हैं। नेशनल अप्रेंटिसशिप प्रोमोशन स्कीम के तहत युवाओं को पढ़ाई के साथ साथ कौशल विकास का अवसर भी मिल रहा है, और उनकी आमदनी भी हो रही है। अतः अगर हम उपरोक्तत पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि मानसिक स्वास्थ्य सर्वोपरि, विद्या, ज्ञान और कौशलता मानवीय आजीविका चलाने के वास्तव में मूल मंत्र हैं। क्योंकि जीवन की प्रगति और आत्मनिर्भर भारत बनाने में यह महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकते हैं और इनका महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि पृथ्वी पर बुद्धि क्षमता में सर्वश्रेष्ठ मानव योनि है और उसमें यह तीनों मंत्रों से परिपूर्ण मानव को अपनी आजीविका चलाने, जीवन को प्रगति में ढालने के लिए चिंता नहीं होगी साथ ही आत्मनिर्भर भारत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

-लेखक - कर विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यम सीए (एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र 9284141425

तीखी नजर

उनके बहाने अपने मन की बात

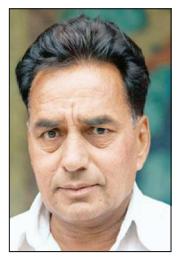

राजेंद्र बज

उनके लिए किसी भी प्रकार के आमंत्रण पर उसमें वह आकर्षण नहीं होता जो कि निमंत्रण पत्र में होता है। यही कारण है कि आमंत्रण की अपेक्षा निमंत्रण पत्र को ही वे अधिक गंभीरता से लिया करते थे। जब कभी आमंत्रण पत्र में भोजन का समय लिखा हुआ नहीं देखते एकदम चकरघिन्नी हो जाते थे। सोचते थे कि जाऊं या न जाऊं? ऐसे में ऐसा लगता था कि जैसे कोई दांव खेला जा रहा हो। कुछ लोग आमंत्रण और निमंत्रण को एक ही अर्थ में लिया करते हैं। इसके चलते धर्मसंकट में पड़ जाते है। सिक्का सीधा भी पड़ सकता है और उल्टा भी। लेकिन उनके लिए अक्सर दांव खेलना लाजिमी हो जाया करता था।

उनका तो एक ही फलसफा था कि दाल, रोटी, सब्जी, चावल तो अपने घर रोज ही खाते हैं, इसलिए कहीं निमंत्रित होने पर ड्राय फ्रूट की मिठाई के स्टॉल पर ही भरपूर उदरपूर्ति कर लिया करते थे। वैसे उन्हें डॉक्टर ने मीठा खाने से मना कर रखा था। लेकिन दिल है कि मानता ही नहीं। दरअसल घर-परिवार में वे ही इकलौते ऐसे शख्स थे जिनकी आमदनी पर परिवार की आजीविका निर्भर थी। इसलिए स्वाभाविक रूप से गृह मंत्रालय का भरपूर प्रयास रहा करता था कि वे कमाते खिलाते रहे। लेकिन वे खाने पीने के मामले को में कोई न कोई तिकड़म भिड़ा ही लेते थे।

जब कभी रात्रि में गहरी नींद से जाग जाते, सीधे रसोई घर में पहुंच कर डिब्बों को टटोलना उनकी बचपन की आदत रही थी। वैसे भी जैसे ही घड़ी में रात्रि के 12 बजे बाद का समय होने लगता, तो अचानक भूख लगने लगती थी। वैसे इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि रात 12:00 बजे के पहले जो भी कुछ खाया पिया होता है, वह कल की तारीख में लिस्टेड हुआ करता है। यानी कि तारीख बदलते ही भूख तीव्र गति से जागृत हो जाया करती है। और यह बात सैद्धांतिक रूप से भी सही होती है कि तारीख बदलते ही 'नया दिन नई रात'वाली बात हो जाया करती है।

जमाने भर के लोग जमाने भर का उल्टा-सीधा किया करते हैं, कमाने के मामले में केवल कमाना ही मुख्य ध्येय हुआ करता है। फिर चाहे इसके लिए सही रास्ता चुना जाए या गलत रास्ता! इन पंक्तियों के लिखे जाने के तत्काल बाद उन्हें एक निमंत्रण पत्र मिला। वैसे तो कार्यक्रम स्थल उनके अपने नगर से कोसों दूर था, लेकिन निमंत्रण का आकर्षण या कि साफ-साफ कहें तो दाल बाफले और लड्डू की महक का एहसास उन्हें खींचे जा रहा था। उन्होंने तत्काल मन बना लिया। सच कहूं तो जब उनको कहीं से कोई निमंत्रण आता है उनका तो दिल बल्लियों उछलने लगा करता है। आमतौर पर निमंत्रण पत्र की क्वालिटी इस बात का खुलकर इजहार कर दिया करती है कि खानपान की क्वालिटी कैसी होनी चाहिए। सयाने लोग लिफाफा देखकर यदि मजनून भांप जाते हैं, तो वे भी निमंत्रण पत्र देखते ही सटीक अंदाजा लगा लिया करते थे कि क्या-क्या माल परोसा जा सकता है?

सार संक्षेप

टी-20 विश्वकप टीम में शामिल होने पर सोनम के गृह जिले में जश्न

फिरोजाबाद : अंडर-19 टी-20 विश्वकप के लिए भारतीय टीम में जगह बनाने वाली महिला क्रिकेट खिलाड़ी सोनम यादव के गृहनगर फिरोजाबाद में जश्न का माहौल है। सोनम ने हाल ही में संपन्न एशिया कप में भारत की ओर से खेलते हुये उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ चार विकेट और बांग्लादेश के खिलाफ दो विकेट लिए थे। अंडर-19 टी-20 विश्वकप में भारतीय दल में शामिल किए जाने की सूचना मिलते ही युवा खिलाड़ी के परिजन, रिश्तेदार और प्रशंसकों में खुशी की लहर दौड़ गई है। टी-20 विश्वकप का आयोजन मलेशिया में 18 जनवरी से 18 फरवरी तक होगा। फिरोजाबाद में टूण्डला तहसील थाना क्षेत्र के राजा का ताल निवासी सोनम के पिता मुकेश यादव और भाई अमन यादव मजदूरी करते थे। सोनम की शुरु से ही क्रिकेट में काफी रुचि थी। उन्होने साल 2015 में क्रिकेट की कोचिंग ली और 2017 में कानपुर में ट्रायल में हिस्सा लिया, जिसके बाद उनका सलेक्शन उत्तर प्रदेश की महिला अंडर-16 टीम में हुआ। साल 2018 में सोनम को यूपी की अंडर-19 और फिर 2020 में सीनियर वूमेन्स टीम में खेलने का मौका मिला।

आर्या ने अंतरराष्ट्रीय स्पोर्ट्स स्टेडियम और फुटबॉल मैदान का किया लोकार्पण

नैनीताल : उत्तराखंड की खेल मंत्री रेखा आर्या ने राष्ट्रीय खेलों से पहले बुधवार को हल्द्वानी स्थित अन्तरराष्ट्रीय स्पोर्ट्स काम्लैक्स के साथ ही फुटबॉल मैदान का भी लोकार्पण किया। इस अवसर पर आर्या ने कहा कि 38वें राष्ट्रीय खेलों के आयोजन से न सिर्फ उत्तराखंड में खेलों को बढ़ावा मिलेगा बल्कि देशभर में प्रदेश की एक अलग पहचान बनेगी। उन्होंने नेशनल गेम्स को उत्तराखंड के लिए गेम चेंजर बताते हुए कहा कि यह आयोजन प्रदेश के खेल और पर्यटन को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय खेलों का शुभंकर, मशाल और एंथम भी उत्तराखंड की संस्कृति और धरोहर को परिलक्षित करते हैं। शुभंकर मौली में सदानीरा गंगा और ब्रह्म कमल जैसे प्रतीकों को शामिल कर इस आयोजन को राज्य के लिए और भी खास बनाया गया है। खेल मंत्री ने कहा कि 38वें राष्ट्रीय खेल 28 जनवरी से 14 फरवरी आयोजित होंगे। हल्द्वानी में कुल सात खेल होंगे जिसमें खो-खो, स्वीमिग, फेंसिग, फुटबाल, ताइक्वांडो, माडर्न पेंटाथलॉन तथा टाइथलॉन शामिल हैं। उन्होंने कहा खिलाड़ियों को फुटबॉल एवं स्पोटर्स कालेज की काफी आवश्यकता थी जिसका आज लोकार्पण कर खिलाड़ियों को समर्पित किया गया जिससे हमारे खिलाड़ियों को अच्छे संसाधन उपलब्ध होंगे और वे खेल में एक नई ऊंचाईयों की ओर कदम रखेंगे। उन्होंने आगे कहा कि प्रदेश के लिए यह एक ऐतिहासिक कदम है। प्रदेश के सभी जिलो में राष्ट्रीय खेल का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय खेल में हमें प्रथम पांच के साथ प्रथम आना होगा। इसी लक्ष्य से कार्य करना होगा।

दिव्यांग क्रिकेट चैंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा लेगी भारतीय टीम

नई दिल्ली : भारतीय दिव्यांग क्रिकेट परिषद (डीसीसीआई) ने कहा है कि 12 से 21 जनवरी तक श्रीलंका के कोलंबो में आयोजित होने वाली दिव्यांग क्रिकेट चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारतीय टीम हिस्सा लेगी। इस टूर्नामेंट में भारत, पाकिस्तान श्रीलंका और इंग्लैंड भाग ले रहे है। इस अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट से पहले भारतीय टीम जयपुर में प्रशिक्षण शिविर में भाग लेगी। शिविर के दौरान अंतिम टीम का चयन किया जाएगा। चारों टीमों के बीच दो-दो मैच खेले जाएंगे। टूर्नामेंट का पहला मुकाबला 12 जनवरी को भारत और पाकिस्तान की टीम के बीच खेला जायेगा। 13 जनवरी को भारतीय टीम इंग्लैंड से भिड़ेगी। 15 जनवरी को भारत का मुकाबला श्रीलंका से होगा। इसके बाद 16 जनवरी को फिर भारत और पाकिस्तान के बीच दूसरा मैच होगा। 18 जनवरी को भारत बनाम इंग्लैंड और 19 जनवरी को भारत बनाम श्रीलंका का मैच होगा। टूर्नामेंट का फाइनल 21 जनवरी को खेला जाएगा।

आज से पीकेएल सीजन 11 के प्लेऑफ होगी शुरुआत

पुणे : साल के आखिर में 'पीकेएल सीजन 11' का प्लेऑफ सप्ताह की शरुआत गुरुवार को पुणे के बालेवाड़ी स्थित शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में पहले एलिमिनेटर में यूपी योद्धा बनाम जयपुर पिंक पैंथर्स तथा दूसरे में पटना पाइरेट्स और यू मुंबा के बीच भिड़ंत होगी। शीर्ष सम्मान के लिए इस बार हरियाणा स्टीलर्स और यूपी योद्धाज भी डैम लगाएंगी। दोनों ने कभी खिताब नहीं जीता है, और उनके साथ तीन बार की चैंपियन पटना पाइरेट्स, सीजन 8 की विजेता दबंग दिल्ली के.सी., सीजन 1 और 9 की खिताब धारक जयपुर पिंक पैंथर्स और सीजन 2 की चैंपियन यू मुंबा हैं। मुंबा ने लीग चरण के आखिरी मैच के साथ प्लेऑफ के लिए क्वालीफिकेशन सुनिश्चित किया। लीग चरण के आखिरी मैच तक चली प्लेऑफ रेस इस बात का प्रमाण है कि यह सीजन कितना प्रतिस्पर्धी रहा है। इसने सीजन 11 के लिए एक रोमांचक अंतिम सप्ताह के लिए मंच तैयार किया है। कबड्डी के खेल को कई तरीकों से मनाने वाले सप्ताह से पहले छह कोच-मनप्रीत सिंह (हरियाणा स्टीलर्स), जोगिंदर नरवाल (दबंग दिल्ली के.सी.), जसवीर सिंह (यूपी योद्धाज), नरेंद्र रेधु (पटना पाइरेट्स), घोलमरेजा माजंदरानी (यू मुंबा) और संजीव बालियान (जयपुर पिंक पैंथर्स) ने पंगा राउंडटेबल में विस्तार से बात की और पीकेएल सीजन 11 के विभिन्न पहलुओं पर खुलकर चर्चा की। पीकेएल का पर्याय बन चुके 'फैन फर्स्ट' दृष्टिकोण पर कायम रहते हुए, आकर्षक पंगा राउंडटेबल में सुपर फैन्स भी मौजूद थे। सेमीफाइनल में जगह बनाने वाली हरियाणा स्टीलर्स की टीम अपने पहले पीकेएल खिताब के लिए प्रयास कर रही है। कोच मनप्रीत सिंह ने शो-स्टॉपर मोहम्मदरेजा शादलू की तारीफ करते हुए कहा कि हरियाणा स्टीलर्स टीम एक परिवार की तरह है। सभी खिलाड़ी मेरे छोटे भाई जैसे हैं और हम मिलकर काम करेंगे और सेमीफाइनल खेलने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

पिछली यादगार जीत को दोहराने उतरेगी टीम इंडिया

चौथा टेस्ट मैच आज से मेलबर्न में होगा शुरू, 1-1 से बराबरी पर है पांच मैचों की सीरीज

● मेलबर्न

आज से शुरु होने जा रहे चौथे टेस्ट मैच में भारतीय टीम में पिछली बार वर्ष 2020-21 बॉर्डर-गावस्कर सीरीज में इसी मैदान पर मिली जीत के दोहराने के इरादे से उतरेगी। भारतीय प्रबंधन को इस टेस्ट में जीत दर्ज करने के लिए चुनौतीपूर्ण निर्णय लेने होंगे।

सीरीज के पिछले तीन मुकाबलों में देखा गया है कि भारतीय टीम शीर्षक्रम बल्लेबाजी को लेकर असमंजस की स्थिति रही। अब तक देखा गया है कि फॉर्म में चल रहे बल्लेबाज ने इस सीरीज में बेहतरीन प्रदर्शन किया है, लेकिन खराब फॉर्म से जूझ रहे कप्तान रोहित शर्मा ने भारत के बल्लेबाजी क्रम को बिगाड़ दिया है। इस बॉक्सिंग डे टेस्ट में दो क्रिकेट दिग्गज रोहित शर्मा ,केएल राहुल के चरित्र, धैर्य और दृढ़ संकल्प की परीक्षा होगी। भारत अभी भी बुमराह के पर्याप्त समर्थन और खराब फॉर्म में चल रहे शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों से काफी अपेक्षा कर रहा है। बल्लेबाजी क्रम में खिलाड़ियों को बदलने के मामले में भारत के पास अधिक विकल्प नहीं हैं। इसलिए वे उम्मीद करेंगे कि कोई के एल राहुल का साथ दे और उनके साथ घंटों बल्लेबाजी कर सके। अगर भारतीय टीम यह टेस्ट हारती है तो डब्ल्यूटीसी के फाइनल में पहुंचने के लिए उन्हें अन्य मैचों के परिणाम पर निर्भर रहना होगा। साथ ही एक दशक के बाद ऐसा होगा, जब ऑस्ट्रेलिया भारत के खिलाफ कोई टेस्ट श्रृंखला जीतने के बेहद करीब होगा। वहीं अगर भारत को जीत मिलती है तो वे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को रिटेन कर लेंगे। भारत के पूर्व दिग्गज क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने केएल राहुल को छठे नंबर पर बल्लेबाजी करने का सुझाव दिया है। यह उन्हें पारी की शुरुआत में नई गेंद से बचाएगा और उन्हें दूसरी नई गेंद के खिलाफ मजबूती से खड़े हो सकेंगे। हालांकि इस रणनीति के अपने फायदे हैं, लेकिन इससे राहुल की लय को बिगाड़ने का भी जोखिम है, विशेषकर सलामी बल्लेबाज के रूप में उनकी सफलता को देखते हुए। रोहित का शीर्ष पर स्थान अभी सुरक्षित लगता है, भले ही वह रन नहीं बना रहे हों। अगर राहुल नीचे आते हैं तो मध्यक्रम की गतिशीलता में काफी बदलाव आएगा। देखना होगा कि शुभमन गिल एकादश में अपना स्थान बरकरार रख पाते है या ध्रुव जुरेल को मौका मिलेगा। जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज की अगुवाई में भारत के गेंदबाजी आक्रमण को अपनी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस मैदान की सतह पारंपरिक रूप से तेज गेंदबाजों के अनुकूल है, लेकिन 40 डिग्री सेल्सियस के चिलचिलाती गर्मी के पूर्वानुमान के कारण भारत को दूसरा स्पिनर शामिल करना होगा। दूसरी ओर ऑस्ट्रेलिया भी शीर्षक्रम की बल्लेबाजी को लेकर परेशान है। ऑस्ट्रेलिया ने जसप्रीत बुमराह का मुकाबला करने के लिए अपनी सलामी जोड़ी में बदलाव करना पड़ा है। इसके लिए ऑस्ट्रेलिया ने टीम में सैम कॉन्स्टास को जगह दी है। गेंदबाजी में पैट कमिंस और मिशेल स्टार्क की जोड़ी किसी भी बल्लेबाजी क्रम को ध्वस्त करने में सक्षम है। पूरी तरह से फिट और खेलने के लिए तैयार ट्रैविस हेड की वापसी से मध्य क्रम को मजबूती मिली है। स्टार्क और स्कॉट बोलैंड से इस पिच की उछाल पर बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में भारत का दिलचस्प इतिहास रहा है इस जगह हाल के वर्षों में कई यादगार भारतीय जीत देखी हैं, जिसमें प्रतिष्ठित 2020-21 बॉर्डर-गावस्कर सीरीज के दौरान उनकी जीत भी शामिल है। भारत को इस मुकाबले में जीत दर्ज करने के लिए बल्ले और गेंद दोनों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा।

संभावित भारतीय टीम

यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, शुभमन गिल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रोहित शर्मा (कप्तान), रवींद्र जडेजा, नीतीश कुमार रेड्डी/वॉशिंगटन सुंदर, आकाश दीप, जसप्रीत बुमराह, और मोहम्मद सिराज।

संभावित ऑस्ट्रेलियाई टीम

उस्मान ख्वाजा, सैम कॉन्स्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीवन स्मिथ, ट्रैविस हेड, मिचेल मार्श, ऐलेक्स कैरी (विकेटकीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिचेल स्टार्क, नाथन लायन और स्कॉट बोलैंड।

बुमराह ने टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में अश्विन के रिकॉर्ड की बराबरी की

● दुबई,

भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने टेस्ट गेंदबाजी में 904 रेटिंग अंक हासिल कर हाल में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले रविचंद्रन अश्विन के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है।

बुमराह ने बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में अब तक कुल 21 विकेट हासिल किए हैं और इसके चलते उन्होंने शीर्ष स्थान पर 48 रेटिंग अंकों के अंतर से अपनी बढ़त बढ़ाई है। कगिसो रबाडा 856 रेटिंग अक दूसरे और जॉश हेजलवुड 852 रेटिंग अंक के साथ तीसरे स्थान पर हैं। पैट कमिंस 822 रेटिंग अंक के साथ चौथे, रविचंद्रन अश्विन 789 रेटिंग के साथ पांचवें स्थान पर है। इसके अलावा मैट हैनरी (782) छठे, नाथन लायन (770) सातवें, प्रभात जयसूर्या (768) आठवें , नोमान अली (759) नौवें और रवींद्र जडेजा (755) रेटिंग अंक के साथ दसवें स्थान पर है। मोहम्मद सिराज एक स्थान के फायदे के साथ 24वें पायदान पर पहुंच गए हैं। जबकि पिछले टेस्ट की पहली पारी में 152 रनों की पारी खेलने वाले ट्रैविस हेड यशस्वी जायसवाल को पछाड़ते हुए बल्लेबाजी रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। शीर्ष स्थान पर जो रूट का कब्जा है। गाबा टेस्ट के एक अन्य शतकवीर स्टीव स्मिथ भी शीर्ष 10 में वापसी हुई हैं। स्मिथ ने पिछले मैच में 101 रनों की पारी खेली थी। जबकि 70 और 20 नाबाद रनों की पारी खेलने वाले ऐलेक्स कैरी 11 पायदान की छलांग के साथ 29वें स्थान पर पहुंच गए हैं। भारतीय सलामी बल्लेबाज केएल राहुल 10 पायदान की छलांग के साथ 40वें स्थान पर पहुंचे।

जसप्रीत बुमराह ने टेस्ट गेंदबाजी में 904 रेटिंग अंक हासिल किए

'पाक से टेस्ट खेलने का सपना अधूरा रह गया'

पूर्व ऑफ स्पिनर अश्विन बोले, एस रमेश को देखकर बचपन में बहुत इंस्पायर हुआ

चेन्नई, वार्ता : भारत के पूर्व क्रिकेटर रविचंद्रन अश्विन ने कहा कि उनका पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट खेलने का सपना अधूरा ही रह गया। वह बचपन से पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट खेलना चाहते थे, लेकिन कुछ कारणों से ऐसा हो नहीं हो सका।

अश्विन ने कहा कि सदागोपान रमेश को देखकर मैं क्रिकेट खेलने के लिए इंस्पायर हुआ था। वे तमिलनाडु के पहले बैटर थे, जिन्होंने इंटरनेशनल क्रिकेट में बेफिक्री से रन बनाए। पाकिस्तान के खिलाफ उनकी पारियां तो मुझे सपने में भी आती थीं। अश्विन ने 18 दिसंबर को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच हुए ब्रिस्बेन टेस्ट के बाद संन्यास ले लिया। उन्होंने कप्तान रोहित शर्मा के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपने संन्यास का ऐलान किया था। 38 साल की उम्र में उन्होंने भारत के लिए 537 टेस्ट विकेट लिए, लेकिन कभी पाकिस्तान के खिलाफ खेलने का मौका नहीं मिला। रवि अश्विन के नाम टेस्ट में सबसे ज्यादा 11 बार प्लेयर ऑफ द सीरीज अवॉर्ड जीतने का रिकॉर्ड है। अश्विन ने कहा कि मेरे जीवन का सबसे बड़ा अधूरा सपना यही रह गया कि मैं कभी पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट मैच नहीं खेल सका। हालांकि, ये चलता है। अब जिसे बदलना मेरे हाथ में ही नहीं, उसके बारे में सोचकर मैं ज्यादा कुछ कर भी नहीं सकता। अश्विन ने बताया कि उन्हें तमिलनाडु के पूर्व बैटर एस रमेश ने पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट खेलने के लिए इंस्पायर किया था।

क्रिसमस पर सांता क्लॉज के लुक में दिखें धौनी

नई दिल्ली, वार्ता: टीम इंडिया के पूर्व कप्तान एमएस धौनी क्रिसमस पर सांता क्लॉज वाले लुक में नजर आए हैं। उनकी पत्नी साक्षी ने धोनी की तस्वीर इंस्टाग्राम पर पोस्ट की है। बुधवार को माही ने अपने परिवार के साथ क्रिसमस मनाया। साक्षी द्वारा शेयर की गई तस्वीर में वह अपनी बेटी जीवा धौनी को गले लगाते और जीवा उन्हें किस करती दिख रही है। फोटो में धौनी सांता क्लॉज वाले लुक में बड़ी-बड़ी दाढ़ी और लाल टोपी के साथ दिख रहे हैं। धौनी ने खूब की मस्ती एम एस धौनी के साथ बेटी जीवा ने खूब मस्ती की। साक्षी भी ग्रीन ड्रेस में माही के साथ नजर आईं। धौनी की सांता कैप पर माही लिखा हुआ है और काफी सारे गिफ्ट्स के पास धोनी सांता बने बैठे हुए हैं। धौनी आईपीएल 2025 में नजर आएंगे। उन्हें चेन्नई सुपर किंग्स ने आईपीएल-2025 ऑक्शन से पहले अनकैप्ड प्लेयर के तौर पर रिटेन किया था।

क्रिसमस पर सैर सपाटे पर निकले कोहली-अनुष्का

मेलबर्न, वार्ता : भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली 25 दिसंबर की सुबह मेलबर्न के एक लोकल रेस्टोरेंट में स्पॉट हुए। इसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। उन्होंने क्रिसमस के मौके पर पत्नी अनुष्का शर्मा के साथ मेलबर्न के 'कैफे कोर्ट' रेस्टोरेंट में नाश्ता किया। नाश्ता करने के बाद विराट ने रेस्टोरेंट के स्टाफ के साथ फोटो क्लिक कराई। कैफे ने सोशल मीडिया पर स्टाफ के साथ विराट कोहली की फोटो को पोस्ट किया। उन्होंने यह भी बताया कि विराट कैफे के किचन में गए थे और सभी को धन्यवाद किया और फोटोज भी खिंचवाई। आज सुबह, जब हम अभी भी इस बात पर विचार कर रहे थे कि पब्लिक हॉलिडे के दिन अपने कैफे को खुला रखना है या नहीं, हमें इस बात का अंदाजा नहीं था कि हमें अपने छोटे से कैफे में किंग विराट कोहली, अनुष्का शर्मा और उनके परिवार की सेवा करने का अनुभव मिलने वाला है। विराट सर इतने काइंड थे कि वे हमारे किचन में आए, शेफ्स को धन्यवाद दिया और हमें अपने साथ फोटोज खिंचवाने का मौका दिया। कोहली ने इस सीरीज में 126 रन बनाए है।

दुनिया के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज है हेड : चैपल

दिग्गज क्रिकेटर ग्रेग चैपल कहा- हेड ने बुमराह की लय बिगाड़ी, उनकी क्षमता स्पेशल है

● मेलबर्न,

दिग्गज क्रिकेटर ग्रेग चैपल ने ट्रैविस हेड को वर्तमान समय में दुनिया का सर्वश्रेष्ठ बैटर बताया है। उन्होंने कहा कि बीजीटी में जसप्रीत बुमराह के खिलाफ हेड का प्रदर्शन उनके फियरलेस अप्रोच और बैटिंग के ऑस्ट्रेलियन फॉर्मूले का उदाहरण है। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान चैपल का मानना है कि टेस्ट बैटर के रूप में हेड की सफलता के पीछे उनकी सहजता और आक्रामकता है। हेड ने भारत के खिलाफ शुरूआती 3 टेस्ट मैचों में दो शतक और एक अर्धशतक के सहारे 409 रन बनाए हैं। वे सीरीज के टॉप स्कोरर हैं।

मौजूदा समय में बुमराह के खिलाफ हेड का प्रदर्शन उनके फियरलेस अप्रोच का उदाहरण है। अन्य बैटर जहां बुमराह के अनट्रेडिशनल एक्शन, पेस और लगातार सटीक गेंदबाजी के सामने संघर्ष कर रहे हैं, वहीं हेड ने उन्हें किसी भी अन्य गेंदबाज की तरह लिया। हेड ने मजबूत इरादों के साथ बुमराह का सामना किया और उनके खिलाफ रन बनाने का प्रयास करके न केवल उनके खतरे को कम किया, बल्कि उनकी लय भी बिगाड़ी। शॉर्ट पिच गेंदों को खेलने और फुल लेंथ गेंदों को ड्राइव करने की उनकी क्षमता विशेष है, जिससे उनकी प्रगति का पता चलता है। चैपल ने लिखा कि एक कच्ची, अप्रत्याशित प्रतिभा से लेकर वर्ल्ड क्रिकेट के सबसे प्रभावशाली पुरुष बल्लेबाजों में से एक तक ट्रैविस हेड अपने चरम पर पहुंच गए हैं। उनका सफर केवल चुनौतियों पर काबू पाने तक सीमित नहीं है, बल्कि अपनी शैली में सादगी बनाए रखने से भी जुड़ी है जो उनकी पहचान बन गई है। चैपल का मानना है कि 'हेड दुनिया के सबसे खतरनाक बल्लेबाजों में से एक हैं, जो सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों के खिलाफ अपनी रणनीति तय कर सकते हैं। हेड की बल्लेबाजी का सार उनके सुव्यवस्थित दिमाग में निहित है। उन्होंने एक ऐसा रास्ता चुना है, जो सावधानी से अधिक इरादे को प्राथमिकता देता है। एक ऐसी मानसिकता जो उन्हें रन बनाने के उद्देश्य से हर गेंद का सामना करने के लिए प्रेरित करती है। चैपल ने लिखा कि अपने वर्तमान फॉर्म में ट्रैविस बल्लेबाजी के ऑस्ट्रेलियाई तरीके का उदाहरण पेश करता है। अभी जिस तरह से उनके प्रदर्शन की चर्चा चल रही है। उससे साफ हो जाता है कि ट्रैविस हेड दुनिया का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज है। 26 दिसंबर से बीजीटी का चौथा मुकाबला भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच चल रही बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी का चौथा मुकाबला गुरुवार, 26 दिसंबर से मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर खेला जाएगा। फिलहाल, 5 टेस्ट की सीरीज 1-1 की बराबरी पर है। ब्रिस्बेन के गाबा मैदान पर खेला गया पिछला मुकाबला ड्रॉ है।

धामी राष्ट्रीय खेलों से जुड़ी मशाल यात्रा को हरी झंडी दिखाकर करेंगे रवाना

नैनीताल, वार्ता: उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी आगामी 38वें राष्ट्रीय खेलों से जुड़ी मशाल यात्रा को गुरुवार को हल्द्वानी से हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। नैनीताल की जिलाधिकारी वंदना ने बुधवार को बताया कि राष्ट्रीय खेलों से राज्य की जनता को जोड़ने के लिए राष्ट्रीय खेलों से जुड़ी मशाल यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री आज हल्द्वानी में इस यात्रा का शुभारंभ करेंगे। यात्रा सभी 13 जिलों से होकर गुजरेगी। उन्होंने कहा कि देवभूमि उत्तराखंड में पहली बार राष्ट्रीय खेलों का आयोजन किया जा रहा है। यह राष्ट्रीय खेलों का महाकुभ अगले महीने 25 जनवरी से 14 फरवरी तक चलेगा। इस अवसर पर शहीद पार्क से मिनी स्टेडियम तक एक रोड शो का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें पहाड़ की संस्कृति की झलक दिखेगी। राष्ट्रीय खेलों का शुभंकर 'मौली' भी आकर्षण का केंद्र रहेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद ज़की हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।
संपादक : सैयद ज़की हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेल:- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।
नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मंजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खान/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)